अवधी

कक्षा १०

अवधी

कक्षा १०

नेपाल सरकार
शिक्षा, विज्ञान तथा प्रविधि मन्त्रालय
पाठ्यक्रम विकास केन्द्र
सानोठिमी, भक्तपुर

प्रकाशक : नेपाल सरकार
शिक्षा, विज्ञान तथा प्रविधि मन्त्रालय
पाठ्यक्रम विकास केन्द्र
सानोठिमी, भक्तपुर

© पाठ्यक्रम विकास केन्द्र

वि.सं. २०७८

पाठ्यक्रम विकास केन्द्रको लिखित स्वीकृति विना व्यापारिक प्रयोजनका लागि यसको पुरै वा आंशिक भाग हुबहु प्रकाशन गर्न, परिवर्तन गरेर प्रकाशन गर्न, कुनै विद्युतीय प्रसारण वा अन्य प्रविधिबाट अभिलेखबद्ध गर्न र प्रतिलिपि निकाल्न पाइने छैन ।

हाम्रो भनाइ

विद्यालय तहको शिक्षालाई उद्देश्यमूलक, व्यावहारिक, समसामयिक र रोजगारमूलक बनाउन विभिन्न समयमा पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक विकास तथा परिमार्जन गर्ने कार्यलाई निरन्तरता दिइँदै आएको छ । विद्यार्थीमा राष्ट्र राष्ट्रियताप्रति एकताको भावना पैदा गराई नैतिकता, अनुशासन र स्वावलम्बन जस्ता सामाजिक एवम् चारित्रिक गुणका साथ आधारभूत भाषिक तथा गणितीय सिपको विकास गरी विज्ञान, सूचना प्रविधि, वातावरण र स्वास्थ्यसम्बन्धी आधारभूत ज्ञान र जीवनपयोगी सिपका मा(ध्यमले कलासौन्दर्यप्रति अभिरुचि जगाउन, सिर्जनशील सिपको विकास गराउनु र विभिन्न जातजाति, लिङ्ग, धर्म, भाषा, संस्कृतिप्रति समभाव जगाई सामाजिक मूल्य र मान्यताप्रतिको सहयोगात्मक र जिम्मेवारीपूर्ण आचरण विकास गराउनु आजको आवश्यकता बनेको छ । यही आवश्यकता पूर्तिका लागि विद्यालय शिक्षाका लागि राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूप, २०७६ को सैद्धान्तिक मार्गदर्शनअनुसार अवधी विषयको यो नमुना पाठ्यपुस्तक विकास गरिएको हो ।

यस पाठ्यपुस्तकको लेखन तथा सम्पादन श्री विजय वर्मा र श्री हंसावती कुर्मीबाट भएको हो । यसलाई यस रूपमा ल्याउने कार्यमा यस केन्द्रका महानिर्देशक श्री अणप्रसाद न्यौपाने, प्रा.डा. दुवीनन्द ढकाल, प्रा.डा. ओमकारेश्वर श्रेष्ठ, श्री सिद्धीबहादुर महर्जन, श्री अन्जु लामा, श्री टुकराज अधिकारी र श्री इन्दु खनालको विशेष योगदान रहेको छ । यस पुस्तकको लेआउट डिजाइन श्री सन्तोषकुमार दाहालबाट भएको हो । उहाँहरूलगायत यसको विकासमा संलग्न सम्पूर्णप्रति केन्द्र हार्दिक कृतज्ञता प्रकट गर्दछ ।

पाठ्यपुस्तकलाई शिक्षण सिकाइको महत्त्वपूर्ण साधनका रूपमा लिइन्छ । अनुभवी शिक्षक र जिज्ञासु विद्यार्थीले पाठ्यक्रमद्वारा लक्षित सिकाइ उपलब्धिलाई विविध स्रोत र साधनको प्रयोग गरी अध्ययन अध्यापन गर्न सक्छन् । यस पाठ्यपुस्तकलाई सकेसम्म क्रियाकलापमुखी र रुचिकर बनाउने प्रयत्न गरिएको छ तथापि यसमा अझै भाषा प्रयोग, भाषाशैली, विषयवस्तु तथा प्रस्तुति र चित्राङ्कनका दृष्टिले कमीकमजोरी रहेको हुन सक्छन् । तिनको सुधारका लागि शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक, बुद्धिजीवी एवम् सम्पूर्ण पाठकहरूको समेत महत्त्वपूर्ण भूमिका रहने हुँदा सम्बद्ध सबैको रचनात्मक सुझावका लागि पाठ्यक्रम विकास केन्द्र हार्दिक अनुरोध गर्दछ ।

वि.स. २०७८

पाठ्यक्रम विकास केन्द्र

विषयसूची

पाठ	शीर्षक	पृष्ठ सङ्ख्या
१.	सिङ्गीघाट पर	१
२.	अंगुलिमाल औ गौतम बुद्ध	९
३.	रामनिवास पाण्डेय	२१
४.	स्थानीय ज्ञान, सीप औ प्रविधि	३२
५.	प्रवासी जिन्दगी माटी कै मोह	४२
६.	कार्यालयीय चिठ्ठी	४९
७.	पुरानि चुनरी	५७
८.	फैसला	६७
९.	सुफी सन्त मदार बाबा	७८
१०.	औतार देई चौधराइन	८६
११.	भोले बाबा कै गाँव	९७
१२.	सङ्कल्प	१०८
१३.	बरखा केर महिमा	११७
१४.	पर्यटकीय क्षेत्र बर्दिया	१२४
१५.	सङ्हरिया का चिठ्ठी	१३४

पाठ
१

सिङ्गीघाट पर

- विष्णुराज आत्रेय

कस्यप रिखि कै पुत्र अनेका ।
वन मा भए विभान्डक एका ॥
बसत रहे रिखि कउसिकी तीरे ।
कब्बो आवँय गण्डकी नियरे ॥१॥

रुरुछेत्र के जात्रा खरतिन ।
रिखि विभान्डक निकरे एक दिन
चलत चलत कपिलाश्रम आये ।
थका रहे मड़इम सन्थाये ॥२॥

पहुँचि नहाइन गङ्गा-नीरे ।
सन्ध्या अरघ किहिन तब तीरे ॥
आश्रम लउटि कन्द-फल खाये
सन्तन कै सङ्गत वहिँ पाये ॥३॥

आगे चलयँ ऊ पर्वत ओरियाँ ।
दृस्य मनोहर खींचय अँखिया ॥
नन्दन सब उपवन औ ताला ।
खेलयँ जल मा बाल मराला ॥४॥

वन- मजोर नाचय जब तीरे ।

मन-मजोर फुदकय तन-नीडे ॥

बइठे घरी पेड़ के छहवाँ ।

अति आनन्द भवा जिय-हिय मा ॥५॥

जगही सान्त एकान्त ऊ जानिन ।

करयक तपस्या मन मा ठानिन ॥

रहबय किहिन रिखि गुन-खानी ।

महातपस्वी वन अति ग्यानी ॥६॥

आँख मुनिकै आसन बाँधिन ।

दश इन्द्रिन काँ वश करि राखिन ॥

पहिले परनायक किहिन जब ।

षट्चक्रन काँ शुद्ध किहिन तब ॥७॥

भँवहि के बीच जमाइन ध्याना ।

बिन्दु सूर्य सब तेज निधाना ॥

महीना-दिन कै बतियै नाहीं ।

बरिस-बरिस बइठे तप माहीं ॥८॥

तप आपन परभाव देखाइस ।

इरिखा द्वेस घमण्ड भगाइस ॥

सान्त भए बन उपबन वहिँ कै ।

सकल कलुस मिटि गै प्रानिन कै ॥९॥

गाय सिङ्ह सथवयँ जल पीयैं ।

निर्भय जीव-जन्तु बन घूमैं ॥

बघिनी मृग काँ दूध पियावै ।

बछियन काँ सिङ्हनी सुहुरावै ॥१०॥

दुख-बेराम सब कै वहिँ मिटि गा ।

तप-बल से सुभ चहुँ दिसि होइ गा ॥

तपत तपत बहुतै दिन बीता ।

एक बेर भै अइसन खीसा ॥११॥

शब्दार्थ

रिखि : ऋषि, तपस्वी

अनेका : अनेक, तमाम

बसत रहे : रहत रहे

कउसिकी : कोशी

नियरे : नजदिक, नकचेरे

मडइम : छोट कुटिया, अस्थायी घर

सन्थाये : विश्राम, आराम

गङ्गा-नीरे : नदी कै पानी

तीरे : तट किनारे

नीड़े : चिरई कै झोंझ, खोता, घोसला

जिय-हिय : शरीर औ मन, तन-मन

उपवन : जंगल, बगैचा

फुदकय : खुशी होइकै कुदैं, खेलैं

बाल मराला : चुजा, हंस कै छोटछोट बच्चा

गुन-खानी : हुनर कै भण्डार, कौशल कै खदान

निधाना : पूर्ण तृप्ति, सन्तुष्टी, आधार,आश्रय

सकल : पूरा, सम्पूर्ण

निर्भय : डेर रहित

चहुँ दिसि : चारो दिशा

अभ्यास

सुनाई

१. पाठ कै पहिला श्लोक सुना जाय औ वहि श्लोक मे केकर बाति कइ गा है, कहा जाय ।

२. पाठ कै दुसरा औ तीसरा श्लोक सुना जाय औ वहिमे कवने बाति कै चर्चा है, कहा जाय ।

३. पाठ के अन्तिम दुइ श्लोक कै इमला लिखा जाय ।

बोलाई

४. नीचे दिहा शब्द कै शुद्ध से उच्चारण करा जाय ।

रुरुछेत्र, कपिलाश्रम, सन्थाये, नन्दन, षट्चक्रन, घमण्ड, सिङ्हनी

५. दिहा शब्द कै अर्थ कहा जाय ।

ध्यान, ग्यानी, निर्भय, सिङ्ह, उपवन, मडइम, अनेका

६. विभान्डक ऋषि के बारे मे पाठ के आधार पर कहा जाय ।

७. आपो कवनो ऋषि के बारे मे सुना गा है तौ उनके बारे मे छोटकरी मे सुनावा जाय ।

पढाई

८. पाठ कै श्लोक सब वसरीपारी से पढ़ा जाय ।

९. पाठ कै चउथा औ पचवाँ श्लोक पढ़िकै नीचे दिहा प्रश्न कै मौखिक उत्तर दिहा जाय ।

(क) पर्वत के ओर के जात रहै ?

(ख) वनकै नजर केहपर टिकि गै रहा ?

(ग) वहिँकै उपवन केतके समान रहा ?

(घ) बन मजोर के नाच देखि कै कवन मजोर फुदकै लाग ?

(ङ) कहाँ बइठै के बाद आनन्द भवा ?

१०. पाठ कै ग्यारहवाँ श्लोक पढिकै मुख्य-मुख्य चार ठु बुँदा लिखा जाय ।

११. नीचे दिहा श्लोक पढ़िकै पुछि गवा प्रश्न कै जबाब लिखा जाय ।

एक दिना नारद मुनी, ब्रह्मलोक मा जाय ।
ब्रम्हा के पकरे चरन, बोले पितु मुसकाय ॥
का पूछन आयहु मुनी, पूँछहु बिनु सकुचाय ।
करुण कृपा लखि ब्रम्ह की, बोले शीश नवाय ॥ १॥

हे ब्रम्हा ! संसार मा, शुभ औ अशुभ जो होय ।
सब कुछ जाना सुना है, फिरिउ कृपा प्रभु होय ॥
अइहै जब कालिकाल महि, प्राणी छोडि आचार ।
नीचन कै संगति पकरि, करिहैं पाप विचार ॥२॥
(सचिदानन्द चौवे : अवधी रामायण)

प्रश्न

(क) एक दिन नारद मुनी कहाँ गये ?
(ख) के बिना संकुचाय कै पुछैक कहिन ?
(ग) केतकै कृपा फिर से होय कहिन ?
(घ) प्राणी काव पकरि कै काव करि हैं ?
(ङ) यी कविता कवने छन्द मे लिखि गा है ?

लिखाई

१२. दिहा शब्द प्रयोग कइकै वाक्य बनावा जाय ।

तीरे, सन्ध्या, मनोहर, उपवन, मन-मजोर

१३. पाठ देखिकै अनुलेखन करा जाय ।

१४. नीचे दिहा प्रश्न कै संक्षिप्त उत्तर दिहा जाय ।

(क) विभान्डक ऋषि कहाँ रहत रहें औ कब्बोकाल कहाँ आवत रहें ?
(ख) रुरुक्षेत्र के जात्रा पर जात के केकरे आश्रम पर पहुचे ?
(ग) ध्यान जमावै से पहिले काव करै के जरुरी होत है ?

(घ) ऋषि के तप के प्रभाव से बन मे कइसन असर होय लाग ?

(ङ) कविता कै भावार्थ लिखा जाय ।

१५. सप्रसंग व्याख्या करा जाय ।

(क) बन-मजोर नाचय जब तीरे ।
मन-मजोर फुदकय तन-नीडे ॥
बइठे घरी पेड़ कय छहवाँ
अति आनन्द भवा जिय-हिय मा ॥

(ख) तप आपन परभाव देखाइस ।
इरिखा द्वेस घमण्ड भगाइस ॥
सान्त भए बन उपबन वहिँ कय ।
सकल कलुस मिटि गय प्रानिन कय ॥

१६. अधिकतम सौ शब्द तक मे पाठ कै सारांश लिखा जाय ।

व्याकरण

१७. शब्द के अन्त्य मे ह्रस्व औ दीर्घ लिखि जाय वाला कुछ शब्दन कै उदाहरण दइ गा है, हरेक मे थप दश ठु शब्द लिखा जाय ।

(क)जवने क्रियापद के बाद विभक्ति आवत है वोकर अन्तिम इकार ह्रस्व लिखि जात है औ विभक्ति जोड़िकै लिखि जात है, जइसै : पढिकै, सुनिकै,	(ख) स्त्री नाता बोधक शब्द : माई, काकी, मामी	(ग) भाववाचक शब्द : मोहब्बति, विचारि, हरषि.....	(घ) आई प्रत्यय लागिकै बना शब्द : पढाई, बोलाई सुनाई,.....	(ङ) विशेषता बुझावैवाला शब्द : गरमी, धनी, गफाड़ी.....

१८. उदाहरण मे दिहा जेस नीचे दइ गवा शब्द से धातु अलग करा जाय ।

शब्द	धातु
लिखबै, पढिहौ, जाई	बै, इहौ, ई
बनुआइब, सुनाइब, अखाड़ब, कुँचल	आइब, आइब, अब, ल
गाइन, सुनायेन, गवा, पढिस	इन, एन, वा, इस

होब, बुझाइब, खनायेन, खाइस, बतावा, राखिन, भगाइस, पीययँ, घूमयँ, जानिन, किहिन ।

१९. रेखाङ्कित क्रियापद से धातु अलग कइकै लिखा जाय ।

भँवहि के बीच जमाइन ध्याना ।
बिन्दु सूर्य सब तेज निधाना ॥
महिना-वहिनक बतियय नाहीं ।
बरिस-बरिस बइठे तप माहीं ॥

तप आपन परभाव देखाइस ।
इरिखा द्वेस घमण्ड भगाइस ॥
सान्त भए बन उपबन वहिँ कय ।
सकल कलुस मिटि गय प्रानिन कय ॥

गाय सिङ्ह सथवयँ जल पीययँ ।
निर्भय जीव-जन्तु बन घूमयँ ॥
बघिनी मृग काँ दूध पियावय ।
बछियन काँ सिङ्हनी सुहुरावय ॥

२०. नीचे दइ गवा अनुच्छेद मे प्रयोग भवा लेख्य चिन्ह कै पहिचान कइकै उका लिखा जाय।

अञ्जली का अस्पताल के बिछौना पर जब-जब होश आवत रहा तब यिहै सवाल पुछत रही-'बप्पा, हमार घर कहाँ होय ?' वकरे यहि सवाल कै जबाब सायद केहु के पास नाही रहा। यहिसे सब लोग यिहै कहिकै वका सान्त्वना दियत रहें कि 'जहाँ बप्पा-अम्मा वहीँ तोहार घर.....जहाँ तोहार पति, सास-ससूर वहीँ तोहार घर.....!' जबाब सुनिकै जोड़ से अञ्जली चिल्लाय परत रही-'नाही...!'

वकर यी हालत देखि कै अस्ताल के स्वास्थ्यकर्मी हैरान रहें। इलाज कहाँ से शुरु करै कहिकै विचार करतै करत। पढी-लिखी, शालिन व्यक्तित्व कै धनी अञ्जली का दुइ हप्ता से कवनो बाति कै होश नाही रहा। यिहै यक्कै सवाल वकरे मन मा बसेरा किहे रहा 'बप्पा, हमार घर कहाँ होय ?'

२१. सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) कवनो दृश्य या जगह के बारे मे कल्पना कइकै वकर बर्णन करत कविता लिखा जाय।

(ख) कवनो प्राकृतिक उद्यान के बारे मे जानकारी लइकै वर्णन करा जाय।

पाठ
२

अंगुलिमाल औ गौतम बुद्ध

- शिवप्रसाद प्यासी

१. अंगुलिमाल कै जन्म कवनो अशुभ नक्षत्र मे कोशल नरेश सम्राट प्रसेनजित के राजपुरोहित के घरे भवा रहै । वोका ज्योतिष लोग, वही नक्षत्र मे पैदा होय वाला बच्चा डाकू, हत्यारा जस प्रवृत्ति कै होई कहिकै बताइन रहै । यहिसे वोकर नाँव अहिंसक राखिन । जब अंगुलिमाल बड़ा भवा तौ वोका शिक्षादीक्षा के खातिर गुरुकुल मे पठय दिहिन । पुरोहित लोगन के सल्लाह से वोका और पढै के बद तक्षशिला मे भेज दिहिन । वहि समय शिक्षा के खातिर एक शिक्षालय बहुतै प्रख्यात रहै । हुआँ बड़े-बड़े राजा, महाराजा कै सन्तान, राजकुमार औ राजकुमारी लोग पढत रहें । अहिंसक के सौम्य व्यवहार से गुरू, गुरुमाँ औ साथी-भाई सब खुश रहें । लेकिन कुछ लोग अहिंसक के खुबी से मनैमन जलत रहें । उलोग गुरु से चुगुली लगावै लागें । निरन्तर वकर बाति सुनिसुनि कै गुरु भी अहिंसक पर क्रोधित होय लागे । उका कठोर से कठोर दण्ड देयक ठान लिहिन लेकिन शिक्षक के रूप मे वइसन नाही कइ सकत रहें । जब पढाई पूरा भवा तो गुरुजी गुरुदक्षिण के रूप मे एक हजार आदमी कै अङुरी चाहीं औ ऊ प्रत्येक अङुरी अलगअलग आदमी के होयक चाहीं माङि लिहिन । खास कइके यी बाति गुरुजी प्रतिशोध मे यहि मेर दक्षिणा मे माङ लिहिन जवने से ऊ खुद मरि जाय ।

२. बाति लगभग ईसा पूर्व ५०० कै आसपास होय । ज्ञान प्राप्त करै के बाद बुद्ध आपन देशना लोगन तक पहुँचावै के खातिर गाँव गाँव भ्रमण करत रहें । भ्रमण करत एक बेर वय कोशल महाजनपद कै राजधानी श्रावस्ती के एक गाँव मे रहें । वहीं वय अपने शिष्यन के बीच आपन देशना देत रहें । आसपास के गाँव के लोगौ वनकै देशना सुनै आवत रहें । धर्मदेशना के समय तथागत का अनुभव भवा कि गाँव कै लोग कुछ सहमा हैं, कवनो पुरवासी खुले मन से देशना मे नाही आवत हैं । जे आवत है, वनहू कै ध्यान देशना सुनत समय वनके ओर न होइकै कहुँ अन्ते विचलित होत रहत है ।

३. तथागत स्वयं पुरवासिन के मनस्थिति जानै के चेष्टा किहिन । वनका ज्ञात भवा कि यहि अंचल के पुरवासिन के मन मे कवनो अंगुलिमाल नाँव के डाकू कै आतंक छाये है । ऊ दुर्दान्त है । ऊ जंगल के बीच से होइकै जायवाले राही औ व्यापरिन के साथ जबरदस्ती करत रहा औ दहिने हाथ कै एक अङुरी काटि लेत है । अङुरी के खातिर यात्रिन कै जान लेय तक उतारु होय जात रहा । वोकर भय वहिँके निवासिन के मन मे यहि मेर से बसा रहे कि उलोग जंगल के रास्ता से आवै जाय के बन्द कइ दिहिन रहै । वकरे बदले लम्मा, घुमउहा रास्ता प्रयोग करै लाग रहें । कब्बौ-कब्बौ वोका बटोही नाही मिलत रहें तौ गाँव के कवनो घर मे घुसरि आवत रहा औ वही घर के एक सदस्य कै जीवन हरण कइकै एक अङुरी काटि लेत रहा । ऊ काटि लिहा अङुरी के माला बनाइकै अपने गला मे पहिरे रहत रहा । यहि नाते लोग वोका अंगुलिमाल के नाँव से जानत रहें ।

४. तथागत का एक दिन यिहौ ज्ञात भवा कि अंगुलिमाल अबहिन तक नौ सौ निन्नाब्बे अङुरी अपने माला मे गूँथ लिहे है । माला मे एक हजार अङुरी गूँथै के वोकर प्रतिज्ञा है । कवनो स्रोत से यिहौ पता चला कि यहि बीच मे वोकर माई वहिसे मिलै जाय वाली हीं । वय अक्सर वहिसे मिलै जावा करत रहीं । लेकिन अबकिर वय बहुतै डेरान रहीं । सम्राट वोका जीवित या मृत पकरै के आज्ञा अपने सैनिक का दइ चुका रहें । उहै बाति वका अवगत करावै, वोकरे पास जाय वाली रहीं । वनके मन मे उधेड़बुन चलत रहै कि न जानै अबकिर काव होई ? काहेकि अंगुलिमाल कै माला पूरा होय मे अब केवल एक अङुरी कै जरूरत है ।

५. तथागत का जब यी तथ्य ज्ञात भवा तौ, वय कुछ चिंतित होय गयें । वय सोचिन, 'अंगुलिमाल कै यी हिंसा वाला कृत्य अब चरम पर पहुँचि चुका है ।

६. तथागत का आदमी के मानसिकता कै गहनतम जानकारी रहा । वय अंगुलिमाल का डाकू बनै के पृष्ठभूमि कै सूक्ष्म छानबीन किहिन । वनका ज्ञात भवा कि अंगुलिमाल मगध जनपद के कवनो गाँव के ब्राह्मण परिवार कै होय । ऊ कोशल महाजनपद के सम्राट प्रसेनजित के राजपुरोहित कै लरिका होय । ध्यान मे डुबकी लगाइकै वय वनके मन कै गति का जानि लिहिन । वय अनुभव किहिन कि वकरे अंतस्थल मे, गहिराई कहुँ करुणा कै बूंद दबा है लेकिन ऊ सुधरै के स्थिति मे नाही है ।

७. वय मन मे कुछ निश्चय किहिन औ बिना केहु से बताये जंगल के ओर चलि पड़े ।

८. शिक्षालय कै नियम वइसन रहा । केहु प्रतिप्रश्न नाही कइ पावत रहा ।

९. आचार्य अहिंसक से दक्षिणा मे जब आदमी कै एक हजार अङुरी माङिन तौ ऊ हतप्रभ होय गवा । स्तब्ध ! होइकै आचार्य के ओर देखिस । वकरे नेत्र मे विस्मय औ उदासी रहा । आँसू

कै कुछ बूँद छलक आय । आचार्य कै यी माग वकरे समझ से दूर रहा । बिद्या आर्जन के समय ऊ गुरु का कब्बो निराश नाही किहे रहा । तब्बो काहे अइसन घृणा भवा ! वोनके सेवा मे कवनो त्रुटी नाही राखिस रहा । हाँ, साथी लोग से कब्बौ-कब्बौ जरुर उलझि जात रहा । काहेकि साथी लोग चिढ़ाई कै वका उल्झै के बाध्य कइ देत रहें ।

१०. एक बेर वोकरे मन मे यहि विषय मे आचार्य के ऊ अव्यावहारिक माँग पर सवाल उठावैक विचार आय । लेकिन कुछ सोचिकै मौन रहि गवा । शिक्षालय मे आचार्य के अव्यावहारिक माग प्रति बात करैक कवनो व्यवस्था नाही रहा ।

११. जब वकरे माता-पिता का यहि बाति के पता चला तौ उलोग बहुत चिन्तित होय गयें । उलोग का ज्योतिष जी कै भविष्यवाणी सचमुच मे घटित होय के प्रतीत होय लाग । उलोग अबहिन तक अहिंसक से ज्योतिष जी कै भविष्यवाणी कै चर्चा नाही किहिन रहा । लेकिन अब उचित प्रतीत भवा तब यकर चर्चा अहिंसक से कइ दिहा जाय । अहिंसक ऊ भविष्यवाणी सुनिस लेकिन विचलित नाही भवा । बल्की वकर आँखि अदृष्ट मे जाईकै टिकि गवा । चेहरा पर अनेक भाव चढ़ै-उतरै लाग, फिर स्थिर होय गवा । जवने भाव मे क्रोध औ क्षोभ दुनौ कै मिश्रण रहा । वकरे मन मे साथिन के प्रति एक क्षण के खातिर वितृष्णा उत्पन्न होय गवा । वोकरे हृदय मे हलचल उठा औ चेहरा पर क्षोभ देखाई देय लाग !

१२. ऊ मन बनाय लिहिस कि दीक्षा लेयक है तौ आचार्य के आज्ञा कै पालन करहिके परी । औ आचार्य से मागि गवा भेंट जुटावै के उद्यत होय गवा ।

१३. अडुरी जमा करै से पहिले अपने पिता से परामर्श किहिस । काहे न कुछ प्रबुद्ध लोग से सहमति लइकै वनकै एक अडुरी माडैक कोशिश करै । पिता से उत्तर मिला, 'पुत्र! यी राजा शिवि कै युग नाही होय ।'

१४. अंततः दीक्षा के खातिर अडुरी जमा करैक उद्देश्य अहिंसक के मन मे दृढ़ होय गवा । यकरे नाते ऊ अइसन जगह कै पहिचान किहिस जहाँ से यात्रिन से जबरदस्ती कइकै वनकै अडुरी काटि लेय औ केहु के पकड़ मे न आवै । यकरे खातिर वोका कोशल महाजनपद के श्रावस्ती कै जंगल अधिक सुरक्षित लाग । श्रावस्ती कोशल जनपद कै राजधानी रहा औ मगध के सीमा से सटा मल्लगण से कुछै दूर पर रहा । घना झाड़िन के आड़े ऊ आपन अड्डा जमाइस औ आपन काम करै लाग । आवै जाय वाले व्यापारी, यात्री लोग कै जबरजस्ती कइके अडुरी काटि लेय लाग ।

१५. अइसै, धीरेधीर क्रुरता वकर संगिन होय गवा । पहिले तो लोग का लागत रहा कि अप्रत्यासित होत है । बाद मे पता चला, घटना संज्ञान मे होत है औ एक डाकू करत है । बाद मे पता चला ऊ अडुरीकै माला पहिरे है । औ लोग अंगुलिमाल से चिन्है लागें ।

१६. अंगुलिमाल क्रुरता के ओर नाही रहा । अङुरी कै गिनती ठीक से होय कहिकै काटै के बाद पेड़न के डारि पर बान्हिकै धइ देत रहा । लेकिन बन कै मांसाहारी चिरई ऊ यहर वहर कइ देत रहीं । जब अङुरी के गिनती मे अव्यवस्था होय लाग तब वोकर माला बनाइके पहिर लिहिस । अंगुलिमाल के यहि काम से आसपास के गाँववाले भयाक्रांत रहें । अपनेका हरदम असुरक्षित महसुस करत रहें । बुद्ध के देशना मे जब बइठत रहें तब्बौ उहै अंगुलिमाल कै भय सताये रहत रहा । जब भय का नाही दूर कइ पाइस तौ रक्षा खातिर सम्राट से याचना किहिन । सम्राट कै सैनिक बहुत प्रयास किहिन लेकिन नाही सफल भयें । तथागत बुद्ध कै धर्म-देशना उहै जंगल के निकट एक गाँव मे होत रहा ।

१७. जब तथागत का अंगुलिमाल के बारे मे पता चला औ सारा वस्तुस्थिति समझ मे आय तो वय बिना बताये जंगल के ओर चलि दिहिन । गाँववाले सावधान किहिन लेकिन बुद्ध नाही मानिन । तथागत यतनै कहिन,'हम्मै न रोको, आज हम रुकी गयेन तौ अनर्थ होय जाई ।'

१८. जब नाही मानिन तौ कुछ शिष्य वोनके साथे चलि दिहिन । लेकिन जब वय घना बन मे प्रवेश करत गयें तब शिष्य लोग कै संख्या कम होते गवा । तथागत जब अंगुलिमाल के निकट पहुँचे तब वय अकेलै रहें । वहर वकर माता वहिसे मिलै चलि दिहे रहीं । वोका सूचना देय कि सम्राट कै सेना गिरफ्तार करै आवत है कहिकै ।

१९. यहर अंगुलिमाल चौकन्ना होइकै बटोहिन कै बाट जोहत रहा । एक रास्ता से अपने माता का आवत देखिस । माता का अपने ओर आवत देखिकै कुछ सोंच परि गवा । विधाता काव लिखे हैं हमरे नसीब मे, एक हजारवीं अङुरी के खातिर केहु नाही मिला हम्मै अपने अम्मा से आपन प्रतिज्ञा पूरा करैक जीवन हरण करै के परै वाला होय गवा । लालिमा छावा वकरे नयन मे, एक पल के खातिर माता के गोद कै याद आय गवा, जहाँ ऊ कब्बौ किलकारी मारत रहा । जेकरे स्पर्श से ऊर्जा कै संचार होत रहा । लेकिन गुरु का दिहा वचन पूरा करै के खातिर माता कै जीवन लेयक परी । अइसन भाव अउतै भरेम वकरे गाल पर आँशु कै कुछ बूँद लुढुक कै गिरा । यतनै मे दुसरे मार्ग से आवत बटोही पर वकर नजर परा । ऊ दुसर केहु नाही रहा स्वयं तथागत रहें ।

२०. अंगुलिमाल तथागत के आवै के प्रति अनभिज्ञ रहा । एक ओर ऊ प्रसन्न रहा । अब वका एक हजारवीं अङुरी के खातिर माता कै जान नाही लेय के परी ।

२१. ऊ लपक कै आगे बढ़ा औ कहिस, 'ए बटोही !'

२२. आवाज सुनिकै बुद्ध पीछे मुड़े तौ देखिन सामने एक काला पहाड़-जेस विकराल मनई खड़ा है । अंगुलिमाल देखिस यी तौ पथिक नाही एक सन्यासी होय । यकरे मुखड़ा पर शांति कै भाव छलकत है । पूरे देंह पर एक सरलता खेलत है । यी कवनो सामान्य पुरुष के अपेक्षा

प्रभावान है । यकरे साथ एक आभामंडल-जेस है । ऊ कुछ क्षण के खातिर आपन क्रुरता भुलाय गवा । ऊ सोचिस,'यी सन्यासी कवनो दुसरे देश से आय जेस है । तब्बै हमरे भय से अपरिचित है । येका सावधान कइ देय के परा, 'सन्यासी, का तुहुँका नाही मालुम यी अंगुलिमाल कै क्षेत्र होय? हम अंगुलिमाल होई, हम स्वाभावै से क्रुर हन । जे यहर से आवत है, हम वकर जान लइ लेइत है तू यहर भटकि कै चलि आय हौ ।' 'अंगुलिमाल, भटकि नाही आय हन । हम अपने इच्छा से तुम्हरे पास आय हन । हम तहुँका जानित है, दुसरे के जीवन हरण का तू आपन धर्म बनाय लिहे हौ, लेकिन यी तुम्हार स्वभाव नाही होय, हम यिहौ जानित है कि आज केहु कै जान लइकै हजारवीं अङुरी अपने अङुरिन के माला मे जोड़ै वाले हौ । तुमका एक हजार अङुरी अपने गुरु का दक्षिणा मे देयक है । तू हमका नाही जानत हौ । हम गौतम बुद्ध होई । अबहिन तक तू निर्दोष कै जीवन से खेलवाड़ करत रहेव । तू हमार प्राण लइकै एक हजार अङुरी पहुँचाय लेव । अङुरी खातिर पहिले तू लोग से स्वेच्छा से देयक प्रार्थना किहे रहेव । हम स्वेच्छा से तुमका आपन अङुरी देय आय हन । यिहै इच्छा से तुम्हार माता तुम्हरे पास आवै वाली रहीं । लेकिन हम नाही चाहित है कि तू मातृहंता बनौ । अबहिन तक तू पूर्ण पापी नाही बना हौ । माता कै प्राण लेयक बाद तू पूर्ण पापी बनि जाबौ । जवने कै कहुँ क्षमा नाही होय पाई ।'

२३. अंगुलिमाल बुद्ध कै बाति सुनिकै चौंका, यहि संन्यासी का तौ सबकुछ पता है ! अंगुलिमाल तथागत का नाही जानत रहा । उनके बारे मे वकरे तक कउनो सूचना नाही पहुचा रहा । हालाँकि सम्राट प्रसेनजित का बुद्ध श्रावस्ती मे आय चुका है सूचना मिलि गै रहा ।

२४. बुद्ध कहिन,'हम यहिँसे जाय के खातिर नाही आय हन । हम तुमका पुनः कहित है, तू हम्मै मारिकै आपन प्रतिज्ञा पूरा कइ लेव । '

२५. 'तू नाही मानत हौ, तौ रुकौ अब्बै तुमका मारित है ।' अंगुलिमाल आपन हथियार लइकै बुद्ध का मारै के बद दउरै लेकिन नेरे नाही पहुच पावै । बुद्ध अपने अंतर्शक्ति के बल पर वोका दिग्भ्रमित कइ दिहिन ।

२६. ऊ क्रोध से चिल्लान,'सन्यासी, तू कहत हौ कि हम्मै मारिकै आपन प्रतिज्ञा पूरा कइ लेव, औ जब हम तुमका मारै चलेन तौ तू पीछे भागत जात हौ । बुद्ध बोले,'हम भागित कहाँ है, हम तौ वर्षों पहिले भागै के छोड़ दिहे हन । हम अब पूर्णतः स्थिर हन । भागत तौ तू हौ । तू अपने भीतर निहारि कै देखौ, तुम्हार मन चौबिसौ घड़ी भागत है । भागिकै हम्मै पकरौ औ मारौ । हम्मै मारै से पहिले तू हमार एक काम कइ देव ।

२७. 'कहो !' ऊ कहिस ।

२८. 'वही पेड़ से एक पाता तुरि लावो ?'

२९. अंगुलिमाल पास रहा पेड़ से एक पाता तुरिस औ बुद्ध का देय के खातिर हाथ बढाइस, बुद्ध कहिन,'येका हम्मै न देव । तुहीँ पुनः जहाँ से लाय रहेव, वहीँ लइ जाय के जोड़ि देव ।'

३०. तब कहत है, 'यी कइसै होय सकत है । जवन पाता टुटि गै वोका पुनः नाही जोड़ि सका जात है ।'

३१. बुद्ध कहिन,'डारि से तू पाता तुरि सकत हौ, लेकिन वही पाता का वही जगह पर तू नाही जोड़ि सकत हौ । तब सोचौ, जवने जीवन का तू पुनः जिवित नाही दइ सकत हौ, वका तू छीन कइसै सकत हौ ?'

३२. बुद्ध द्वारा यी वाक्य अइसन समस्वर मे कहि गै रहा । जवने कै असर सीधे वकरे हृदय पर परा । वोकर हृदयतन्त्र झंकृत होय उठा । यी झंकार अंगुलिमाल के पोरपोर, रोमरोम मे बेधि गवा । बुद्ध कै मर्मस्पर्शी स्वर सुनिकै ऊ अंतर्विमुग्ध अवाक रहि गवा । अइसन अनुभूति वोका पहिले कब्बौ नाही भवा रहा । बुद्ध कै बाति सुनिकै वकरे शरीर कै अणु-अणु मे न जानै काव होय गवा । वकरे कठोर शरीर मे मृदुता आवै लाग, वकर तना-अकड़ा शरीर ढील होय लाग । वकरे मुखमण्डल पर स्पष्ट देखात रहा तनाव कै खींचा लकीर शिथिल होय लाग । बुद्ध का मारै के उठा हाथ उठै रहि गवा । पकड़ ढील होत गवा हाथ से खाँड़ जमिन पर गिरि गवा । वकर शीश झुकै लाग । ऊ निढाल होय गवा औ अंततः वकर शीश बुद्ध के चरण पर झुकि गवा । कुछै क्षण मे बहुत कुछ घटि गवा । जवन अंगुलिमाल कब्बौ खूंखारता कै पर्याय रहा, ऊ अब सरलता कै मूरत लागत रहा । वकरे भीतर घटित अर्न्तघटना वोका बुद्ध कै शिष्य बनै के लालसा भरि दिहिस । वोकरे मुँह से सहसा फूट परा,'भगवन, अंगुलिमाल आप के चरण मे है । आप हम्मै अपने शरण मे लिहा जाय, आपन शिष्य बनाय लिहा जाय ।' औ करुणावान तथागत वका आपन शिष्य बनाय लिहिन ।

३३. वही समय प्रकृति मनोहर होय गवा । अंगुलिमाल के क्रुरता से बन कै जवन पाथर, पेड़, पल्लव, लता औ झाड़िन मे मृत्यु कै अहार बने लोग कै अनवरत चीख, चीत्कार घुलि कै कठोर बनाय दिहिस रहा । वही सब मे अब मर्मर ध्वनि कै अनुगूँज भरै लाग । धीरेधीरे मंदमंद हवा के स्फुरण से बन कै हरीतिमा मनोमय होय लाग । जब वोकर माता वहीँ पहुँचीं, अंगुलिमाल तथागत कै शिष्य बनि चुका रहा ।

शब्दार्थ

राजपुरोहित : राजगुरू, राजा के हियाँ धार्मिक कामकाज करै औ करावै वाला विद्वान ब्राह्मण

अहिंसक : हिंसा न करै वाला, हिंसा कै विरोधी

प्रतिशोध : बदला

अंतस्थल : हृदय, मन

बटोही : राही, यात्री

तथागत : गौतम बुद्ध का कहि जायवाला सम्मान सूचक शब्द, गौतम बुद्ध

देशना : उपदेश, ज्ञानगुन कै बाति

महाजनपद : राज्य, देश

पुरवासिन : गाँव के लोग

मानसिकता : मानसिक अवस्था

भविष्यवाणी : आवै वाले दिन कै बात

प्रबुद्ध : जानकार, दक्ष

मातृहंता : माता कै जान लेय वाला, महतारी का दुःख देय वाला

विकराल : भयंकर, विशाल

बेधि गवा : मिलि गै, गड़ि गवा

मुखमंडल : चेहरा मोहरा

सावधान : हुसियार, सजग, सचेत ।

दिग्भ्रमित : अलमल मे रहा अवस्था, कवनो बात स्पष्ट न कइ पाइब

हरीतिमा : हरियाली, हराभरा

हृदयतन्त्र : सम्पूर्ण शिरा औ धमनी लगायत कै नशा

अंतर्विमुग्ध : हृदय से मुग्ध

चीत्कार : रोदन, दर्द भरा आवाज ।

मल्लगण : सैनिक शिविर, सेना दल ।

शिष्य : चेला, छात्र

अभ्यास

सुनाई

१. पाठ कै पहिला अनुच्छेद सुना जाय औ वहि अनुच्छेद मे कवने-कवने पात्र औ जगह कै नाँव उल्लेख भवा है, कहा जाय।

२. पाठ कै दुसरा अनुच्छेद सुना जाय औ वहिमे केकरे बारे मे है, कहा जाय।

३. पाठ के अन्तिम अनुच्छेद कै इमला लिखा जाय।

बोलाई

४. नीचे दिहा शब्दन कै शुद्ध से उच्चारण करा जाय।

अंगुलिमाल, तथागत, राजपुरोहित, ब्राह्मण, अहिंसक, अव्यावहारिक, भविष्यवाणी, परामर्श

५. नीचे दिहा शब्द कै अर्थ कहा जाय।

राजपुरोहित,अहिंसक, बटोही, तथागत, देशना, महाजनपद, मानसिकता, भविष्यवाणी, प्रबुद्ध, विकराल

६. अंगुलिमाल कै चरित्र आप का कइसन लाग ? पाठ के आधार पर कहा जाय।

७. आपो कवनो पौराणिक कथा छोटकरी मे सुनावा जाय।

पढाई

८. पाठ कै अनुच्छेद सब वसरीपारी से पढा जाय।

९. पाठ कै तिसरा औ चउथा अनुच्छेद पढिकै दिहा प्रश्न कै मौखिक उत्तर दिहा जाय।

(क) पुरवासिन कै चेष्टा के जानै के कोशिश किहिस ?

(ख) अंगुलिमाल केकरे साथ जबरदस्ती कइकै अङुरी काटि लेत रहा ?

(ग) काहेक नाते वहि लोग जंगल के रास्ता से आवैजाय के बन्द कइ दिहिन ?

(घ) तथागत का कवनेकवने बातिकै पता चलि गै रहा ?

(ङ) सम्राट केका जिवित या मृत पकरैक आज्ञा दइ चुका रहें ?

१०. पाठ कै अन्तिम दुइ अनुच्छेद पढिकै मुख्यमुख्य पाँच बुँदा कै टिपोट बनावा जाय ।

११. नीचे दिहा अनुच्छेद पढिकै पुछि गवा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय ।

दिन भरि पानी बरसा तब्बौ राति के आसमान भरेम तरई जगमगात रहीं । सुखैसुख के बीच अशान्ति कै जीवन जियै वालेन के खातिर शान्ति कै प्रतीक देखान चन्द्रमा सुखद्पन कै अनुभूति बाँटत रहा ।

'मध्य राति ओर बाबुजी का अचानक उकुसमुकुस होय लागि ।' असह्य पीडा से छटपटाय के नाते सास बन्द होय जेस भवा, उठिकै बइठे पर आँखि चकराय गवा । अम्मा उठिं । बहुतै देर तक नि:शब्द छटपटायेक बाद बाबुजी अनायासै चुपाय गयें, शान्त देखानें । अम्मा हिक्का बान्हि कै रोवै लागिं । हिलाइन-डोलाइन-चीत्कार कइकै रोवै लागिं लेकिन बाबुजी नाही उठें, आँखि टकटकी लगाय लिहिस .....

अम्मा कै मर्मान्तक चीत्कार रोदन सुनिकै हल्लाखल्ला सुरु भवा । गाँव भरेक सब आदमी उठें, तब तक बाबुजी सदा के खातिर चीर निन्द्रा मा सुति गयें .....

पुरान रोग बढि जाये से रक्तचाप उच्च होई कै उन कै इहलिला समाप्त होई गवा ।

कइसन विडम्बना !

उनकै जीवन अस्त होय जायक बाद बदरी-झँकुरी रुकिकै सकारे साफ आसमान उजेर देखाय परा ।

बहुतै दिन से बरखा-झँकुरी के पानी व्याकुल बनाये रहा । आज घामेक मुँह देखै के पाई कै सब आश्चर्य चकित होइकै एक दूसरे कै मुँह ताकत रहें ।

(स्व.मेदिनी कुमार केवल)

प्रश्न

(क) काव होय के बादो तरई जगमगात रहीं ?

(ख) केकरे खातिर चन्द्रमा सुखद्पन कै अनुभूति बाँटत रहा ?

(ग) सदा के खातिर चिर निद्रा मे के सुति गवा ?

(घ) उनकै जीवन अस्त होय के बाद काव रुकि गवा ?

(ङ) यहि अनुच्छेद कै सारांश लिखा जाय ?

लिखाई

१२. दिहा शब्द प्रयोग कइकै वाक्य बनावा जाय ।

सम्राट, पुरवासी, हरितमा, गुरुदक्षिणा, तथागत, चित्कार, शिष्य

१३. पाठ देखिकै अनुलेखन करा जाय ।

१४. नीचे दिहा प्रश्न कै संक्षिप्त उत्तर दिहा जाय ।

(क) अगुंलिमाल कै नाँव काहे अहिंसक राखिन ?

(ख) पुरवासी लोगन काहे डरात रहें ?

(ग) अंगुलिमाल का केत के खातिर एक हजार आदमी कै अङुरी जमा करैक रहा ?

(घ) तथागत कै बाति सुनै के बाद वका कइसन भवा ?

(ङ) अपने शब्द मे यहि कथा कै सारांश लिखा जाय ।

१५. सप्रसंग व्याख्या किहा जाय ।

(क) हम भागित कहाँ है, हम तौ वर्षों पहिले भागैक छोड़ दिहे हन । हम अब पूर्णत: स्थिर हन । भागत तौ तू हौ । तू अपने भीतर निहारि कै देखौ, तुम्हार मन चौबिसौ घड़ी भागत है ।

(ख) अंगुलिमाल के क्रुरता से बन कै जवन पाथर, पेड़, पल्लव, लता औ झाड़िन मे मृत्यु कै कवर बने लोग कै अनवरत चीख, चीत्कार घुलिकै कठोर बनाय दिहिस रहा । वही सब मे अब मर्मर ध्वनि कै अनुगूँज भरै लाग । धीरे धीरे मंद मंद हवा के स्फुरण से बन कै हरीतिमा मनोमय होय लाग ।

१६. गुरु दक्षिणा के खातिर काहे अहिंसक का वइसन कठोर निर्णय करै के परा ? पाठ के आधार पर विवेचना करा जाय ।

व्याकरण

१७. उदाहरण मे दिहा जेस निचे दइ गवा शब्द से धातु कै प्रकार अलग करा जाय ।

शब्द	धातु	प्रकार
गाइन, बताइन, सुनाइन, पढ़ाइन	गा, बता, सुन, पढ्	सामान्य धातु

गठरिआइब,जुड़वाइब, गहिरूआइब	गठरी +आइब जुड़+ वाइब गहीर +आइब	नाम धातु(नाम, विशेषण औ अव्यय शब्द से बना धातु)
सिखावत है, देखावत है, सुनावत है	सिखाव, देखाव, बताव	प्रेरणार्थक धातु

पढ़ित है, होइहौ, पढ़ी, खेलौ, पढ्बै, जाबै, खइबै, घुमै, पटकब, खनुवाइब, सम्हारब, दउराइब, उपछब, लगाइब

१८. खेल, खा, जा, सुन, उठ, आ, देख, बोल जइसन धातु कै प्रयोग कइकै अपने मन पसन्द विषय पर अनुच्छेद लिखा जाय ।

१९. नीचे दिहा अनुच्छेद मे प्रयोग भवा निपात शब्दन कै पहिचान कइकै वकर प्रयोग कइकै वाक्य बनावा जाय ।

अंबावती मे एक राजा राज्य करत रहें । वय बहुत दानी रहें । वही राज्य मे धर्मसेन नाँव कै एक ठु बड़ा राजा रहें । उनके चार रानी रहीं । एक ब्राह्मण रहीं, दूसर क्षत्रिय, तीसरी वैश्य औ चौथी शूद्र । ब्राह्मणी से एक पुत्र भवा, जवने कै नाँव ब्राह्मणी राखिन । क्षत्राणी से तीन बेटवा भयें । एक कै नाँव शंख, दूसरे कै नाँव विक्रमादित्य औ तीसरे कै नाँव भर्तृहरि राखिन । वैश्य से एक लड़का भवा वकर नाँव चंद्र राखिन । शूद्राणी से धन्वन्तरि भये ।

जब वय लड़के बड़ा भयें तब ब्राह्मणी कै बेटा घर से निकरि परा औ और धारापुर आय । ऊ लरिका वहिके राजा का मारिकै राज्य अपने हाथ मे लइ लिहिस । संयोग की बात है कि जब ऊ वहि राज्य मे आय तो वकर मृत्यु होय गवा । यकरे बाद क्षत्राणी कै बेटा शंख गद्दी पर बैठा । कुछ समय बाद विक्रमादित्य गद्दी पर बैठें ।

एक दिन राजा विक्रमादित्य का राजा बाहुबल के बारे मे पता चला कि जवने गद्दी पर वय बैठा हैं, ऊ राजा बाहुबल के कृपा से है । पंडित लोग सलाह दिहिन कि हे राजन ! आप का जग जानत है, लेकिन जब तक राजा बाहुबल आप का राजतिलक नाय करिहैं, तब तक आप कै राज्य अचल नाही होय पाई । आप उनसे राजतिलक करुवावो ।

विक्रमादित्य कहिन,'अच्छा !' औ वय अपने ज्ञानी औ विश्वसनीय साथी लूतवरण का साथे लइकै गयें । बाहुबल बड़े आदर से उनकै स्वागत किहिन । पाँच दिन बिति गवा । लूतवरण विक्रमादित्य का सलाह दिहिन कि 'जब आप बिदा माङा जाई तक तब राजा बाहुबल आप से कुछ माङै के कहिहैं ।'

२०. नीचे दिहा निपात कै प्रयोग कइकै कवनो घटना कै वर्णन करा जाय ।

ना, नाय, के जाने, हाँ, कि जी, न, तौ, अब

२१. पाठ मे रहा विस्मयादिबोधक वाक्य कै पहिचान कइकै लिखा जाय ।

२२. सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) गौतम बुद्ध से सम्बन्धित कुछ (१,२,) कथा कै संकलन करा जाय औ वकरे बारे मे लिखा जाय ।

(ख) आप का आपन गुरू कइसन रहतें, तौ आप का अउर सिखै पढै मे मन लागत यकरे बारे मे १५० शब्द तक मे दुइ अनुच्छेद लिखा जाय ।

पाठ
३

रामनिवास पाण्डेय

१. रामनिवास पाण्डेय कै जन्म कपिलवस्तु जिला के तत्कालीन पिपरा गा.वि.स., ठुलो गौरा गाँव मे वि.सं. १९९५साल पुस २८गते भवा रहा । यनके पिताजी कै नाँव राम वरण पाण्डेय रहा । आप अपने समय मे संस्कृत कै प्रसिद्ध विद्वान रहें । रामनिवास पाण्डेय रामवरण पाण्डेय जी कै बड़ा बेटवा रहें । पाण्डेय जी बचपनै से तिक्ष्ण प्रतिभा कै रहें । आप हरेक विषयवस्तु कै क्रमिक अध्ययन करै मे हमेशा जिज्ञासु रहत रहें ।

२. पाण्डेय कै शुरुवात से लइकै एम.ए.तक कै शिक्षादिक्षा भारत मे भवा रहै । गोरखपुर विश्वविद्यालय से सन् १९५९मे इतिहास विषय से स्नाकोत्तर उर्त्तिण किहिन । वोकरे बाद सन् १९६२ मे दिल्ली विश्वविद्यालय से पुरातत्त्व विषय से स्नाकोत्तर तक कै शिक्षा हासिल किहिन । वही साल त्रिभुवन विश्वविद्यालय मे इतिहास विषय कै उप प्राध्यापक के रुप मे नियुक्त भयें । आप कै नेपाली इतिहास, संस्कृति औ पुरातत्त्व के क्षेत्र मे अग्रणी भूमिका रहा । त्रिभुवन विश्वविद्यालय सेवा अवधि मे प्राध्यापक पाण्डेय पुरातत्त्व औ नेपाली इतिहास विषय कै पाठ्यक्रम तयार कराइन रहा । वोका अपनही सक्रियता मे त्रिभुवन विश्वविद्यालय के स्नाकोत्तर तह मे यहि विषय के पढाई कै शुरुवात कराइन । यही किसिम से स्नाकोत्तर तह मे वुद्धिष्ट स्टडीज (बौद्ध दर्शन) के पाठ्यक्रम का बनावै मे आप कै उल्लेखनीय भूमिका रहा । पेशागत सेवा के क्रम मे सन १९८१ मे आप विभागीय प्रमुख बनें । विभागीय प्रमुख के रूप मे सक्रिय पाण्डेय जी सन् २००१ मे त्रिभुवन विश्वविद्यालय सेवा से सेवानिवृत भयें ।

३. सेवा कालै मे सन् १९७१ मे फ्रेञ्च भाषा मे स्नातक औ सन १९९३ मे विद्यावारिधि कै गरिमामय उपाधि हासिल किहिन । विभागीय उत्तरदायित्व औ अध्यापन के सङहरियै शैक्षिक, पुरातात्त्विक औ सामाजिक क्षेत्र कै चौदह प्रतिष्ठित स्वदेशी औ विदेशी संघसंस्थन से आवद्ध रहें । आप नेपाल इटली सांस्कृतिक केन्द्र कै अध्यक्ष, भारतीय सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र वाराणसी भारत के सल्लाकार समिति कै सदस्य, लुम्विनी विकास कोष कै सदस्य, शिक्षा मन्त्रालय अन्तर्गत के यूनेस्को शाखा कै सदस्य,नेपाल संग्रहालय संघ कै अध्यक्ष आदि रहें । वि.सं. २०४६ साल मे आप नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान मे सदस्य के रूप मे रहें । यकरे तत्काल बाद आजीवन सदस्य के रूप मे जीवन पर्यन्त भाषा साहित्य के श्रीवृद्धि मे आपन योगदान दिहिन ।

४. विभिन्न देशन मे जाई कै अध्ययन कै काम किहिन रहा । आप कै करीब १० ठू अनुसन्धानमूलक पुस्तक औ सयौं अनुसन्धानमूलक लेख प्रकाशित किहे रहें । यहि मध्ये 'मेकिंग अफ माडर्न' नेपाल हमरे देश कै वाइसे राज्य के बारे मे लिखा एक मात्र इतिहास कै किताब होय । यहमा पश्चिमी नेपाल कै राजनीतिक, सांस्कृतिक औ धार्मिक इतिहास कै विस्तृत चित्रण है । यी वाइसे राज्य कै राजा खस मल्ल होय के नाते येका हमरे खस मल्ल राजा लोगन कै इतिहासौ कहि सका जात है ।

यही किसिम से 'सेक्रेट कमप्लेक्स अफ रुरू क्षेत्र' रुरू क्षेत्र कै इतिहास, उहाँ कै वास्तुकला कै स्पष्ट वर्णन है । यही किसिम से यहमा रुरू क्षेत्र कै पूजा परम्परा औ उहाँ कै पुजारिन के बारे कै जानकारी के साथै यहमा रुरू क्षेत्र से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण जगहिन कै सुन्दर वर्णन है । यी आप के द्वारा लिखा दूसर महत्त्वपूर्ण पुस्तक होय । तीसर महत्त्वपूर्ण पुस्तक होय, प्रि हिस्ट्री आफ नेपाल । यहमा नेपाल के प्राग इतिहासिक काल कै विस्तृत वर्णन है । यही किसिम से यहमा नेपाल में मिला प्राग एतिहासिक काल के औजारन कै तुलनात्मक अध्ययन के साथै महत्त्वपूर्ण प्राग एतिहासिक जगहिन कै वर्णन है । यही किसिम से आ कै चउथा किताब 'नेपाल कै पौराणिक इतिहास' मे नेपाल के महत्त्वपूर्ण पौराणिक स्थलन कै विस्तृत वर्णन है । यहमा वहि कालखण्ड में रहा नेपाल के विविध धार्मिक स्थलन कै परिचय उपलब्ध होय के साथै महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व औ जाति लोगन कै परिचय उपलब्ध है । नेपाल कै पौराणिक इतिहास के साथै पाण्डेय जी नेपाल कै ललितपुर जिला मे रहा दशनामी सन्यासिन कै मठन के बारे मे लिखा पुस्तक होय, 'दशनामी सन्यासिज आफ ललितपुर' । यहमा ललितपुर मे रहा दशनामी सन्यासी लोगन कै अलग अलग मठ के बारे मे विस्तृत जानकारी मिलत है । यकरे साथै नेपाली कला कै प्रारूप के बारे मे परिचय देय वाला पुस्तक 'ब्रिफ सर्वे आफ नेपलिज आर्ट फार्मस', पर्यटन तथा संस्कृति मन्त्रालय से प्रकाशित है । अइसै आप देश औ विदेश के अलगअलग जगही पेश किहा पचपन से ज्यादे कार्यपत्रन कै बहुमूल्य कृति छोड़ि कै गा हैं ।

५. पारस्परिक व्यवहार मे पाण्डेय नितान्त संयमित, मिलनसार औ मृदुभाषी रहें । साथसाथ निर्भीक, स्पष्टवक्ता औ व्यवहार कुशल अभिव्यक्ति देय वाले प्रतिभा रहें ।

६. आप के विद्वता औ काम कै कदर करत सर्वश्रेष्ठ शिक्षक उपाधि वि.सं.२०४५, गोरखा दक्षिण वाहु दोस्रा वि.सं.२०४५, संस्कृति मन्त्रालय से दइ जाय वाला राष्ट्रिय प्रतिभा पुरस्कार वि.सं.२०५६, नूर गंगा प्रतिभा पुरस्कार वि.सं.२०५६ आदि से पाण्डेय का सम्मानित भवा रहें ।

७ वय नेपाली, अङ्ग्रेजी, संस्कृत, फ्रेञ्च, हिन्दी औ अवधी भाषा कै ज्ञाता रहें । यहिसे पाण्डेय बहुभाषी रहें कहि सका जात है । आप अपने जीवनकाल मे फ्रान्स, श्रीलंका, भारत, रसिया, थाइलैण्ड, वंगलादेश आदि देशन कै भ्रमण किहिन रहा । यहिसे आप के अध्ययन औ अनुसन्धान मे अउर निखार आय रहा ।

८. भाषा औ संस्कृति जाति औ समुदाय कै पहिचान होय। यहिमे जीवन का व्यवस्थित औ गतिशिल बनावैक गूढ़ रहस्य रहत है। यी बाति पर पाण्डेय गहन अध्ययन किहे रहें। यहिसे अवधी भाषा औ साहित्य कै क्रमिक विकास औ अध्ययन के खातिर संस्था कै आवश्यक होय लाग। वि.सं.२०५२ साल मे आइकै अवधी सांस्कृतिक विकास परिषद कै गठन भवा। पाण्डेय यहि संस्था कै संस्थापक अध्यक्ष बनें। नेपाल मे मूल रूप से यही संस्था के समन्वय औ पाठ्यक्रम विकास केन्द्र के सक्रियता मे अवधी भाषा कै पढ़ाई विषय के रुप मे शुरु भवा। जवन कि हरेक अवधीभाषी के खातिर विशेष उत्साह कै बाति होय।

९. तत्कालीन नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान के समन्वय मे अवधी भाषा साहित्य औ संस्कृति कै संरक्षण सम्वर्द्धन के खातिर विभिन्न काम आगे बढ़ा। शुरु मे अवधी लोक साहित्य कै विधागत सामग्री संग्रहित करैक काम भवा। अलग अलग विद्वान लोगन के द्वारा विद्वतवृत्ति औ लघु अनुसन्धान के माध्यम से अलगअलग काम सम्पन्न भवा। जवने मे अवधी भाषा कै लोक कथा कै सङ्कलन, लोक साहित्य कै सङ्कलन औ विश्लेषण, लोकगीत कै सङ्कलन औ विश्लेषण, लोकगाथा कै सङ्कलन औ विश्लेषण, अवधी लोकोक्ति औ बुझउवलि कै सङ्कलन आदि प्रमुख होय। आपै के सक्रियता मे लघु अवधी शब्दकोश कै प्रकाशन भवा रहा। यकरे साथ-साथ अवधी भाषा कै समाज भाषा वैज्ञानिक अध्ययनव सम्पन्न भवा। यिहै प्रेरणा से आज तक अवधी भाषा औ साहित्य कै काम निरन्तरता पाये है। पाण्डेय अवधी सांस्कृतिक विकास परिषद कै संस्थापक अध्यक्ष औ बाद मे अन्तिम काल तक संरक्षक रहें।

१०. रामनिवास पाण्डेय इतिहास, संस्कृति औ पुरातत्त्व कै क्षेत्र मे लम्मे समय तक काम किहिन। आप कर्म का आपन धर्म बनाये रहें। जीवन के अन्तिम क्षण तक काम करतै रहि गयें। यही क्रम मे त्रिभुवन विश्वविद्यालय सेवा आयोग मे उप-प्राध्यापक लोगन कै अर्न्तवार्ता लेय के क्रम मे वि.सं.२०६१ साल अगहन १४ गते हृदयघात से आप कै देहावसान होई गवा।

११. पाण्डेय के प्रयास से नेपाली इतिहास, संस्कृति औ पुरातत्त्व के क्षेत्र मे हमरे देश मे एक मजबूत आधार तयार भवा है। यकरे सडहरियै अवधीभाषा, संस्कृति के संरक्षण औ सम्बर्धन के खातिर अवधी सांस्कृतिक विकास परिषद कै संस्थापक अध्यक्ष के रूप मे एक मजबूत दिशा देखाइन। पाण्डेय के अनुसार अध्ययन औ अनुसन्धान हरेक क्षेत्र मे होय के चाहीं। गहन अध्ययन, दृढ इच्छाशक्ति औ संघर्ष से आदमी कै जीवन सफल होत है। यी आप के जीवन कै प्रमुख उद्देश्य रहें।

१२. इतिहास, संस्कृति औ पुरातत्त्व के क्षेत्र मे काम करै वाले आप का मार्गदर्शक के रुप मे जानत हैं। आप के द्वारा कइ गये अनुसन्धान औ तयार लिखित कृति हमरे देश कै धरोहर होंय। आवै वाला पुस्ता आप का एक पुरातत्त्वविद औ इतिहासकार के रूप मे सदा सर्वदा याद करत रही।

शब्दार्थ

श्रीवृद्धि :	विकास औ समृद्धि
सेवानिवृत :	सेवा अवकास, काम से बिदा
आजीवन :	जीवन भर, पूरा जीवन
अनुसन्धानमूलक :	खोज मूलक, जानकारीमूलक
विद्वतवृत्ति :	विद्वान लोग का दइ जायवाला आर्थिक सहयोग
विश्लेषण :	व्याख्या, सही औ गलत, सत्य औ असत्य होयक निष्कर्ष
मृदुभाषी :	दुसरे का अपने ओर आकर्षित करै वाला बोली, सभ्य औ कर्णप्रिय बोली
हृदयघात :	दिल कै दौरा, मुटु मे रक्त कै अवरोध से उत्पन्न समस्या ।
त्रि.वि :	त्रिभुवन विश्वविद्यालय कै संक्षिप्त रुप

अभ्यास

सुनाई

१. पाठ कै अठवाँ अनुच्छेद शिक्षक से सुनिकै ठीक बेठीक अलग करा जाय ।

(क) नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान से समन्वय कइकै अवधी भाषा साहित्य औ संस्कृति काम आगे बढा ।

(ख) विद्वतवृत्ति औ लघु अनुसन्धान के माध्यम से अलगअलग काम सम्पन्न भवा ।

(ग) अवधी लोकगीत कै सङ्कलन औ विश्लेषण कै काम भवा ।

(घ) अवधी लघु शब्द कोश तइयार कइ गै रहा ।

(ङ) पाण्डेय जी अवधी सांस्कृतिक विकास परिषद कै संस्थापक अध्यक्ष होयं ।

२. पाठ के दुसरा अनुच्छेद कै इमला लिखा जाय ।

३. पाठ कै पहिला अनुच्छेद सुना जाय औ दिहा वाक्य के खाली जगह पर लिखा जाय :।

(क) नेपाली ..... क्षेत्र मे अग्रणी भुमिका निर्वाह किहिन ।

(ख) रामनिवास पाण्डेय कै जन्म वि.सं.....मे भवा रहा ।

(ग) पाण्डेय के पिता कै नाँव .....रहा ।

(घ) आप कै पिता .....कै प्रसिद्ध विद्वान रहें ।

(ङ) रामनिवास पाण्डेय अपने पिता कै .....सुपुत्र रहें ।

४. नीचे दिहा अनुच्छेद सब साथी लोग का पढै के कहा जाय औ सुनिकै उत्तर दिहा जाय ।

अवधी साहित्य कै सिद्धहस्त कथाकार लोकनाथ बर्मा कै जन्म बाँके जिला के पुरैना गाँव मे बिक्रम सम्बत २००१ मे भवा रहा । ऊ बाल्यकाल से मेधावी रहे । पढ़ेलिखे मे उनकै बहुत मन लागत रहै । नेपाल मा ऊ साइत पढ़ाई लिखाई कै बढ़िया व्यस्था नाय रहे । लेकिन उनकै पढ़ाई पर बहुत ध्यान रहै । नेपाल औ भारत से आप स्नातकोत्तर तक अङ्ग्रेजी बिषय लइकै उतीर्ण किहिन औ शिक्षक पेशा मे जुड़ गये । माध्यमिक विद्यालय के प्राध्यापक के रूप मे सेवा किहिन । कइयु विद्यालय कै प्रधानाध्यापकव रहें । बर्मा पत्रकारिता औ लेखन का जीवन भर संजोये रहे । उनकय अङ्ग्रेजी, अवधी, नेपाली औ उर्दू भाषा पर विशेष पकड़ रहा । युवा काल से समाजसेवा चेतना जैसे काम मा लगे बर्मा जीवनपर्यान्त लाग रहे । अवधी साहित्य के विकास खातिर नेपाल टेलीविजन के कोहलपुर प्रशारण केन्द्र से यर्थाथ नामक चेतनामूलक १८० भाग नाटक निर्माण औ प्रशारण किहिन । पत्रकारिता के क्षेत्र मे अवधी भाषा कै ग्रामदीप नामक साप्ताहिक पत्रिका कै सम्पादक रहिके प्रकाशित किहिन । अवधी भाषा मे जलसमाधि नाम के उपन्यास औ नेपाली भाषा के साहित्यिक कृति जइसै मुनामदन,कालो सूर्य, मोदिआइन आदि अवधी भाषा मे अनुवाद कइके प्रकाशन किहिन । कुर्मी समाज कल्याण महासभा नामक संस्था संचालन कइके समाज मे व्याप्त कुसंगति का उन्मूलन करैक जीवनभर आपन योगदान दिहिन । उनके समाज औ साहित्य सेवा के काम का मूल्याङ्कन कइकै स्थानीय औ बहुत से राष्ट्रिय संस्था सम्मनित किहिन रहा । व्यङ्ग्य, नाटक औ कविता लेखन मे निपूण बर्मा जी ७२ बर्ष के उमेर मे पेट के कैंसर से ग्रसित रहें औ वहिसे उनकै निधन होई गवा । ग्रामीण क्षेत्र मे औ साधारण खेतीपाती करैवाले परिवार मे जन्म लइकै अपने का कब्बौ कमजोर नाई महसूस किहिन । उच्च शिक्षा हासिल कइकै पिछड़ा समाज मे ज्ञान के ज्योति फैलावे मे जीवन भर लाग रहि गयें ।

(रामफेरन बर्मा :सञ्चार कै हस्थी लोकनाथ बर्मा)

(क) लोकनाथ बर्मा कवने रूप मे परिचित हैं ?

(ख) लोकनाथ बर्मा कै रूची कै क्षेत्र काव काव रहा ?

(ग) ग्रामदीप पत्रिका कवने भाषा मे प्रकाशित होत रहा औ यी कइसन पत्रिका रहा?

(घ) लोकनाथ बर्मा कवने कवने बिधा मे निपूर्ण रहें ?

(ङ) जीवन के आखिरी तक वय कवन काम करत रहि गयें ?

बोलाई

५. नीचे दिहा शब्द शुद्ध से उच्चारण करा जाय औ उदाहरण मे दिहा जेस लिखा जाय ।

श्रीवृद्धि : / श्री.वृ.द्धि

पुरातत्त्व, साहित्य, इतिहास, भूमिका, हृदयघात

६. नीचे दिहा शब्दन कै अर्थ स्पष्ट होय के मेर से वाक्य बनावा जाय औ कक्षा मे सुनावा जाय ।

भाषा, संस्कृति, इतिहास, विद्वतवृत्ति, अवकास, विधा, अनुसन्धान, बुझउवलि

७. आप कै रुची रहा कवनो दुइ सकारात्मक काम के बारे मे आपन धारणा कक्षा मे सुनावा जाय ।

जइसै : आज हम कवनो समाचार सुनैक बाद वोकर विश्लेषण करबै औ वोकरे बारे मे लिखब ।

८. अपने भाषा, साहित्य औ संस्कृति के विकास के खातिर के का काव करै के चाहीं, तर्क सहित आपन विचार सुनावा जाय ।

९. कक्षा मे दुइ जने साथी उठिकै राम निवास पाण्डेय के बारे मे पाठ के आधार पर संवाद प्रस्तुत करा जाय ।

पढाई

१०. पाठ कै अनुच्छेद सब वसरीपारी सस्वर वाचन करा जाय ।

११. पाठ कै अन्तिम दुइ अुनच्छेद पढिकै पुछि गवा प्रश्न कै जबाब दिहा जाय ।

(क) पाण्डेय कवने क्षेत्र मे लम्मे समय तक काम किहिन ?

(ख) आप कै मृत्यु कब औ कइसै भवा ?

(ग) पाण्डेय के प्रयास मे केत कै आधार तयार भवा ?

(घ) केतकै संरक्षण औ सम्बर्धन के खातिर दिशा प्रदान किहिन ?

(ङ) आप का कवने क्षेत्र कै मार्ग दर्शक मानत हैं ?

१२. पाठ कै तिसरा औ चउथा अनुच्छेद मौन पठन करा जाय औ पाँच ठु बुँदा टिपोट कइकै एक तृतीयांश मे सारांश लिखा जाय ।

१३. नीचे दिहा अनुच्छेद पढा जाय औ पुछि गवा प्रश्न कै उत्तर दिहा जाय ।

उहौ मुस्लिम परिवारै मे पयदा भवा रहा । ऊ अर्थात हसनुल्ला !

हसनुल्ला शिक्षा मदरशै से प्राप्त किहिस रहा । लेकिन वही शिक्षा से ऊ सन्तुष्ट नाही होय पाये रहा । वही असन्तुष्टि से ऊ स्वाध्ययन के ओर आकर्षित भवा रहा ।

अबकिर केर बकरईद मे मुसलमान बस्तिन सब मे बहुतै भँइसा आय रहें जवन कुर्बानी करै के खातिर लाय गये रहें । विदेशी सरकार उपहार दिहिस रहा ।

बकरईद के नमाज के बाद आदमी लोग कुर्बानी स्थल पर जमा होय लागें । जहाँ भँइसा सब बान्हा रहें । ऊ आदमी लोग जोड़-तोड़ से विदेशी सरकार कै प्रशंसा करत रहें । 'नेपाली मुसलमान लोग अइसन उदाहरणीय भलाई करै वाला मुस्लिम राष्ट्र सरकार महान होय, आशा करा जाय कि विदेशी सरकार आवै वाले दिन मे अइसै महान बना रहै ।'

हसनुल्ला के घर के नेरवै कुर्बानी स्थल रहा । जहाँ भँइसा सब बान्हा रहें । विदेशी सरकार के प्रशंसा के आवाज सब गुँजत रहा ।

वय प्रशंसा के आवाज का घृणा करत हसनुल्ला कहिस,'यी भँइसा सब उपहार दइकै विदेशी सरकार नेपाली मुसलमान कै भलाई नाही किहिस है, कुभलाई किहिस है । भलाई किहिस तब कहैक चाहीं, जब यी भँइसा मे लगानी करै वाला पइसा विदेशी सरकार नेपाली मुसलमान समुदाय के शिक्षा मे लगानी करी । औ सब मुसलमान समुदाय का अशिक्षित नाही रहैक परी । अशिक्षित होहिके नाते देश मे दोयम दर्जा कै नागरिक नाही होयक परी ।

'यी हसनुल्ला इस्लाम विरोधी होय । अब येका कारवाही करै के अनुमति यकरे परिवार का तत्काल देयक परी । नाही तौ यकर मूल्य उलोग का अपनेन चुकावैक परी ।' एक ठु महामुल्ला चेतावनी दिहिस ।

'जरुरै यी हसनुल्ला इस्लाम विरोधी होय । येका कारवाही करै के अनुमति यकरे परिवार का अब देहिके परी । नाही तौ यकर मूल्य उलोग का अपनेन चुकावै के परी ।' वही महामुल्ला के समर्थन मे सारा कुर्बानी स्थल गुँजत रहि गवा । (इद्रिस सायल : कारवाही)

प्रश्न

(क) हसनुल्ला कहाँ पयदा भवा रहा औ कहाँ शिक्षा लिहिस रहा ?

(ख) ऊ शिक्षा से सन्तुष्ट न होय के बाद काव करै लाग ?

(ग) बकरईद मे विदेशी सरकार काव उपहार दिहे रहा ?

(घ) उपहार के विषय मे हसनुल्ला कै राय कइसन रहा ?

(ङ) अउर लोग कुर्बानी स्थल पर कइसन बाति करै लागें ?

लिखाई

१४. नीचे दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय ।

(क) रामनिवास पाण्डेय कै जन्म कब औ कहाँ भवा रहा ?

(ख) आप कै शिक्षा दिक्षा कहाँ भवा रहा ?

(ग) पाण्डेय जी के विचार मे भाषा औ संस्कृति काव होय ?

(घ) पाण्डेय जी कवन-कवन पुरस्कार औ सम्मान मिला रहा ?

(ङ) आप कै मुख्य-मुख्य कृति कै नाँव काव होय ।

१५. पाठ कै सारांश लिखा जाय ।

१६. रामनिवास पाण्डेय कै परिचय १०० शब्द तक मे न बढाइकै अपने शब्द मे लिखा जाय ।

१७. भाव स्पष्ट करा जाय ।

(क) भाषा, संस्कृति, जाति औ समुदाय कै पहिचान होय । यहिमे जीवन का व्यवस्थित औ गतिशिल बनावैक गूढ़ रहस्य रहत है ।

(ख) गहन अध्ययन, दृढ इच्छाशक्ति औ संघर्ष से आदमी कै जीवन सफल होत है ।

१८. पाठ के पहिला औ दुसरा औ अनुच्छेद से 'ष' 'श' औ 'स' कै प्रयोग भवा शब्द पहिचान कइकै लिखा जाय ।

१९. पाठ कै सतवाँ अनुच्छेद से ह्रस्व इकार औ दीर्घ ईकार लाग पाँच-पाँच ठु शब्द लिखा जाय ।

व्याकरण

२०. नीचे दिहा अनुच्छेद मे रेखाङ्कित शब्द क्रियायोगी होय, ऊ सब अभ्यास पुस्तिका मे लिखा जाय :

आजकाल्ह रमुवा सन्झा सकारे फुलवारी सिंचै के काम करत है । पानी न बरसे बहुतै लम्मा समय होय गै रहा । जवने से हरघरी देखत के सुख्खा देखात रहा । फूल कै जान कहब पानी रहा । वहिसे ऊ यहर-वहर कै काम छोड़िकै फुलवारी कै सेवाजतन करत रहै । गननमनन फुलान फूलन का देखिकै ऊ मुस्कियाय लागत रहा । कब्बोकाल ऊ फुलवारी मे यतना मस्त

होय जात रहा कि समय बिता पतै नाही पावत रहा । फूलन से रमुवा का यतना प्यार होय गवा रहा । ऊ सब थिर फुलवै लगाये रहा । घर के भीतर अङना मे, उप्पर छत पर, बहरे मोहारा पर किनारे-किनारे फूल लगाय रहा । रमुवा के घर औ फुलवारी कवनो आधुनिक पार्क से कम नाही देखात है रहै ।

२१. नीचे दिहा अनुच्छेद मे रेखाङ्कित शब्द नामयोगी होय, ऊ सब अभ्यास पुस्तिका मे लिखा जाय ।

पनहा गाँव के दखिखन किनारे अमृता कै घर रहा । सब से दखिखन । बाउजी, नइकी माई, उनकै सगी बहिन मीना औ एक भाई, नइकी महतारी कै बेटवा, यतनै जन कै परिवार रहा । फुस कै घर, घर के चारिव ओर पटिदारेन कै घर, दुवारे के बगल मे घारी रहा । घर के पिछवारे आम कै पेड़ रहा । गल्ली मैहा ललमेवा औ घर के दखिखन बगल मे बडवार अमरुत कै पेड़ रहा । घर के अगुवारे नाला रहा । वही के किनारे बाघ के घर नेहाइत चौंडा बनावा रहा । अमृता रोज वही चौंडा से कपड़ा से छानिकै पानी भरत रही । गाँव मे यक्कय कुवा रहा जवन काफी दुर रहा । वतना घरी पढाई लिखाई कै बेसी जागरुकता नाय रहा । धनीमनी कै लड़के पढ़त रहे, दुर-दुर के स्कुल मे जाय कै । गरीब-दुखिया कै कवन बात । ओकरे उपर बिटियन कै तौ के पुछत ? हेलमारी बेल ।

अमृता अपनेन जुगाड़ से चौंडामे पानी भरयक तरकिब निकारिस रहा । बलुहा पाखा के चारिव ओर माटी लगाय कै चौंडा के अगल-बगल मैंहा छर्‌री डारेक बाद पानी कै निकाश बनाय रही । यी तरकिब परोसिव का पसन्द आवा । पानी तौ ठीकै रहा लकिन सुरक्षित नाय रहा । कब्बौ धनपश नक्शान कै दियै, कब्बौ बाढ़िबुढ़ा आवा, पानी बरसा तब्बो समस्या बना रहिजाय, यतनय केवल नाय सुखाके समय मे तौ आउर वय चौंडाकै कवन काम ।

अमृता का तौ पानी भरतय भरत सगरिव दिन निकर जाय । भिन्नही पाँच बजे से पनिहारिन कै गगरी उठि जात रहा, गाँव के बडकी कुवाँ तक । अमृता सुबेरे नौं बजे तक तौ पनियय भरत रही । खाना पकाओ, माता पिता भाई लोग का खियाओ, पियाओ, चौका बर्तन करव, कब्बौ दुसरे सिवाने से झौवा भर तौ कब्बौ बोझ भर घास काटिकै लावैक बाद शाम चार बजे फिर पानी भरय बड़की कुवा तक कै यात्रा । यही दिनचर्या रहा अमृता कै ।

२२. नीचे दिहा अनुच्छेद से संयोजक कै पहिचान कइकै अभ्यास पुस्तिका मे लिखा जाय औ वाक्य बनावा जाय ।

मानव औ पर्यावरण एक-दूसरे पर निर्भर होत है । पर्यावरण : जलवायु प्रदूषण या वृक्ष कम होब, मानव शरीर तथा स्वास्थ्य पर सीधा असर करत है । मानव कै अच्छा-खराब आदत जइसै वृक्षन कै सहेजब, जलवायु प्रदूषण रोकब, स्वच्छता राखब पर्यावरण का प्रभावित करत

है । मानव कै खराब आदत जइसै पानी दूषित करब, बर्बाद करब, वृक्ष कै अत्यधिक मात्रा मे कटान करब आदि पर्यावरण का बहुतै दयनीय मेर से प्रभावित करत है जवने कै नतीजा बाद मे मानव का प्राकृतिक आपदा कै सामना कइकै भुगतावैक परत है ।

पहिला विश्व पर्यावरण दिवस : संयुक्त राष्ट्र के द्वारा घोषित यी दिवस पर्यावरण के प्रति वैश्विक स्तर पर जागरूकता लावै के खातिर मनाय जात है । यकर शुरुआत १९७२ मे ६ जून से १६ जून तक संयुक्त राष्ट्र के महासभा के द्वारा आयोजित विश्व पर्यावरण सम्मेलन से भवा रहा । ६ जून १९७३ के पहिला विश्व पर्यावरण दिवस मनाय गै रहा । पर्यावरण अर्थात प्रकृति : पर्यावरण के जैविक संगठन मे सूक्ष्म जीवाणु से लइकै कीड़ा-मकोड़ा, सब जीव-जन्तु औ पेड़-पौध के अलावा वहिसे जुड़ा सारा जैव क्रिया औ प्रक्रियव शामिल रहत है । जबकि पर्यावरण के अजैविक संगठन मे निर्जीव तत्त्व औ वहिसे जुड़ा प्रक्रिया आवत है, जइसैः पर्वत, चट्टान,नदी, हवा औ जलवायु के तत्त्व इत्यादि ।

२३. नीचे दिहा शब्दन का पढा जाय औ तालिका मे दइ गा जेस क्रियायोगी, नामयोगी औ संयोजक अलग कइकै अभ्यास पुस्तिका मे लिखा जाय ।

आजकाल्ह, औ, उप्पर, अलावा, आजतक, से, अर्थात, एवंम, ओर, काहेकि, बदलेम, यहिसे, अनुसार, वहिसे, नीचे, मेर, जइसै, आगे, सामने, जबसे, यहीथिर, जल्दी, जबकी धीरे फटाफट, कि, ज्यादा, वत्तै, न...न, न तौ, तनिक, बहुत ।

क्रियायोगी	नामयोगी	संयोजक

२४. सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) नीचे दिहा बुँदा के आधार पर जीवनी तयार करा जाय ।

अ. नाँव : पन्नालाल गुप्त 'चाचा जी'

आ. जन्म : वि.सं.१९८६।०५।२७/जन्मस्थान : रानी तालाब, नेपालगञ्ज बाँके ।

इ. माता : जानकी देवी गुप्त

ई. पिता : बेचनलाल गुप्त

उ. प्रेरणा कै स्रोत : महाविरप्रसाद गुप्त (आप कै बड़े भैया)

ऊ. सेवा : साप्ताहिक किरण कै संस्थापक तथा सम्पादक (वि.सं.२०३१ से २०७६ तक)

ए. सम्मान तथा पुरस्कार

- गोपाल दास पत्रकारिता पुरस्कार, प्रेसकाउन्सिल पत्रकारिता पुरस्कार, महेन्द्रनारायण निधि पत्रकारिता पुरस्कार, वरिष्ठ पत्रकार सम्मान, सञ्चार मन्त्रालय, राष्ट्रपति श्री रामवरण यादव औ श्री विद्या देवी भण्डारी सेजन सेवा श्री पदक, प्रधानमन्त्री गिरिजा प्रसाद कोइराला, शेरबहादुर देउवा औ लोकेन्द्रबहादुर चन्द से सम्मान तथा पुरस्कार, पत्रकार महासंघ से प्रेस स्वतन्त्रता सेनानी कै अवार्ड ।

ऐ. जीवन कै आर्दश : प्रजातन्त्र, स्वतन्त्रता, वाक स्वतन्त्रता औ स्वाभिमान से आदमी कै जीवन समृद्ध होत है ।

(ख) अपने क्षेत्र के समाजसेवी या शिक्षा सेवी के बारे मे जानकारी सङ्कलन कइकै जीवनी तयार किहा जाय औ कक्षा मे प्रस्तुत किहा जाय ।

पाठ
४

स्थानीय ज्ञान, सीप औ प्रविधि

-सपना श्रीवास्तव

१. अति प्राचीनकाल से कवि, विद्वान औ साधारण व्यक्ति ग्रामीण जीवन के आनन्द कै गुण गावत आये हैं। ग्रामीण जीवन के आनन्द कै कल्पना शहर मे नाही कइ सका जात है। गाँव मे प्रकृति के असली रुप औ सौन्दर्य कै दर्शन कइ सका जात है। कवनो कवि महोदय गाँव कै सादा औ प्राकृतिक जीवन शैली औ शहर कै तड़कभड़क औ कृत्रिम जीवन शैली देखिकै सही कहें हैं,'ईश्वर गाँव कै रचना किहिन औ आदमी शहर कै।' गाँव मे नैसर्गिक सौन्दर्य, वहिँकै सरलता औ कृत्रिमता के अभाव हमरे लोग का यी मानैक मजबूर कइ देत है कि गाँव ईश्वर कै रचना होय। यहि मेर से काम मे सहकार्य औ सदभाव उल्लेख्य देखै के मिलत है गाँव मे। परिवार मे छोट औ बड़ा सब कै कार्यविभाजन रहत है। यहिसे परिवार के व्यवस्थापन मे विशेष सहयोग पहुचत है।

२. ग्रामीण जीवनका व्यवस्थित औ चलायमान बनावै के महत्त्वपूर्ण भुमिका खेले है वहिँकै ज्ञान, कौशल, प्रविधि औ हुनर। यी सब कै विकास कवनो सिद्धान्त पर आधारित न होइकै, जनजीवन के आवश्यकता के आधार पर विकसित भवा है। जवने मे स्थानीय स्रोत औ साधन कै भरपूर प्रयोग होत है। यिहै उलोग के स्वावलम्बी जीवन कै आधार होय। यहिसे जीवन सरल भवा है। दैनिक जीवन मे देखाय वाला समस्या समाधान करै के सहज होत है।

३. प्रविधि का दुसरे शब्द मे तकनीति कहि जात है। प्रविधि व्यावहारिक औ औद्योगिक कला सब औ प्रयुक्त विज्ञान से सम्बन्धित अध्ययन या विज्ञान कै समूह होय। अधिकतर आदमी प्रविधि औ अभियान्त्रिकी शब्द का पर्यायवाची के रूप मे प्रयोग करत हैं। जवन आदमी प्रविधि कै तालीम प्राप्त कइकै येका व्यवसाय के रूप मे लेत हैं, वही व्यक्ति का अभियन्ता कहि जात है। आदि काल से मानव प्रविधि कै प्रयोग करत आवा है। आधुनिक सभ्यता कै विकास

कइकै आज के स्थिति मे लावै के प्रविधि कै बहुतै बड़ा योगदान है । जवन समाज या राष्ट्र प्राविधिक रूप से शक्तिशाली है, ऊ सब समग्र रुप मे शक्तिशाली होत है । औ आर्थिक रुप से अउर से ढेर सक्षम होत हैं ।

४. समुदाय से अपने अनुभव से आर्जन औ संरक्षण कइ गवा अति महत्त्वपूर्ण ज्ञान, सीप, हुनर औ प्रविधि हमरेन के समुदाय मे पर्याप्त है । अभिलेख के रुप मे कहुँ नाही राखि गा है । यी परम्परागत रूप मे एक पुस्ता से दुसरे पुस्ता मे हस्तान्तरण होत है । उदहारण के खातिर तराई मे आन्ही-बयारि आवै वाला बाति कै संकेत, कुछ समय पहिलेन जानि जात है, वही बाति कै ज्ञान होय वाला स्थानीय व्यक्ति सुरक्षित स्थान पर पहुचै के अपने का सुरक्षित राखि सकत है । अइसै हरेक भूगोल मे रहै वाला आदमी अपने समुदाय मे प्रचलित स्थानीय ज्ञान कै प्रयोग से सुरक्षित होय सकत हैं ।

५. धातु औ माटी कै बर्तन बनावै, हथियार मे धार लगावै, जुता, स्थानीय पोसाक, माटी के बर्तन बनावै, झउवा, खाँचा, डाला, मउनी, सिपोला, बखार, पगही, बन्हना बनावै, खटिया-मचिया बिनै, काठ कै बर्तन, तमाम मेर कै बर्तन औ आकार निर्माण करै, बेना, कलाकृति सब निर्माण करै, कोंहडउरी, मेथौरी, तिलौरी, पापड़, अचार-खटाई, नदी मे मछरी मारै-पकरै, जंगली जानवर से बचैक जइसन महत्त्वपूर्ण ज्ञान, सीप, प्रविधि स्थानीय समुदाय पुस्तौंपुस्ता से संरक्षण औ हस्तान्तरण करत आये हैं । स्थानीय जडीबुटी कै प्रयोग, दुर्घटना से बचैक, प्रकृति कै संरक्षण करै, प्राकृतिक प्रकोप औ आन्ही बयारि, बाढ़ि, अरार से सुरक्षित रहैक, कृषि उत्पादन, पशुपालन, चरन संरक्षण, संगीत, गायन, नृत्य, खेल, चित्रकला, मूर्ति निर्माण, डिजाइन निर्माण करै लगायत कै बहुतै किसिम औ क्षेत्र कै ज्ञान-हुनर प्रविधि हमरेन के समुदाय मे है ।

६. समुदाय मे रहा सीप, ज्ञान औ प्रविधि कै प्रयोग खाना कै परिकार बनावै, सींक-मूज कै प्रयोग कइकै डलवा-मउनी, बेना आदि बनावै, पेटुवा-बनकसि से बाधी, पगही आदि बनावै, चरखा से सूत कातै, कपड़ा बिनै, ऊन कै टोपी, सुइटर, मोजा आदि बिनै, सिपी से तमाम कलात्मक खेलौना औ सजावट कै सामान बनावै, सिपी घिसिकै तरकारी, फल छिलैक काम मे प्रयोग, स्थानीय पेड़-पौधा, जड़िबुटी से दवाई बनावै जइसन जीवन के खातिर अति आवश्यक ज्ञान-हुनर युवा पुस्ता मे पुस्तान्तरण होय के आवश्यक है । परम्परागत रूप मे आर्जित ज्ञान, सीप, प्रविधि संरक्षण न कइ मिला तौ नवाँ पुस्ता का समस्या उत्पन्न होय सकत है । अइसन ज्ञान, हुनर औ प्रविधि युवा लोग के बीच हस्तान्तरण करैक अति आवश्यक है ।

७. जवन समाज आपन परम्परागत मूल्य, ज्ञान, हुनर, प्रविधि बचाइकै राखि सकत है औ दुसरेव समाज से सिखैक प्रयास करत है, परम्परागत ज्ञान का आधुनिकीकरण करतै गये पर वहीँ विकास आदि कै रास्ता बनत जात है । यहिसे समुदाय के लोगन मे आत्म-सम्मान औ गौरव

दुनौ बढत है । अपने समुदाय मे रहा ज्ञान, हुनर औ प्रविधि कै प्रयोग जब तक नाही बढत है । यहिमे लोग आपन पन नाही महशुश करिहैं तौ अइसन ज्ञान, हुनर औ प्रविधि कइसै युवा औ नवाँ पुस्ता तक पहुची ? यी तौ पहुचावै चुनौती बनिकै रहि जाई ।

८. आज के समय मे टिकावदार कै आवश्यकता सब ओर होय लाग है । टिकावदार विकास के खातिर, स्थानीय स्रोत-साधन संरक्षण प्रवर्द्धन करै के, विकास मे स्थानीय समुदाय कै सहभागिता वृद्धि करैक,स्थानीय समुदाय के विकास मे स्वामित्त्व कायम करैक औ समुदाय के विकास के खातिर स्थानीय ज्ञान, हुनर औ प्रविधि कै अत्याधिक महत्त्वपूर्ण है । ज्ञान व्यवस्थापन के दृष्टिउ से स्थानीय ज्ञान, हुनर औ प्रविधि संरक्षण करब आवश्यक है । यकरे खातिर स्थानीय परम्परागत ज्ञान मे विज्ञान खोजै, आधुनिक विज्ञान का स्थानीय ज्ञान, हुनर औ प्रविधि मे मिलावै, अन्य स्थान कै ज्ञान-सीप से तुलना कइकै देखै, अपने समाज कै, हुनर,ज्ञान, का परिमार्जन करै, परिष्कृत करै, प्रबोधीकरण करै के वतनै आवश्यक है । अइसन काम से समुदाय के आयस्रोत कै वृद्धि होत है । नवाँ पुस्ता मे अपने समुदाय से प्राप्त कइ गवा का ज्ञान, हुनर हस्तान्तरण होतै जात है । यकरे साथ साथ स्थानीय समुदाय स्वावलम्बी होयक सहयोग पहुचत है ।

९. ग्रामीण समुदाय के लोग अपने ज्ञान, सीप औ प्रविधि कै प्रयोग आवश्यक हरेक क्षेत्र मे करत रहें । खेतीपाती, पशुपालन, वृक्षारोपण, शिक्षा, खद्यान्न प्रसोधन, अन्नअनाज कै संरक्षण, बिया कै चयन, बनौषधि औ भण्डारण मे वोकर प्रयोग करत रहें । यकरे खातिर उलोग अपने समुदाय से औ आसपास के समुदाय से स्रोत औ साधन कै व्यवस्था करत रहें । यहिसे उलोग कै दैनिक सहज मात्र नाही होत रहा । समुदाय-समुदाय के सामाजिक सदभाव कायम होत रहा । जीवनचर्या से सम्बन्धित क्षेत्र मे सहयोग पहुचत रहा ।

१०. स्थानीय ज्ञान, हुनर औ प्रविधि के प्रयोग से लोग आत्मनिर्भर रहत हैं । जवने से जीवन सहज औ आत्मनिर्भर होत है । जनसमुदाय शान्तिप्रिय औ सरल स्वाभाव कै होत हैं । ऊ लोग कै व्यवसाय बहुत सरल किसिम कै होत है । उलोग का लम्मा चौड़ा शिक्षा या प्रशिक्षण कै आवश्यकता नाही होत है । स्थानीय लोगन कै अपनै किसिम कै पेशा औ व्यवसाय होत है । जवन बचपन से सब बच्चे अपने घरपरिवार मे कइ जाय वाला काम स्वतः जानि जात हैं । उलोग करतैकरत, काम सिखि जात हैं । यहिसे ज्ञान, सीप औ कला मौखिक रुप मे पुस्तान्तरण होत चला जात है । उदाहरण के खातिर माटी कै बर्तन बनावैक कुम्हार परिवार कहुँ सिखाय नाही जात हैं, उलोग अपनेन परिवार भितरै सिखत हैं । अइसै, दर्जी कै काम, लोहा कै काम, काठ कै काम, नाई(हजाम) कै काम करै वाले लोग मौखिक रुप मे सिखत जात हैं । यिहै बात कला के क्षेत्रव मे लागू होत है । ढकिया, मउनी, औ बेना बिनैक, कपड़ा कढाई करै के, सुइटर, मोजा, टोपी औ पन्जा बिनैक, कपड़ा, गोनरी, खटिया, मचिया, झउवा, खाँचि-

खाँचा बिनैक काम, रसरा, रसरी, बाधी, बन्हना, लगाम, गेराँव, नाधा, जाबा, जाल, छिंटा, टापा आदि सब बनावैक काम कै ज्ञान मौखिक रुप मे पुस्तान्तरण होत आय है । यहिमेर से अन्नअनाज कै प्रसोधन औ व्यवस्थापन जइसै : बिया धरैक, बिया कै चयन करैक, खाना कै तमाम परिकार बनावै के आदि । यहि मेर से संरक्षण करैक बहुत जरुरी है । अइसै कचूर, कुचिला, केतकी, भटकोइयाँ, भरभण्डा, केंवइयाँ, कुकरहुना, जटामासी, सन्तावरि, घिउकुमारी वहि क्षेत्र मे मिलै वाला जड़िबुटी होय । वहि मेर से बेल, अँवरा, हर्रा, बहेरा आदि के फलव कै बनौषधिउ मे प्रयोग होत है ।

११. यतनै भर नाही यकर प्रयोग भावि पुस्ता का समाजिक व्यवहार सिखावै मे महत्त्वपूर्ण भूमिका खेलत है । बच्चेन का अलग से अनुशासन नाही सिखावैक परत है । उलोग छोट्टै से काम मे व्यस्त होयक नाते अनुशासनहिनता पनपै नाही पावत है । वातावरण शुद्ध रहत है औ लोग शुद्ध-ताजा भोजन करैक पावत हैं ।

१२. ग्रामीण समुदाय मे रहा सीप, ज्ञान औ प्रविधि कै संरक्षण खातिर नेपाल सरकार ऐन बनाये है । स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन कै दफा ११ (ज) को १८ नम्बर मे स्थानीयस्तर कै शैक्षिक ज्ञान, हुनर औ प्रविधि कै संरक्षण, प्रवर्द्धन औ स्तरीकरण करैक दायित्व औ अधिकार स्थानीय तह, नगरपालिका औ गाँवपालिका का सउँपे है । विगत मे स्थानीय ज्ञान, हुनर औ प्रविधि संरक्षण के खातिर कवनो विशेष योजना नाही बनाये है । आयातीत ज्ञान, सीप से पुस्तौंपुस्ता निखारि गवा औ हस्तान्तरण होत आवा, अपनेन पुर्वज से आर्जन कइ गवा ज्ञान, सीप महत्त्वपूर्ण होत है । विकास के गति मे पुर्वज से आर्जन कइ गवा अमूल्य ज्ञान, सीप, प्रविधि हेराय जाई कि, अपनै ज्ञान-सीप दुसरे केहु से सिखैक परी कि कहै वाला डेर उत्पन्न होतै जात है । स्थानीय तह स्थानीय ज्ञान-सीप प्रविधि संकलन, संरक्षण, विकास, प्रयोग औ बौद्धिक सम्पत्ति के रुप मे दर्ता करावै, वृत्तचित्र निर्माण करै, वइसन ज्ञान-सीप-प्रविधि समेटि कै पुस्तक प्रकाशन करै, सञ्चारमाध्यम मे प्रचारप्रसार करै, विद्यार्थी औ युवा बीच वइसन ज्ञान, सीप, प्रविधि प्रयोग कै प्रतियोगिता करावै, बढिया करै वालेन का पुरस्कार कै व्यवस्था करैक काम स्थानीय तह कइ सकत है । युवा के खातिर स्थानीय ज्ञान, सीप औ प्रविधि के ज्ञाता लोग से तालीम सञ्चालन कराय सकत हैं । वइसन ज्ञान, सीप औ प्रविधि कै प्रदर्शनी कइकै युवा पुस्ता मे प्रवर्द्धन करैक काम कइ सका जात है ।

१३. गाँवपालिका औ नगरपालिका स्थानीय ज्ञान, सीप औ प्रविधि सङ्कलन, संरक्षण औ प्रवर्द्धन करैक अनुभवी व्यक्ति समेटिकै समिति निर्माण कइ सका जात है । विज्ञ लोग के सहयोग मे स्थानीय ज्ञान, सीप औ प्रविधि कै सङ्कलन, संरक्षण औ प्रवर्द्धन करै के चाहीँ । यहि सम्बन्ध मे नीति, योजना निर्माण करै, कार्ययोजना बनाइकै लागू करै के काम स्थानीय निकाय कइ सकत है । ज्ञान, सीप औ प्रविधि सङ्कलन, संरक्षण औ प्रवर्द्धन स्रोतकेन्द्र निर्माण करै कै

सम्भव रही । स्थानीय ज्ञान, सीप औ प्रविधि पर आधारित होइकै छोट उद्योग औ व्यवसाय सञ्चालन करै वालेन का ऋण सहयोग करै, कर या लगान छुट करै, उत्पादित वस्तु कै बजारीकरण मे सहयोग करै जइसन कामवो कइ सका जात है ।

१४. समुदाय पर आधारित ज्ञान, हुनर औ प्रविधि सब विज्ञान कै जननी होय । स्थानीय ज्ञान औ प्रविधि कै प्रयोग प्राकृतिक स्रोत कै उपयोग, संरक्षण औ व्यबस्थापन मे ज्यादा उपयोगी देखान है । पानी के स्रोत का संरक्षण करै वाला ज्ञान अद्वितीय है । जङ्गल के संरक्षण करै के स्थानीय लोग के पास अनेक उपाय है । स्थानीय समुदाय के ज्ञान पर आधारित सूचना प्रणाली, शिक्षा औ सार्वजनिक पहुँच का सहज बनावै वाला प्रविधि सब है । आज ऊ ज्ञान सब कहुँ लोप होय लाग है तौ कहुँ राज्य के संरक्षण के अभाव मे प्रतिबन्धित है ।

१५. औपचारिक शिक्षा मे स्थानीय ज्ञान, सीप औ प्रविधि समेटि सका जात है । वोकरे खातिर स्थानीय पाठ्यक्रम मे स्थानीय ज्ञान, सीप औ प्रविधि राखब उपयुक्त रही । समुदाय के ज्ञान कै सबल प्रयोग विशेष संस्कृति, औ भूगोल मे मात्र सम्भव रहत है । यी ज्ञान मौखिक प्रणाली मे निर्भर होयक नाते अइसन ज्ञान मिश्रित समाज मान्यता नाही दइ सकत है । समुदाय कै ज्ञान स्थिर प्रकृति कै नाही होत है लेकिन येका समय सापेक्ष सुधार कइ सका जात है ।

१६. स्थानीय ज्ञान, सीप औ प्रविधि हमरेन के पूर्खा कै निधि होय । यकर संरक्षण करब औ समय अनुसार परिमार्जित करब लइजायक आज कै आवश्यकता होय । दिनबदिन जीवन मे टिकावदार विकास कै आवश्यकता होत जात है । जीवन का सहज औ सरल बनावैक प्रविधि कै आवश्यकता होत है । स्थानीय प्रविधि वातावरणमैत्री होय के नाते यहिसे वातावरण संरक्षण मे सहयोग पहुचत है । जवने से पर्यावरण सन्तुलन मे रहत है । पारम्परिक हस्तकला मे व्यवसायिकता लाइकै समय सापेक्ष बनावत लइ जायक आज आवश्यक है ।

शब्दार्थ

नैसर्गिक : प्राकृतिक

ग्रामीण : गाँव घर, स्थानीय स्तर

अभिलेख : लेख, शिलालेख, दस्तावेज

प्रविधि : दैनिक जीवन का सहज बनावैक विज्ञान कै प्रयोग

पुस्तान्तरण : एक पुस्ता से दुसरे पुस्ता मे जायक प्रक्रिया

पारम्पारिक : परम्परा से चलि आवा

हस्तकला : हाथ से बनाय जाय वाला कला

कौशल : दक्षता, सीप, हुनर

परिमार्जन : समय अनुसार लाय गवा बदलाव

बजारीकरण : व्यवसायीकरण, अधिक उत्पादन औ व्यवस्थापन

उत्पादन : पैदा, उब्जनी

संरक्षण : बचाव

वातावरणमैत्री : अपने आसपास के वातावरण से अनुकुल होय के अवस्था

अभ्यास

सुनाई

१. पाठ कै पहिला औ दुसरा अनुच्छेद सुना जाय औ ठीक/बेठीक अलग किहा जाय ।

(क) ग्रामीण जीवन कै गुण केहु नाही गावत है ।

(ख) प्रविधि मानव जीवन के समस्याका समाधान करत है ।

(ग) ईश्वर शहर कै रचना किहिन है ।

(घ) प्रविधि से दैनिक काम काज सहज भवा है ।

(ङ) गाँव मे कृत्रिमता कै अभाव रहत है ।

२. पाठ कै तिसरा अनुच्छेद शिक्षक से सुना जाय औ नीचे दिहा प्रश्न कै उत्तर दिहा जाय ।

(क) प्रविधि का दुसरे शब्द मे काव कहि जात है ?

(ख) प्रविधि का केत कै समूह कहि सका जात है ?

(ग) कहिया से मानव जीवन मे प्रविधि कै प्रयोग होत है ?

(घ) आधुनिक सभ्यता मे कवन चिजि योगदान दिहे है ?

(ङ) कइसन समाज औ राष्ट्र सक्षम होत है ?

३. पाठ कै अठवाँ अनुच्छेद साथी से सुनिकै वोकर सार कहा जाय ।

बोलाई

४. नीचे दिहा शब्दन कै सही से उच्चारण करा जाय ।

प्रविधि, स्थानीय, कढ़ाई, हस्तकला, पारम्पारिक, प्राचिन, जीवनस्तर

५. नीचे दिहा शब्दन कै अर्थ कहा जाय ।

कढ़ाई, हस्तकला, पारम्पारिक, संरक्षण, मचिया, मउनी, कौशल, आधुनिक

६. आज के समय मे स्थानीय प्रविधि कै आवश्यकता काहे है ? अपने तर्क के द्वारा पुष्टि करा जाय ।

७. स्थानीय प्रविधि कै प्रयोग कवने-कवने क्षेत्र मे होत आय है ? आज के समय मे यकर संरक्षण के खातिर काव करैक जरुरी है ? बतावा जाय ।

पढाई

८. पाठ कै अनुच्छेद सब वसरीपारी पढा जाय औ हरेक अनुच्छेद पढैक केतना समय लाग, कहा जाय ?

९. पाठ के सतवाँ अनुच्छेद पढिकै सारांश बतावा जाय ।

१०. पाठ कै पँचवा औ छठवाँ अनुच्छेद पढिकै पाँच ठु बुँदा बनाइकै सुनावा जाय ।

११. नीचे दिहा अनुच्छेद कै सारांश लिखा जाय ।

संस्कृति कै दुसर अहम् पक्ष रहनसहन होय । रहनसहन भीतर खानपान, परस्पर कै व्यवहार, परम्परा आदि परत हैं । अवधी समुदाय मे मिश्रित जातजाति कै बसोबास होइयु कै अवधी परम्परा हाबी है । शकाहारी औ मिष्ठान्न प्रमुख भोजन, गरम हावापानी अनुसार कै हलका किसिम कै उज्जर वस्त्र औ पारस्पिरिक सद्भाव प्रधान जनजीवन, अवधी रहनसहन कै विशेषता होय । जीवनस्तर मे सादगी अवधी व्यवहार मे अपेक्षित रहत है । गाँव कै साधारण घर औ झोपडा-झोपडी, टटिहर, भितिहर आदि किसिम कै होत है । पक्की घर र.लम्मा गनै लायक रहत है । वहि मेर से देखनउसी मे आपन क्षमता अनुसार इँट, खपड़ा कै छत औ ढलान घरन कै बढोत्तरी है । दुकान पर खरिदबिक्रि गाँवै स्तरै के होत है । आवश्यकता अनुसार सामान अदलाबदला कै व्यवहार अबहिनो चलन मे है । अवधी जनजीवन सरल है लेकिन यहिमे तमाम किसिम कै अन्धविश्वास औ कुरीति जरि जमाये है । येका धीरेधीर हटावत लइ जायक आज कै आवश्यकता होय । यहर अबहिनौ समाजसुधारक औ अगुवा लोग का यहि महत्त्व के साथ ध्यान देयक चाहीँ । यतना सब होयक बादो अवधी जनजीवन

कै आदर्श रुप बहुतै मजबुत हैं। यदि विद्यमान कमी-कमजोरी हटाइकै अवधी समाज कै आदर्श रुप औ अवधी सामाजिक व्यवहार सम्पूर्ण मानव समाज का व्यवस्थित रुप मे स्थापित करैक आधारशिला बनि सकत है।

लिखाई

१२. नीचे दिहा शब्दन कै प्रयोग कइकै वाक्य बनावा जाय।

स्थानीय, कला, कौशल, कृषि, वातावरण, जीवन, सहज, सिंचाई, अन्न, उत्पादन, आर्थिक

१३. नीचे दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय।

(क) स्थानीय प्रविधि कै विकास कइसै होत गवा ?

(ख) स्थानीय प्रविधि कै प्रयोग कवने-कवने क्षेत्र मे होत रहा औ कइ जात है ?

(ग) प्रविधि से जीवन मे कइसन प्रभाव परत है ?

(घ) स्थानीय प्रविधि कै संरक्षण करब काहे आवश्यक है ?

(ङ) पाठ से मुख्य-मुख्य पाँच बुँदा कै टिपोट करा जाय ?

१४. स्थानीय प्रविधि कै विकास औ प्रवर्धन कइसै कइ सका जात है ? आपन तर्क सहित स्पष्ट करा जाय।

१५. व्याख्या किहा जाय।

(क) समुदाय पर आधारित ज्ञान, हुनर औ प्रविधि सब विज्ञान कै जननी होय।

(ख) विकास के गति मे पुर्वज से आर्जन कइ गवा अमूल्य ज्ञान, सीप, प्रविधि हेराय जाई कि, अपनै ज्ञान-सीप दुसरे केहु से सिखैक परी कि कहै वाला डेर उत्पन्न होतै जात है।

१६. स्थानीय प्रविधि कै उपयोगिता, व्यवसायिकता औ व्यवसायिक सम्भावना कइसन है ? चर्चा करा जाय।

व्याकरण

१७. नीचे दिहा अनुच्छेद मे प्रयोग भवा नाम पद का रेखाङ्कन करा जाय।

विक्रम संबत कै सुरुवात वैशाख महीना से होत है। अर्थात वैशाख यहि संबत कै पहिला महिना होय। अवधी समुदाय मे वैशाख महीना के पहिला दिन का सतुवान कहि जात है कहुँ कहुँ। यहि अपने जगह औ जाति अनुसार विभिन्न किसिम के नवाँ अनाज कै सुतवा

बनाय जात है । रब्बी फसल कै कटाई-दवाईं नयाँ संबत शुरु होय से पहिले लगभग-लगभग सब लोग पूरा कइ लेत है । येका हमरे लोग के हियाँ नवाँ वर्ष के रुप मे हर्षोल्लास के साथ स्वागत कइ जात है । सब लोग का अवधी भाषा यहि पृष्ठ के ओर से हार्दिक मंगलमय शुभकामना ! नेपाल मे विक्रम संबत का अपने दैनिक जीवन के तथ्यांक व्यवस्थित राखैक प्रयोग किहा जात है । यहि संबत कै सुरुवात के किहिस, यहि पहिले कवन संबत चलत रहै। आज के नवाँ पुस्ता मे कौतुहलता पयदा किहे है । विक्रम संबत जब प्रारम्भ नाही भवा रहा, तब युधिष्ठिर संबत, कलियुग संबत औ सप्तर्षि संबत प्रचलन मे रहा तथ्य सब मिलत है । सप्तर्षि संबत कै शुरुआत ३०७६ ईसवी पूर्व भवा रहै । जबकी कलियुग संबत कै सुरुवात ३१०२ ईसवी पूर्व भवा रहै । यहि दौरान युधिष्ठिर संबतव कै प्रारंभ भवा रहा । यी सब संबत कै सुरुवात चैत्र प्रतिपदा से होत रहै । लेकिन अन्य बात स्पष्ट नाही रहा । विक्रम संबत मे वार, नक्षत्र औ तिथिन कै स्पष्टीकरण कइ गै । यहिमे पंचांग के बाति के साथ साथ बृहस्पति वर्ष के गणना का समेत शामिल कइ गै ।

१८. रेखाङ्कित शब्दन से सर्वनाम, विशेषण औ क्रियापद अलग किहा जाय ।

तराई-मधेश मे मुनगा, सहिजन औ सितलचिनी, नाँव से जानि जाय वाला यी वृक्ष चमत्कारी वनस्पति के रुप मे है । यी पौधा सब प्राणी के खातिर बहुतै उपयोगी है । प्राचीन काल मे ऋषिमुनि लोग येका जीवन बुटी के रुप मे वर्णन किहे हैं । यी धार्मिक ग्रन्थ सब मे उल्लेख भवा मिलत है । सहिजन कै फूल, पाता, फल लगायत सब चीज जीवन मे उपयोगी होत है । येका अङ्ग्रेजी मे मोरिङ्गा ओलिफेरा कहि जात है । सहिजन का संसार भर मे चमत्कारी पौधा के रुप मे जानि जात है । येका विदेश मे पोषण के विकल्प के रुप मे प्रयोग करत हैं । यकर क्याप्सुल अमेरिका,फ्रान्स, क्यानडा जइसन देश मे महँगा दाम मे बिकात है । यकरे बिया कै तेल केश मे लगाये से केश कै फुनगी नाही फुटत है औ केश नरम होइकै रेश्मी होय जात है । जवने से येका सौन्दर्य प्रसाधनो के रुप मे प्रयोग कइ जात है । यकर फल पानी शुद्ध करैक काम मे प्रयोग कइ जात है । यकरे छाल से शरीर मे होय वाला तमाम किसिम कै चर्म रोग जइसैः दाद, खाज, खजुली आदि मे पिसिकै लगाये से फायदा होत है । यकर पाता रोज-रोज खाली पेट मे सेवन करत के पेट सम्बन्धी दीर्घ रोग सब ठीक होय जात है । यकर प्रयोग चेहरा पर चमक लावैक साथ साथ छाँहियाँ औ मुँहासा मे उपयोगी है । अनुसन्धानकर्ता डा.स्टोन के अनुसार यी ३०० से ज्यादा रोग के निवारण मे सहयोगी है । यहिमे मांसाहारी खाना से ढेरै पोषक तत्त्व मिलत है अर्थात शरीर के खातिर आवश्यक पोषण तत्त्व यहिमे रहत है । यी ज्यादातर बीमारी औ शारीरिक समस्या मे बहुत उपयोगी है ।

१९. नीचे दिहा अनुच्छेद से नाम, सर्वनाम, विशेषण औ क्रियापद अलग किहा जाय ।

एक नवयुवक रहा । एक छोट गाँव कै अच्छा खाता पिता घर कै लेकिन बहुतै सीधा-सादा

औ सरल स्वभाव कै रहा । बहुतै मिलनसारो रहा ।

एक दिन वोकर मुलाक़ात अपनेन उमिर के एक नवयुवक से भवा । बातिचित के सिलसिला मे दुनौ दोस्त बनि गयें । दुनौ यक्कै सिलस्वभाव कै रहें । दुनौ मे यक्कै बाति कै अन्तर रहा कि दुसर वाला नवयुवक बहुतै गरीब घर कै रहा । औ वोकरे घरे अक्सर दुनौ जुनि कै खायक जुटै के मुस्किल होय जात रहा । बहुत मुस्किल से होय पावत रहा । दुसर अन्तर अउर काव रहा कि एक जन्म से दृष्टि बिहिन रहा । ऊ कब्बो रोशनी नाही देखे रहा । ऊ दुनिया का अपनेन मेर से बुझत रहा ।

दिन बितत जात के ऊ दुनौ कै दोस्ती धीरे-धीरे प्रगाढ़ होत गवा । बराबर भेट मुलाकात होय लाग ।

एक दिन नवयुवक अपने नेत्रहीन मित्र का अपने घरे खाना खायक नेवता दिहिस । दुसर वाला वोकरे प्रस्ताव का खुशी खुशी स्वीकार कइ लिहिस ।

दोस्त पहली मरतवा खाना खाय रहें । अच्छा मेजवान के जेस ऊ कवनो कसर नाही छोड़िस । तरह-तरह कै व्यञ्जन औ पकवान बनुवाइस ।

दुनौ मिलिकै मजा से खाना खाइन । नेत्रहीन दोस्त का बहुत आनन्द आय । एक तू ऊ पहिल दफी अपने जीवन मे अइसन औ यतना स्वादिष्ट भोजन कै स्वाद लिहे रहा औ दुसरे ओर अइसन कइयु चिजि रहा जवन ऊ अपने जीवन मे पहिले कब्बौ नाही खाये रहा । यहिमे खीर भी सामिल रहा । ऊ खीर खात-खात ऊ पुछिस, "मित्र, यी कवन व्यञ्जन होय, बड़ा स्वादिष्ट लागत है ।" मित्र खुश भवा । ऊ उत्साह से बताइस, "यी खीर होय ।"

२०. पाठ कै दुसरा, तीसरा औ चउथा अनुच्छेद मे प्रयोग भवा नाम, सर्वनाम, विशेषण औ क्रियापद शब्द पहिचान कइकै अलग-अलग तालिका मे लिखा जाय ।

२१. सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) निचे दिहा विषय पर निबन्ध लिखै के खातिर आवश्यक बुँदा काव-काव होय सकत है ? कक्षा मे छलफल कइकै निष्कर्ष पर पहुचा जाय औ बुँदा के आधार २०० शब्द भीतरै निबन्ध लिखा जाय ।

(ख) स्थानीय पेशा-व्यवसाय काव काव होय जानकारी लइकै वोकर उपोगिता के बारे मे लिखा जाय ।

पाठ
५

प्रवासी जिन्दगी माटी कै मोह

- भगवानदास यादव

(विगत १३ साल से राम कुमार सउदिया के एक कम्पनी मे काम करत हैं। काम करैवाले जगही पर भवा एक हादशा उन्है हिलाय कै राखि दिहिस है। जाड़ा कै समय, निशादिन से जल्दियै वैं अपने कमरा मे लउटि आवत हैं। खाना बनावत हैं, खात हैं, लेकिन अनाज नाही धसत है। बारम्बार फोन आवत है, सब का सम्झावत बतावत हैरान होइ जात हैं। दिन भरे कै थकामादा आदमी, आराम करै के सोंचत हैं। एक छिन घर के परिवारन से बातचीत करै के बाद गऱ्हु मन लइकै बिछौना पर लेटि जात हैं।)

रात ११ बजे, अलजुबेल

आपन कमरा, सउदिया

१. राम कुमार,(रजाई ओढ़ि कै) आदमी के जिन्दगी कै कवन भरोसा है। आपन गाँव परिवार छोड़िकै परदेश मे आवो, मुस्किल से तमाम मुसिबत झेलिकै रुपया कमाव.....आज साथे कोई नाय है। भैरहवा से काठमाण्डू या रियाध से अलजुबेल तक। बेचारे निर्गुन कै कच्च से परान निकरि गै। आज काव बीतत होई, वकरे मेहरारू औ लरिकन पर। महतारी बाप केतना रोवत होइहैं। रुपया कमाय कै बेटवा आई तौ सुख शान्ति से दिन बिती आश करै के समय, बकसा मइहा लहास जाय वाला होइ गा, आज।

(राम कुमार कै मन उद्वेलित है) केतना सुन्नर है यी मानव जीवन, जेतना सुन्नर है, वतनै जोखिम से भरा है। तनिक भर सावधानी हटा कि जिन्दगी से हाथ धोवै के परत है। आज निर्गुन अपनेन घरे होते, तौ यी हादशा नाही होत।

२. हमरौ जिन्दगी भला काव जिन्दगी है। डिउटी के उपर डिउटी ! दुसरेक हाथे बिकान जिन्दगी ! अपने हिसाबे कुछु नाय है। कब्बो सुबह ७ बजे से लइकै ३ बजे तक, कब्बो दुपहरे ३ बजे से रात ११ बजे तक तौ कब्बो रात ११ बजे से सुबह ७ बजे तक। बस यिहै होय जिन्दगी ! आज १३ साल होइ गै, यहि माया के नगरी मे।

केतना बड़वार अरमान रहा, वतना घरी ! बिदेश जाय के कमाय कै लइबै औ बालबच्चेन कइहाँ बढ़िया से शिक्षा देबै । रहै खातिर बढ़िया कै घर बनाइब ! दुइ चार ठउर घरुही खरीदब । महतारी बाप कै अधुरा अरमान पूरा करब । प्यारी मेहरारू का तौ गहना से सजाय देब । बकिर साँचा जेस कहाँ होत है । पहिले कै पाँच साल तक काम सिखै औ रिन कर्जा तिरही मे, सारा रुपया ओराय गवा । यही बीचे कइउ बार कम्पनी बन्द होइ गा । (राम कुमार पहिल दफा सउदिया आवत के दिन याद करत है)

३. आँखि मे आँशु भरिकै काठमाण्डू विमानस्थल मे बिदा करै वाली मेहरारू कै याद ताजै है अबहीं, आदमी शादी बियाह करत हैं कि साथे-साथे जिन्दगी बितावा जाई, सुख दुख साथे बितावा जाई । लकिन हाय रे हमार तकदीर ! साल के सरकारी राष्ट्रिय बिदौ से कम दिन तक हम मेहरारू बच्चेन के साथे रहैक पायन, आजतक । हाँ, रोमाञ्चक जरूर रहा विदेशी सफर ! पहिले तौ जहाज, हवाई जहाज खाली आसमान मे उड़त देखे रहेन । औ समुन्द्र, गगनचुम्बी इमारत तौ खाली किताब औ सिनेमा मइहाँ देखे रहेन । त्रिभुवन अन्तर्राष्ट्रिय बिमानस्थल से उड़ा विमान से सउदिया के दमाम बिमानस्थल पे उतरै के बाद, पहिल दफा नवाँ संसार देखेन ।

काम कै खोजी । फिर अलजुबेल औद्योगिक क्षेत्र मे ५२ डिग्री सेन्टिग्रेट मे किहा गा काम ! बहावा पसीना ! दुःख, अपमान । परदेशी होय के नाते बिदेश मे भवा श्रम शोषण, केसे कहै । सब सहिकै रहै के परा । आज हमार मन काहे ज्यादा छटपटात है । निदियो नाय आवत है । (करवट बदलत हैं)

४. निर्गुन तौ हम से जवानै रहा । हमरे आगे कै लड़िका, पश्चिम नेपाल कै एक पड़ोसी जिला कै लाल । हमलोग कै भाषाभेष मिलैक नाते नजदीकी बढ़ा रहा । यहि परदेशी भुमी मे आपन मातृभाषा बोलै वाला आदमी भगवान नेहाइत रहत हैं । मसीन चलावैक दफा भवा दुर्घटना मे ऊ सदा के खातिर, हम्मन से दूर चला गै । वइसै तो, सगरिउ जिम्मा कम्पनी लिहे है । लेकिन अनायासै परदेश मे जान तौ चलै गा, ना । फरक उमिर के बादौ, यक्कै साथे कम्पनी मे काम करै के नाते, ऊ हमार बढ़िया सङहरिया रहा । एक दफा छुटटी मे, फलापीन सहर साथेन घुमै गवा गा रहा । नीला समुन्द्र के किनारे बालुरेत मे, गगनचुम्बी महलन से घिरा शहर के सुन्दर पार्क मे बइठि कै, केतना सुन्दर सुन्दर सपना सजावा गा रहा, हमलोग । किँग फाह फाउन्टेन से निकरा निर्मल धारा निहाइत जीवन चम्कावै कै चाह रहा । मसमाक किला के इतिहास जइसै अपनौ इतिहास बनावै कै लालसा रहा । बाल बच्चे मेहरारू लरिकन कै खुसहाल जीवन । सब व्यर्थ होई गा, आज । जीवन तौ केवल एक पानी कै बुल्ला है, कब फुटि जाय, पतै नाही चलत । (राम कुमार लम्मा साँस खीचत हैं)

५. सउदिया के चकाचौँध अलजुबेल शहर कै यी अन्हियार कोठरी नेहाइत आज हमरे मनमे अन्हियारी छावा है । रहि रहिकै हमार मन घबड़ात है, आज । अरब के अलजुबेल, दमाम,

अलखोबर, अतिफ, फलापिन से लइकै रियाद तक मे तेरह सालि गुजरि गा । तेल बेचै वाला यी खाड़ी मुलुक अपने नीति से दुनिया हिलाये है, सुन्नर मनोरम रंगाबिरंगा गगनचुम्बी शहर बसाये है । लेकिन तकदिर बेचै वाले...? जिन्दगी कै सगरिउ ऊर्जाशिल समय बिदेशी जमीन पर बीति गवा । आज अपने हाथ मे जाडर घटि गा है । नाड़ी मे बल घटि गा है । अब नरई से डाभी होय के हइयै नाय है । (राम कुमार सोवैक प्रयत्न करत हैं, बिछौना के किनारे लोटा मइहाँ धरा पानी पीयत हैं । घड़ी देखत हैं, रात कै बारह बजि गा है ।)

६. हम्मै मिला तौ आखिर काव ? हम जिन्दगी मे काव किहेन ? भगवान कै आर्शिवाद कहै चाहे महतारी बाप कै रेखदेख, होय के वजह से लड़के नाइ बिगड़े । बिटियवो नाई बिगड़ी, यिहै बड़ी बात है । दर्जन लवन्ना है पड़ोसी समुदाय के जगह गाँव मे, मेहरारु मर्द के पइसा पे राज करत ही । केतने तौ दूसर बियाह कइ लेत हीं औ बहुत कै लरिके-बच्चे लागु पदार्थ कै प्रयोग करै लागत हैं । परदेश मे कमावा पइसा सब पानी होई जात है । पिता के अभाव मे बच्चे न अच्छा शिक्षा पावत हैं, न अच्छा संस्कार । सम्पति तौ हमरेन गाँव कै जिमदार लोगन के केतना रहा, केतना । आसपास गाँव मे उनकै नाँव रहा । लेकिन, देखतै देखत उनकै बेटवा कब्बा मारिस यस करिस कि सगरिउ सम्पत्ति नाश कै दिहिस । काल्हि कै करोड़पति आज सड़कपति होय गवा ।

यी, सम्पति कै लालसा करब बेकारै है । बाल बच्चे सही न निकरे तौ यतना मेहनत मजुरी कइकै कमावा सम्पत्ति क्षणभर मे धूरि मे मिलि जात है ।....यिहाँ से तो, गाँव घर मे कवनो उद्यम रोजगार मिलै तौ अपने घरही परिवार के साथे रहब बढ़िया । (राम कुमार करवट बदलत हैं)

७. धत्तेरिका अब तौ सुतैक परा । हे भगवान ! अब तौ नीद आय जाय, सोवै के परा । सुबेरे टेम से न उठि पायेन तौ मुसीबत होइ जाई । तइकै, वहु सुबेरेन, निर्गुन के लहासि का नेपाल पहुँचावै मे हमरे तरफ से करै वाला तमाम काम सब करहिक बाकी हैं । म्यानेजर से लइकै राजदूतावास, अपने घर के परिवार से लइकै निर्गुन के घर परिवार तक से समन्वय करैक है ।

(राम कुमार के मोबाइल के म्यासेन्जर मे लगातार म्यासेज कै आवाज आवत है, कुछ का वैं जवाफ देत हैं, कुछ का वइसै छोड़ि देत हैं)

परदेश मे यिहै मोबाइल तौ एक साथी है, जवन हमलोग का अपने दुनिया से जोड़िकै राखे है । हम्मै ऊ दिन याद है जब हमार काका पंजाब मे नोकरी करत रहें, तब्बै महीना दिन मे सनेश मिलत रहा । आज दुनिया केतना बदलि गा है लेकिन मानवीय मूल्य, सामाजिक दायित्त्व निहइतै आदमी मे नाय देखात है । मेहरारू कम्पनी छोड़िके आवो कहत ही । गलतौ तौ नाय कहत ही लेकिन उहाँ रहिकै करबै काव ? यिहाँ सिखा काम वहीं करहिक नाही मिली । अपनही देश मे कल कारखाना रहत तौ हिँया काहे आवैक परत ? लेकिन कहाँ तक हिँयै पसिना बहावै । कवनो दिन हमहु कइहाँ कहूँ निर्गुनै कै नियत न भोगयक परै ?

८. अवध भूमि कै हमरे आदमी । जहाँ जन्म लिहेन, उहाँ कर्म नाय पायेन तौ काव भवा ? कम से कम अपने देश मे मरैक मिला, तब्बो जिन्दगी से कवनो गिलासिकवा न रही । (करवट बदलत है)

ओहो ! आज यी मन काहे यतना छटपटात है । बेचारा निर्गुन घरे रहत तब्बो । लेकिन बड़ा परिवार कमाय वाले कोइ नाय । कहत हैं, सौ कै लाठी एक कै बोझ । सब कै जिम्मेदारी एक्कै आदमी कइहाँ उठावै के परे पय, सहज कइसै होई ? चारिउ ओर से घिरि जाय के नाते जिन्दगी बोझ होई गा । रिन, कर्जा, रोग, ब्यधा, कष्ट औ पीड़ा सब गरीबै कइहाँ सहै के परत है । परिवार मे कमाय वाले अउरो सदस्य रहते तौ सायद आज निर्गुन के परिवार कइहाँ यी दिन न देखै के परत कर्जा के दबाब मइहाँ सइगर पइसा कमाय के लालसा से जोखिमपूर्ण काम करब, जीवन से हाथ धोवै कै कारण बना । हाय रे जिन्दगी ! ऊ परिवार कइसै बरदास्त करी यी सदमा ! (रामकुमार आह भरत है, निर्गुन कइहाँ याद करत खन वनके आँखि से आँशु बहै लागत है, वैं रजाई के खोल मे आँशु पोंछि लेत हैं औ अपने मन कइहाँ सम्झावत हैं)

९. बकिर नाही । दुर्घटना केहू से पूछि कै नाही आवत है । हर कोई के साथे यी घटि सकत है । बाकी जिन्दगी अब हमहु अपने बाल बच्चन के साथे बिताइब । बच्चे उहौ सग्यान होय लागें । उनहु लोगन का सही अभिभावकत्व कै जरुरत है । सरकार बिदेश से लउटै वालेन का कर्जा अनुदान सहयोग देत है कहिकै बिटियवा कहत रही । अनुदान सहयोग रकम लइकै कवनो उद्यम ब्यापार करब । यहि बिदेशी भुमी मे अब हम पसीना नाही बहाइब । कहत हैं न माया मिलि न राम ! हम अब अपने देश लउटब । एकदम, जउन परी देखा जाई ! अब हम अपनही देश मे, आपन पसीना बहाइब । वहीं कवनौ हुनर सिखिकै कुछ काम करब ! चाहे व्यवसायिक नयाँ ढंगसे, खेतीपाती, पशुपालन, या अउर कवनो पेशा-व्यवसाय करबै .....! (दृढ निश्चय के साथ रामकुमार गहिर सोंच मे डूबि जात हैं) ।

शब्दार्थ

हादशा : घटना

मुसीबत : परेसानी, समस्या

प्रवासी : परदेश मे रहैवाला

परदेश : विदेश

डाभी : अंकुर, अँखुवा

बुल्ला : फेना, बुलबुला

लवन्ना : उदाहरण, लवनिया

राजदूतावास : एक राज्य के ओर से दुसरे राज्य मे रहा कुटनीतकि निकाय

दायित्त्व : जिम्मेवारी, कर्तव्य

बरदास्त : सह्य, सहन

लालसा : इच्छा, चाहना

दुर्घटना : दुखदायी घटना,

सग्यान : बालिक, बड़वार, सयान

अनुदान : सरकारी सहयोग

अभ्यास

सुनाई

१. पाठ कै पहिला अनुच्छेद सुना जाय औ रामकुमार केकरे बारे मे सोचत हैं, बतावा जाय ।

२. पाठ के दुसरे अनुच्छेद का सुना जाय औ नीचे दिहा प्रश्न कै जबाब दिहा जाय ।

(क) रामकुमार का आपन जिन्दगी कइसन लागत है ?

(ख) रामकुमार कै दिनचर्या कइसै बितत है ?

(ग) काव काव करै का सोचिकै वन विदेश गै रहें ?

(घ) रामकुमार कै पहिला पाँच साल काव काव करतै बीति गवा ?

३. पाठ के तिसरे अनुच्छेद कै इमला लिखा जाय ।

बोलाई

४. नीचे दिहा शब्द का शुद्ध से उच्चारण किहा जाय ।

बेचारा, हादशा, मुसिबत, प्रवासी, नियत, परदेश, मेहरारु, डाभी, बुज्जा, लवन्ना, राजदूतावास

५. दिहा शब्द का वाक्य मे प्रयोग कइकै सुनावा जाय ।

घरुही, अधुरा, जिन्दगी, सग्याान, कर्जा, मानवीय, मूल्य, सगरिउ,

६. 'अब हम अपने देश मे आपन पसीना बहाइब । अपने देशे लउटब । वहीँ हुनर सिखिकै कुछ करब !' कहै वाला रामकुमार के कहनाव से आप सहमत हौ कि असहमत ? तर्क सहित जबाफ दिहा जाय ।

७. "विदेश जाय से बढ़िया अपनही देश मे कवनो हुनर सिखिकै काम करै के चाहीं, येसे देश मे रोजगारी कै अवसर सिर्जित होई साथै देश कै अर्थतन्त्रौ मजबूत होई", विषयपर आधारित रहिकै कक्षा मे छलफल करा जाय ।

पढाई

८. पाठ के एक एक अनुच्छेद का वसरीपारी से पढ़ा जाय ।

९. पाठ कै अठवाँ अनुच्छेद पढ़ा जाय औ रामकुमार कवन कवन बाति याद कइकै दुखी होत हैं ? सूची बनावा जाय ।

१०. पाठ कै नववाँ अनुच्छेद मे रामकुमार अपने का कइसै सम्झावत हैं, वर्णन करा जाय ?

लिखाई

११. नीचे दिहा प्रश्न कै संक्षिप्त उत्तर दिहा जाय ।

(क) रामकुमार का विदेश गये केतना साल होय चुका है ?

(ख) पाठ मे रामकुमार कवने साथी के बारे मे चर्चा किहे है ?

(ग) विदेश कै कमाई रामकुमार का कइसन लागत है ?

(घ) अब ऊ काहे घरै लउटै चाहत हैं ?

(ङ) पाठ मे रामकुमार कइसन भाव व्यक्त किहे है ?

१२. भाव विस्तार करा जाय

(क) पिता के अभाव मे बच्चे न अच्छा शिक्षा पावत हैं न अच्छा संस्कार ।

(ख) चारिउ ओर से घिरि जाय के बाद जिन्दगी बोझ होइ गा है । रिन, कर्जा, रोग, ब्यधि, कष्ट औ पीड़ा सब गरिबै कइहाँ सहै के परत है ।

(ग) अब हम अपने देश मे आपन पसीना बहाइब । अपने देश का लउटब ।

१३. पाठ कै पात्र रामकुमार के विचार से आप सहमत या असहमत काव होवा जात है ? वकरे बारे मे एक अनुच्छेद लिखा जाय ।

१४. यहि पाठ कै शीर्षक 'प्रवासी जिन्दगी माटी कै मोह' केतना उपयुक्त है ? तर्क सहित आपन धारणा प्रस्तुत किहा जाय ।

व्याकरण

१५. नीचे तालिका मे दिहा मूल शब्द औ व्युत्पन्न शब्दन कै प्रयोग कइकै एक-एक ठु वाक्य बनावा जाय ।

मुल शब्द	व्युत्पन्न शब्द
१. सुन्दर, काल, देश	अतिसुन्दर, अकाल, स्वदेश
२. रस, भाव, कर्म	रसदार, अभाव, कुकर्म
३.लह, पानी, झक	लहलहात, पानीवानी, झकझोर

१६. नीचे दिहा व्युतपन्न शब्द से मूल शब्द अलग किहा जाय ।

अज्ञान, उपस्थिती, दुरुपयोग, नालायक, घरैया, पढाई, सहरिया, विहार, सादर, अवधी, आसपास, मीठतीत, चटापटा ।

१७. पाठ कै नववाँ औ दशवाँ अनुच्छेद से पाँच ठु व्युत्पन्न शब्द पहिचान कइकै वोकर मूल शब्द लिखा जाय ।

१८. सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) समाज मे रहा नकारात्मक मान्यता स्थापित करै वाले रीतिरिवाज विषय पर मनोवाद लिखा जाय ।

(ख) युवा लोग वैदेशिक रोजगार मे जात के देश औ समाज का कइसन फायदा औ नोक्सान होत है जानकारी सङ्कलन कइकै प्रतिवेदन तयार करा जाय ।

पाठ
६

कार्यालयीय चिठ्ठी

पत्र संख्या : ०७७/७८

चलानी नं. २१

मिति : २०७७।११।०३

श्रीमान नगरपालिका प्रमुख जी
महाराजगञ्ज नगरपालिका कै कार्यालय
महाराजगञ्ज, कपिलवस्तु ।

विषय : मातृभाषा मे पठनपाठन शुरु करावै कै दिशा निर्देशन सम्बन्ध मे ।

महोदय,

उपरोक्त सम्बन्ध मे हम्मन के समाज के शिक्षा कै स्तर अन्य समाज के तुलना मे कम है । यही किसिम से हमरे यिहाँ प्राथमिक स्तरौ पर शिक्षा देय कै माध्यम भाषा नेपाली होय । जवने का हमरे यिहाँ कै बच्चे विद्यालय मे आवै से पहिले बोलै जानै के तो दूर, सुने तक नाही रहत हैं । यही नाते हमरे यिहाँ कै बच्चे, विद्यालय के सुरुवाती दिनै मे पढै के प्रति अरुचि देखावै लागत हैं । यही क्रम मे अधिकांश लोग पढ़ाई छोड़ि देत हैं । बाकी बचे बच्चे मे से अधिकांश लोग रटिकै पास करै कै आदत बनाय लेत हैं । यहि किसिम से पास करै वाले मे से अधिकांश लोगन कै मानसिक विकास न होइ पावै के नाते उहौ लोग आगे जाय कै पढ़ाई कै स्तर स्थापित करै मे असफल होइ जात हैं औ उहौ लोग पढ़ाई छोड़ि देत हैं । उच्च तह तक आवत आवत बहुत कम लोग बचत है । यइसनौ लोग हमरे देश कै लोकसेवा आयोग आदि के परीक्षा मे अपने का सफल नाही बनाय पावत हैं ।

यही नाते गैर नेपाली एकभाषी समाज के बच्चन मे विद्यमान यही समस्या का हटावै खातिर नेपाल सरकार अपने यिहाँ के प्रारम्भिक विद्यालय मे मातृभाषा मे शिक्षा देय कै कार्यक्रम आगे लाय है । जवने के मुख्य उद्देश्य यइसने समुदाय के बच्चेन का मातृभाषा के माध्यम से विद्यालय से जोड़ै औ वनके मातृभाषा का प्रयोग कइकै नेपाली औ अङग्रेजी मे सक्षम बनाइब होय । यही क्रम मे भवा अलग अलग अध्ययनौ मे यी देखाय परा है कि अपने मातृभाषा मे पढ़ै वाले बालबालिकन कै शिक्षण सिखाई टिकाउदार होत है ।

यही के साथे कवनो व्यक्ति, या समुदाय कै वास्तविक पहिचान भाषा होत है । यी सब लोप होयक मतलब स्थानीय टिकावदार विकास मे बाधा पहुचब होय । यही से यहि समस्यन कै समाधान हेतु यहि नगरपालिका अन्तरगत कै शिक्षा समन्वय इकाई मार्फत यहि नगर क्षेत्र के भीतर रहा विद्यालय में, निचले कक्षन मे माध्यम के रूप मे औ उप्पर वाले कक्षन मे विषय के रूप मे अवधी भाषा मे पठनपाठन सञ्चालन सम्बन्धी आवश्यक दिशानिर्देशन के खातिर हार्दिक अनुरोध किहा जात है ।

भवदीय
भाषिक मानव अधिकार समाज
नेपाल, कपिलवस्तु शाखा ।

लिफाफा कै नमूना

प्रेषक
भाषिक मानव अधिकार समाज नेपाल,
कपिलवस्तु शाखा ।

प्रापक
श्रीमान नगरपालिका प्रमुख जी
महाराजगञ्ज नगरपालिका कै कार्यालय
महाराजगञ्ज, कपिलवस्तु ।

शब्दार्थ

नगरपालिका : एक स्थानीय निकाय
प्रमुख : कवनो कार्यालय या निकाय कै उच्चपदस्थ व्यक्ति
कार्यालय : अड्डा, सरकारी कामकाज होय वाला जगह
पहिचान : चिनारी, परिचय
सिखाई : सिखैक काम
टिकावदार : स्थायी, दिगो
मातृभाषा : बालबालिका पहिला भाषा
हेतु : खातिर, करती, उद्देश्य से
समन्वय : सहकार्य, सहयोग
इकाई : काम करैवाला छोट निकाय
अनुरोध : प्रार्थना, आग्रश अभीष्ट इच्छा

अभ्यास

सुनाई

१. पाठ का सुनिकै इमला लिखा जाय ।

२. पाठ कै चिठ्ठी शिक्षक से सुना जाय औ पुछि गवा सवाल कै उत्तर दिहा जाय ।

(क) चिठ्ठी के केका लिखे है ?

(ख) कार्यालय सम्बन्धी चिठ्ठी लिखत के का सम्बोधन कइ गा है ।

(ग) यी चिठ्ठी कवने विषय पर लिखा गा है ?

(घ) स्थानीय पालिका मे शिक्षा सम्बन्धी काम करै वाले इकाई का काव कहा जात है ?

(ङ) 'विस्तार' औ 'प्रवर्द्धन' शब्द कै अर्थ काव होय ?

३. पाठ साथी का पढै के कहिकै ध्यान से सुना जाय औ ठीक/बेठीक अलग किहा जाय ।

(क) भाषा व्यक्ति औ समुदाय कै पहिचान नाही होय ।

(ख) भाषा कै विकास औ विस्तार नाही भवा तौ वहीँ समुदाय मे रहा ज्ञान, कला, सीप औ प्रविधि लोप होय जाई ।

(ग) मातृभाषा मे पढत के बालबालिका कै शिक्षण सिखाई टिकावदार होत है ।

(घ) भाषा कै प्रयोग शिक्षा मे होब जरुरी नाही है ।

(ङ) शिक्षा समन्वय इकाई शिक्षा सम्बन्धी काम देखत है ।

बोलाई

४. नीचे दिहा शब्दन का शुद्ध से उच्चारण करा जाय ।

मातृभाषा, प्रवर्द्धन, समुदाय, पहिचान, माध्यम, अनुरोध

५. अपने मातृभाषा के बारे मे कक्षा मे सुनावा जाय ।

६. मातृभाषा बोलीचाली कै खाली माध्यम भर नाही होय, यी वही समुदाय मे ज्ञान, सीप, कला, दक्षता औ प्रविधि कै हस्तान्तरण कै काम करत है, कक्षा मे समूह बनाइकै छलफल करा जाय औ अपने अपने समूह के ओर से सुनावा जाय ।

७. विद्यार्थी का कार्यालयीय चिठ्ठी पढै के परै वाला कारण के बारे मे शिक्षक से छलफल किहा जाय औ निष्कर्ष पर पहुचा जाय ।

८. आप अबहिन तक कइसन-कइसन चिठ्ठी लिखा गा है, कक्षा मे सुनावा जाय ।

पढाई

९. पाठ वसरीपारी सस्वर पठन कइकै कक्षा मे सुना जाय ।

१०. नीचे दिहा अनुच्छेद पढा जाय औ पुछि गवा प्रश्न के उत्तर दिहा जाय ।

तिथि के अनुसार आषाढ़ के अन्तिम दिन का आषाढ़ी पूर्णिमा अर्थात गुरु पूर्णिमा के नाँव से जाना जात है । आषाढ़, वर्षा ऋतु का पहिला महिना होय । यहि समय से वर्षा ऋतु आरम्भ होत है । यहिके साथ अवधी समाज मे व्रत औ पर्व कै लम्मा श्रृंखला आरम्भ होत है । कहि जात है:आसाढ़ी परब पसारी, देवारी परब नेवारी ।

आषाढ़ कै पूर्णिमा गुरुपूर्णिमा के नाँव से विख्यात है । यहि दिन अपने आचार्य औ गुरु का अभिनन्दन कइ जात है । लोक पर्व के रुप मे आषाढ़ी अवधी गाँवन मे अत्यन्त लोकप्रिय है ।

यहि दिन शुद्ध मिट्टी से पोति गवा दिवाल पर आषाढ़ औ आषाढ़ी बनाय जात है । आषाढ़ी घर के दरवाजा पर दुनौ ओर द्वारपाल जइसै बनाय जात है । यकरे साथ साथ गोबर के पट्टिका से चारो ओर घेरि जात है । यी पट्टिका यी चित्रन के मध्य भाग से निकरा रहत है । येका 'घर गोठब' के नाँव से जानि जात है । अइसन मान्यता है कि आषाढ़ी के दिन घर गोठे से साँप बिच्छुन कै प्रवेश घर मे नाही होत है । वर्षा के समय साँप औ बिच्छुन के वासस्थान पर पानी भरि जायक नाते यी सब बड़ी संख्या मे वास स्थान के खोजि मे गाँव मे प्रवेश करत हैं । (विक्रममणि त्रिपाठी : अवधी लोक चित्रकला)

प्रश्न

(क) आषाढी पूर्णिमा कै दुसर नाँव काव होय ?

(ख) आषाढी पूर्णिमा कइसन पर्व के रुप मे लोकप्रिय है ?

(ग) आषाढ पूर्णिमा के दिन काव-काव कइ जात है ?

(घ) घर गोठैक पिछे कइसन लोक मान्यता है?

(ङ) साँप औ बिच्छुन कै प्रवेश काहे घर मे होय लागत है ?

११. नीचे दिहा शब्दन का पढा जाय औ अनुलेखन करा जाय ।

(अ) पर्यायवाची शब्द

आँखि : नजर, नयन, लोचन, नेत्र

आगि : अग्नी, पावक, अनल, दहन

इन्द्रः देवराज, महेन्द्र, सुरपति, पानी कै देवता, पुरन्दर

उपहार : पहुरा, सौगात, कोसेली

गहना : जेवर, आभूषण, अलंकार

घमण्ड : रुआब, अभिमान, सेखी, अहंकार, गर्व

घर : आवास, भवन, निवा, सदन, निकेतन, कुटिया

चन्द्रमा : अँजोरिया, जोन्ही, चाँद, चनरमा

पहाड़ : पर्वत, शैल, गिरि,

बयारि : हवा, पवन, समीर

बल : तागत, शक्ति, सामर्थ्य, क्षमता, औकात

बादर : मेघ, घटा, घन, नीरद, पयोद

राक्षस : निशाचर, दानव, दैत्य, असुर

पेड़ : पौधा, रुख, विरवा, वृक्ष

(आ) विपरीतार्थी शब्द

अपमान : सम्मान

आशा : निराशा

उधार : नगद

अच्छा : खराब

जीत : हार

पाप : पुन्य

सजिव : निर्जीव

आजादी : गुलामी

भोगी : योगी

महात्मा : दुरात्मा

आकाश : पाताल

खाल : ऊँच

सम्भव : असम्भव

लिखाई

१२. नीचे दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय ।

(क) पाठ मे दइ गवा चिठ्ठी के प्रतिउत्तर कै नमूना तयार किहा जाय ।

(ख) वृक्षारोपण के खातिर पौधा उपलब्ध कराय दिहा जाय कहिकै जिला बन कार्यालय का एक चिठ्ठी लिखा जाय ।

१३. नीचे दिहा शब्दन का वाक्य मे प्रयोग किहा जाय ।

नगरपालिका, प्रमुख, मातृमाषा, दक्षता, विस्तार, अनुमति, अनुरोध

१४. पाठ मे रहा ह्रस्व इकार औ दीर्घ ईकार लाग पाँच-पाँच ठु शब्द लिखा जाय ।

१५. शुद्ध कइकै लिखा जाय ।

अपने समूदाय या छेत्र मे बोलि जाय वाला मातिरीभाषा कै बिकास, बिस्तार,औ परबरधन नाही भवा तौ वहि भाषीक समुदाय मे रहा ज्ञान, सीप, कला, दछता औ परविधि आदि धिरेधिरे लोप होत जाई ।

व्याकरण

१६. नीचे दिहा अनुच्छेद मे रेखाङ्कित क्रियापद भूतकाल कै होय । कवनकवन पक्ष कै होय, तालिका बनाइकै लिखा जाय ।

राजा ब्रह्मदत्त कै पुत्र बचपनै से दुष्ट स्वभाव कै रहा । ऊ बिना वजह मुसाफिर लोग का सिपाहिन से पकरुवाइ कै सतावत रहा । राज्य के विद्वान, पंडित औ बुजुर्ग लोग का अपमानित करत रहा । अइसन करत के ओकां बहुतै प्रसन्नता कै अनुभव होत रहा । प्रजा के मन मे यहि नाते युवराज के प्रति आदर के स्थान पर घृणा औ रोस कै भाव रहा । युवराज लगभग बीस वर्ष कै होइ गै रहें । एक दिन कुछ मित्र के साथ वय नदी मे नहाय के खातिर गये । वय बहुत बढ़िया से पँवरै के नाही जात रहें । यहि अपने कुछ अपने साथे कुछ कुशल तैराक सेवक का सङहरियै लइ गयें । युवराज औ ओन के मित्र नदी मे नहात रहें । तब्बै आसमान मे करिया करिया बादर छाय गवा । बादर कै गरज औ बिजुली कै चमक के साथ मूसलाधार बरसात शुरू होय गवा । युवराज बड़ा आनन्द औ उल्लास से थपोड़ी बजावत अपने नौकर से कहिन,'आहा ! कइसन सुहाना मौसम है ! हम्मै नदी के मंझधार मे लइ चलौ । अइसन मौसम मे वहिं नहात के खुब मजा आई !' नौकरन के सहायता से युवराज नदी के बीच धारा मे जाइके नहाय लागें । वहीँ युवराज के गले तक पानी आय जात रहा औ बुड़ै के खतरा नाही रहा । लेकिन वरसात के कारण धीरे-धीरे पानी कै सतह बढ़ै लाग

औ पानी के धारा कै बहाव तेज होय लाग । करिया बादर से आसमान ढकि जायक नाते अन्हियारा छाय गवा औ आसोपास देखै के कठिन होय गै । युवराज के दुष्टता के कारण यनकै सेवको लोग यनसे घृणा करत रहें । यही नाते वनका बीच धरवै मे छोड़िकै सब सेवक वापस किनारा पर आइ गयें । युवराज कै मित्र सेवक लोग से वनके बारे मे पुछिन तब उलोग कहिन कि वयँ तौ जबरजस्ती हमरेन कै साथ छोड़ि कै अकेलै पँवरत आये औ शायद राजमहल चला गयें कि । मित्र लोग महल मे युवराज कै पता लगवाइन लेकिन युवराज वहीँ नाही पहुँचा रहें । बात राजा तक पहुँच गवा । वयँ तुरन्त सिपाहिन का नदी के धारा वा किनारा कहुँ से युवराज कै पता लगावैक आदेश दिहिन । सिपाही लोग नदी के प्रवाह मे औ किनारा पर दूर-दूर तक पता लगाइन, लेकिन युवराज कै कहूँ पता नाही चला । आखिरकार निराश होइकै उलोग घरे लउटि आयें ।

१७. नीचे दिहा क्रियापद भूतकाल के कवने-कवने पक्ष मे परत है ? निचे दिहा तालिका जेस बनायकै लिखा जाय ।

पढेन, नाँच्यौ, खाइन, गई, पढतै रहेन, लिखतै रहेव, खेल्तै रहा, खेलत रही, पढि भै रहा, पढि भै रही, लिखि भै रही, पढे हौ, खेले रहेव, जात हीं, पढत रहेन, हँसत रहें, उठत रहें ।

सामान्य भूत	अपूर्ण भूत	पूर्ण भूत	अज्ञात भूत	अभ्यस्त

१८. दिहा क्रियापद प्रयोग कइकै वाक्य बनावा जाय :

देखान, खदेरिस, मुस्कियात रहा, देखित है, लिखत है, पढत रही

१९. पाठ मे प्रयोग भवा वर्तमान काल कै क्रियापद पहिचान कइकै अभ्यास पुस्तिका मे लिखा जाय ।

२०. लिङ्ग, वचन, औ पुरुष के आधार पर तालिका बनाइकै १० ठु क्रियापद लिखा जाय ।

२१. सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) नीचे दइ गवा शुभकामना औ निमन्त्रण पत्र पढा जाय औ आपो वही अनुसार कै पत्र तयार किहा जाय ।

(क)

शुभकामना

श्री.....जी,

नयाँ वर्ष वि.सं २०७८ साल के सुखद उपलक्ष्य मे आप औ आप के परिवार मे सुख, शान्ति, समृद्धि, सुस्वाथ्य औ उत्तरोत्तर प्रगति कै हार्दिक मंगलमय शुभकामना व्यक्त करा जात है ।

श्री शैलेन्द्र कुमार राय

प्रधानाध्यापक

तथा

मुड़िला माध्यमिक विद्यालय परिवार, रुपन्देही

(ख)

श्री .....

निमन्त्रणा

हमरे आयुष्मान पोता मदन यादव कै बन्जारे गाँव निवासी श्री गंगाराम यादव औ अनिता यादव के सुपुत्री आयुष्मती अञ्जली यादव के साथ होय जात रहा शुभ बिबाह के अवसर पर आप कै उपस्थिति प्रार्थनीय है ।

बियाह कार्यक्रम दर्शनाभिलाषी प्राथी

बारात : २०७८।०२।२२ गते पञ्चराम यादव धर्मराज यादव

समय : दुपहर १:०० बजे मायावती यादव माताराती यादव

प्रिति भोज : २०७८।०२।२४ दाताराम यादव

स्थान : निजी निवास, राजपुर-५ कपिलवस्तु रमेश यादव

(ख). आप के परोस मे रहै वाले काका के बियाह के खातिर निमन्त्रणा पत्र बनाइकै शिक्षक का देखावा जाय ।

पाठ
७

पुरानि चुनरी

- रमई काका

है माइके केरि निसानी
यह चुनरी बड़ी पुरानि ॥ १॥

बूटा-बूटा मा यहिके, झलकत अम्मा का दुलारु ।
लाली मा घुला मिला है, बप्पा का चटका पियारु ॥२॥

यह यादि धरावति छोटे, भैय्या कै तितुली बोली ।
सिकुरन मा लुकी छिपी है, सब बचपन की हमजोली ॥३॥

है माइके केरि निसानी,
यह चुनरी बड़ी पुरानि ।

दरसात माँग मा सेंदुर, है यहिमा उइ सुभ दिन का ।
जब बँधा रहै खूँटे मा, पटुकवा पियरका उनका ॥४॥

है अजहूँ देति गवाही, गठि बंधन प्रेम परन कै ।
यह धरी सँजोई पोथी, पति सेवा नेम धरम कै ॥५॥

पावन सोहाग मा सानी, यह चुनरी बड़ी पुरानि ।
इक दिवस भोर कै लोही, यहिका अपने रँग रँगिगै ॥६॥

सुरजन कै किरन सोनहरी, कोंछे मा आसिस भरिगै।
सब भेंटानि दुइ-दुइ अँसुआ, जिनते धागा हैं सीझे ॥७॥

आँचर मे टिपका भीजे, अपने अँसुवन के पानी ।
है माइके केरि निसानी, यह चुनरी बड़ी पुरानि ॥८॥

है आवति यादि भुलानी, यह चुनरी बड़ी पुरानि ।
यहि की जूड़ी छाँहीं मा, है प्रेम बेलि अँगुस्यानी ॥९॥

सजि-सजि सुघरीले फूलन, बहु छहरि-छहरि फलियानी।
आँचर मा पोंछि सुखावा, केतने दुख सुख का पानी ॥१०॥

ई घरी उसिलतै उसिलैं, पहिले की सबै कहानी ।
जस कलियन पख लुकानी,यह चुनरी बड़ी पुरानि ॥११॥

शब्दार्थ

हमजोली : साथ साथ बिता घटना क्रम, हमउम्र
चुनरी : ओढ़नी
सोहाग : सौभाग्य, विवाहित
ई : यी
उइ : वही
इक : एक
भोर कै लोही : सुबेरे कै लालिमा
पावन : पवित्र, पाख

आसिस : आर्शिवाद, वरदान

सोनहरी : सुनहरा, सुनौला रंग कै

यादि : याद, सम्झना

जूड़ी : ठण्ड, शीतल

छाँहीं : छाँह, छायाँ

अँगुस्यानी : अँखुवा, पल्लव

पटुकवा : कमर मे लपेटि जायवाला कपड़ा कै पेटी

सँजोई : बचाई कै, जतन कइकै ।

गवाही : गवाह कै बयान या कथन, साक्ष्य

बूटा-बूटा : कपड़ा पर कइ गवा कारीगरी

झलकत : देखात, चम्कत

सजि-सजि : सँवरि-सँवरि, साज-सज्जा कइकै

छहरि-छहरि : यहरवहर

आँचर : अँचरा, पल्लु

उसिलतै : बयान करै

कलियन : फूलन

पख : पुष्पदल, पंखुड़ी

लुकानी : लुकान, छिपान

अभ्यास

सुनाई

१. 'पुरानि चुनरी' कविता का सुना जाय औ साथसाथ सस्वर वाचन करा जाय ।

२. कविता कै चउथा औ पचवाँ श्लोक सुना जाय औ वही के आधार पर प्रश्न कै उत्तर दिहा जाय ।

(क) वहिमे कइसन सेंदुर देखात है ?

(ख) उनके खुँटे मे कइसन रंग कै पटुका बान्ह रहा ?

(ग) ऊ चुनरी अबहिन केतकै गवाही देत है ?

(घ) माई के चुनरी मा काव सँजोई कै धरा है ?

(ङ) 'गवाही' औ 'सँजोई' शब्द कै अर्थ बतावा जाय ।

३. कविता कै सतवाँ श्लोक सुना जाय औ वोकर भावार्थ बतावा जाय ।

बोलाई

४. नीचे दइ गवा शब्दन का शुद्ध से उच्चारण करा जाय ।

दुलारु, पियारु, सँजोई, पोथी, सोहाग, सोनहरी, पटुकवा

५. नीचे पुछि गवा प्रश्न कै उत्तर दिहा जाय ।

(क) 'पुरानि चुनरी' कविता कै लेखक के होयं ?

(ख) कविता मे केकरे चुनरी कै बयान कइ गा है ?

(ग) ऊ चुनरी कइसन है ?

(घ) चुनरी केतकै गवाही देत है ?

(ङ) लेखक के माई कै चुनरी के साथे कइसन कहानी है ?

६. पाठ के आधार पर पुरानि चुनरी कै बारे मे छलफल करा जाय ।

७. कविता मे चुनरी प्रति कइसन भाव व्यक्त किहें है, आपनआपन विचार सुनावा जाय ।

पढाई

८. गति, यति औ लय मिलाई कै कविता वाचन करा जाय ।

९. कविता सतवाँ औ अठवाँ श्लोक मनैमन पठन कइकै नीचे दइ गवा प्रश्न कै उत्तर दिहा जाय ।

(क) कइसन आसिस कोंछे मे भरि गवा ?

(ख) 'अँसुआ, आसिस, टिपका' शब्द कै अर्थ काव होय ?

(ग) अँचरा केतके पानी से भिजि गा है ?

(घ) चुनरी केकर निसानी होय ?

(ङ) माई कै चुनरी कइसन है ?

१०. पाठ कै पहिला औ दुसरा श्लोक पढ़िकै छोट उत्तर आवै वाला तीन ठू प्रश्न बनावा जाय ।

११. 'कहानी-पुरानी' जइसै अनुप्रासयुक्त शब्द पाठ से पहिचान कइकै शिक्षक का सुनावा जाय ।

१२. नीचे दइ गवा कविता पढ़ा जाय औ पूछा सवाल कै उत्तर दिहा जाय ।

देहीं काँपै तन थरथराय,
जब चलै बयरिया, हरहराय ।
बादर देखे जू जब डेराय,
कोहिरा बादर जस छाय गवा,
तब जानौ जाडा आय गवा ॥१ ॥

ललचाय मन काफी औ चाय ,
दुइ घूँट पियेव कि गा सेराय ,
भूजा आलू मनका जो भाय ,
कउरा पर गन्जी छाय गवा
तब जानौ जाड़ा आय गवा ॥२ ॥

जब मनई रजैइय्यम घूसि जाय,
आगि तापै से जिउ झरसि जाय,
पानी छूवै का मन डेराय,
सब गरम चीज मन भाय गवा,
तब जानौ जाडा आय गवा ॥३॥

निरहू निकरे लइकै पैसा,
हिलै-डोलैं जइसे भैंसा ।
उइ पहुँचे बीच बजरिया मा,
जहाँ बिकै रजाई, डगरिया मा।

उन्हैं देख सेठ मुस्कात भवा ,
तब जानौ जाडा आय गवा ॥४॥

कम्मर,चद्दर डसनी रजाई ,
कोई इनर खरीदत है भाई ।
स्वीटर, जाकेट, जर्सी ,सदरी ,
कोई कोट खरीदै जब बदरी ।
कपड़न से देहिं गरुवाय गवा ,
तब जानौ जाडा आय गवा ॥५॥

संझक, सबेर कउरा तापै ,
कउरप बइठे सब गप्प हाँकै,
कतनेव नेतन का जिताय दिहिन,
कतनेव कै भाव गिराय दिहिन ,
कतनेव कै जमानत जप्त भवा,
तब जानेव जाडा आय गवा ॥६॥
(बिष्णु लाल कुमाल(प्रजापती) : जाड़ा आय गवा)

प्रश्न

(क) बयारि चलत के कइसन होत है ?
(ख) जाड़ा मे केतके खातिर मन ललचात है ?
(ग) जाड़ा मे लोग, का करै कै पसन्द करत हैं ?
(घ) सन्झा के लोग का करत हैं ?
(ङ) 'जमानत' औ 'डगरि' शब्द कै अर्थ बतावा जाय ?

लिखाई

१२. पाठ मे रहा यी शब्दन कै प्रयोग कइकै वाक्य बनावा जाय ।

आँचर, देखात, निसानी, झलकत, पानी, गवाही, सजि-सजि, खुँटे

१३. पाठ के आधार पर संक्षिप्त उत्तर लिखा जाय ।

(क) कवि के माई कै चुनरी कइसन है ?

(ख) चुनरी पर कइसन बुट्टा औ रंग है ?

(ग) सुरज कै सुनहरा किरण काव लइकै आवत है ?

(घ) चुनरी मे कइसन पानी पोछिकै सुखावा है ?

(ङ) कलियन के पंख जेस का लुकान है ?

१४. नीचे दिहा कवितांश पढ़िकै पुछा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय ।

कुछ बीति गा लड़कपन के मौज मा, मस्ती मा
कुछ बीति गा डगर मा सुनसान मा, बस्ती मा
कुछ बीति गा खोवइ मा कुछ बीति गा पावइ मा
कुछ बीति गा रोवइ मा कुछ बीति गा गावइ मा।
का चूक भइ न कबहूँ सोचइ का भा सुभीता,
एक साल अउर बीता।
कबहूँ जनान दुनिया अबहीं उछिन्न होई
कबहूँ जनान सगरौ अब ताक धिन्न होई
कबहूँ बजी पिपिहिरी कबहूँ बजा नगाड़ा
गइ जरि कभौं उखाड़ी झंडा गा कभौं गाड़ा।
कबहूँ त बिना बातइ के लागि गा पलीता ।
एक साल अउर बीता ।
परसौं अहै दसहरा नरसौं अहै देवारी
सब आइ के चला गे तिउहार बारी-बारी
पनरा अगस्त आवा फिर आइ दुइ अक्तूबर
हफ्ता भरे कै झंझट फैलाइ गा नवंबर।
नापै के बरे जिनगी हर साल नवा फीता।
एक साल अउर बीता ।
महजिद से ताल ठोंकेन मन्दिर से ताल ठोंकेन
केतनौ गयेन छोड़ावा फिर फिर से ताल ठोंकेन

बनि के धरमधुरी सब केतना रकत बहायन

खूनइ क किहेन उल्टी खूनइ म खुब नहायन ।

दुइनौ छलाँग मारेन केउ बाघ केहू चीता ।

एक साल अउर बीता ।

(आद्या प्रसाद 'उन्मत्त' : एक साल अउर बीता)

प्रश्न : (क) कवि कै वाल्यकाल कइसै बीता ?

(ख) कइसन कइसन मनोरञ्जन करत कवि कै साल बीता ?

(ग) कवि के अनसार कवन महीना झन्झट फैलाइ गै ?

(घ)'पलीता' औ 'छलाँग' सब कै अर्थ काव होय ?

(ङ) एक साल आउर बीता कविता कै मुख्य सनेश का होय ?

१५. कवि 'पुरानि चुनरी' कविता मे माई के चुनरी का कइसै वर्णन किहे हैं ।

१६. 'पुरानि चुनरी' कविता कै भाव काव होय ।

१७. सप्रसंग व्याख्या किहा जाय ।

(क) यह यादि धरावति छोटे, भैय्या कै तितुली बोली ।
सिकुरन मा लुकी छिपी है, सब बचपन की हमजोली ॥

(ख) सजि-सजि सुघरीले फूलन, बहु छहरि-छहरि फलियानी।
आँचर मा पोंछि सुखावा, केतने दुख सुख का पानी ॥

व्याकरण

१८. नीचे दिहा वाक्यन का एक वाक्य मे संश्लेषण कइकै लिखा जाय ।

(क) तुँ कथा पढ़त हौ ।

(ख) तुँ निवन्ध पढ़त हौ ।

(ग) तुँ उपन्यास पढ़त हौ ।

(घ) तुँ कविता पढ़त हौ ।

(ङ) तुँ गजल पढ़त हौ ।

(च) तुँ नाटक पढ़त हौ ।

१९. नीचे दिहा संश्लेषण वाक्य का अलग अलग वाक्य मे विश्लेषण किहा जाय ।

(क) महाकवि गोस्वामी तुलसीदास रामचरितमानस, रामलला नहछू, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, रामाज्ञा प्रश्न, दोहावली, कवितावली, गीतावली औ हनुमान चालिसा लिखे हैं ।

२०. नीचे दिहा वाक्य के संश्लेषण कै कुछ उदाहरणन का ध्यानपूर्वक देखा जाय ।

- ऊ पुस्तकालय मे पढ़त है । ऊ घरे लउटत है ।(सरल वाक्य)

  ऊ पुस्तकालय मे पढ़िकै घरे लउटत है ।
- ऊ पुस्तकालय मे पढ़ि होत है । ऊ घरे लउटत है । (मिश्र वाक्य)

  जब ऊ पुस्तकालय मे पढ़ि होत है तब घरे लउटत है ।
- ऊ पुस्तकालय मे पढ़ि होत है । ऊ घरे लउटत है । (संयुक्त वाक्य)

  ऊ पुस्तकालय मे पढ़ि होत है औ घरे लउटत है ।

यही के आधार पर नीचे दिहा वाक्य का सरल मिश्र औ संयुक्त वाक्य मे संश्लेषण लिखा जाय ।

(क) किसनलाल बीया बोइन हैं ।

(ख) बियाड़ एक महीना मे तइयार होई ।

२१. नीचे दिहा वाक्य के विश्लेषण कै कुछ उदाहरणन का ध्यानपूर्वक देखा जाय ।

- ऊ घरे आइकै गृहकार्य कइकै नहारी करत है । (सरल वाक्य)

  ऊ घरे आवत है ।

  ऊ गृहकार्य करत है ।

  ऊ नहारी करत है ।
- जब ऊ गृहकार्य करी तब हम नहारी देबै । (मिश्र वाक्य)

  ऊ गृहकार्य करी ।

  हम नहारी देबै ।
- ऊ गृहकार्य करी औ हम नहारी देबै । (संयुक्त वाक्य)

  ऊ गृहकार्य करी ।

  हम नहारी देबै ।

२२. यही के आधार पर नीचे दिहा वाक्य का निर्देशन के अधार पर विश्लेषण किहा जाय ।

(क) ऊ भैरहवा जाइकै समान खरीद कै घरे लउटी । (सरल वाक्य)

(ख) जेतनै ऊ मेहनत करी वतनै वका सफलता मिली । (मिश्र वाक्य)

(ग) ऊ मेहनत करी औ वका सफलता मिली । (संयुक्त वाक्य)

२३. सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) आपो के जीवन मे घटा कवनो घटना या महत्त्वपूर्ण चीज जवन आप के जीवन मे सकारात्मक छाप छोड़े होय, वकरे बारे मे एक अनुच्छेद लिखा जाय ।

(ख) जीवन मे घटा कइसन घटना महत्त्वपूर्ण होत है सूची तयार करा जाय औ कक्षा मे प्रस्तुत करा जाय ।

पाठ
८

फैसला

शिवप्रसाद पाठक

१. बाति तनी पुरान होय । शंकरपुर गाँव मइहाँ सुन्दर यादव औ मुस्तफा बेहना केर आस पास मइहाँ घर रहा । सुन्दर औ मुस्तफा कै आपस मइहाँ बड़ा मेलजोल औ दोस्ती रहै । सब कोई सुन्दर औ मुस्तफा के दोस्ती कै मिसाल देत रहैं । दूनौ खेत, खरिहान, मेला, बजार साथेन करत रहैं । एक दोसर का देखे बिना कोई का जउन है चयन नाय परत रहै । लोग कहत रहें, 'अलगअलग धर्म केर मनइ होइउ कै दूनौ मे केतना मेलजोल है ।' लेनदेन, कर्जा पानी, गल्ला बेचै, खेती करै, सबमा एक दुसरे के सल्लाह बिना कुछ नाई करत रहें ।

२. एक बेर गाँव मे चुनाव आय । मुस्तफा सुन्दर से कहिन, 'हमार मन चुनाव लड़यक कहत है, तुम का कहत हौ ?' सुन्दर कहिन, 'तुम्हार मन अब गाँव कै नेता बनिके झगड़ा लड़ाई केर फैसला करैक करत है । फैसला करै वाला न्यायकर्ता परमेश्वर होत हैं । फैसला करब बड़ा कठिन काम है । तरवार के धार पर चलयक परत है । अगर तुम्हार मन चुनाव लड़यक है, तौ हम जिउजान से तुमका जितावै कै कोशिस करिब ।'

३. चुनाव भवा । सुन्दर औ मुस्तफा दुनौ जने के मेहनत औ ईमानदारी केर परिणाम मुस्तफा वार्ड कै नेता मइहाँ जीत गयें । मुस्तफा तौ इमन्दार रहबै किहें । सब कै सुख दुःख मइहाँ साथ देय वाला होय के नाते सइगर वोट से जीतें । खुब खुशियाली मनाय गवा । दूनौ दोस्त छाती से छाती मिलाइकै एक दुसरे के साथे खुशी मनाइन् ।

४. सुन्दर केर एक मउसी पटना गाँव मइहाँ रहत रहीं । मउसिया गुजरि गयें रहैं । लरिकेबच्चे कोई नाही रहें । अपनौ पुरनियाँ रहीं । सन जेस बार, पपला मुँह, टेढ़ि करिहाँव, लाठी लइकै चलत रहीं । ऊ एक दफे सुन्दर का बोलाइन औ कहैं लागीं,'भइया हमरे तुम्हरे अलावा कोई नाई है, यी ८० वर्ष केर हमार उमिर है । अब कवनो मेर कै काम हम से नाई होइ पावत

है । चार कउर खाय के त्रसित है । का करी, यी हमार चार दिन कै बुढ़उती कसकै कटी ।' जबाब मे सुन्दर अपने साथे चलै के कहिन ।

५. सुन्दर कै मउसी पटना से शंकरपुर आय गईं । मउसी केर खाना पानी केर व्यवस्था होई गवा । मउसी केर कच्चा पन्द्रह बिगहा जमीन पटना मइहाँ रहा । हुवाँ से गल्ला पानी आवत रहै । एक दिन मउसी सुन्दर से कहैं लागीं, 'भइया ऊ पटना वाली जमिनियाँ हमरे जियतै अपने नामे कराय लेव । हमरे न रहते, कहूँ तुमका कउनौ दुख न होय ?' यी बात जब सुन्दर मुस्तफा से कहिन तौ मुस्तफा कहै लागें, 'पक्का कागज पत्र बनाइ के मालपोत से पास कराय लेव, लेकिन हम तुमसे एक वात कहिब कि मउसी का जीते जी कउनौ किसिम से खाना, कपड़ा, दवाईविरवा मइहाँ तनिकौ कमी न होयक चाही । यही मानवता होय, आगे चलिकै कउनौ समस्या खड़ा न किहेव ।'

६. मउसी कै जमीन सुन्दर के नाम मइहाँ पास होई गवा । मउसी कै सेवा सत्कार, खानपीन कै व्यवस्था वढ़िया होत रहै । छ महीना के बाद मइहाँ सेवा सत्कार, खाना पानी मइहाँ धीरे धीरे कटौती होय लाग । खाना के साथेन सुन्दर कै दुलहिन (गुड़िया) झर-झराँय, भर-भराँय कै चटनी देय लागीं । मउसी जब तक सहि पाइन, सहिन् । जब नाई सहि पाइन तौ सुन्दर से सब बाति कहिन् । सुन्दर अपने मेहरारू कै आदर करत रहें, मेहरारुक बाति मानत रहें । कवनो मेर एक साल अउर गुजरि गवा । मउसी गाँव के लोगन से आपन दुखड़ा रोवैं लागीं । सब कोई कहिन मुस्तफा वार्ड कै नेता हैं वनही से कहौ । मउसी मुस्तफा से आपन दुखड़ा रोयरोय कै कहिन,'भइया हम चार कवर खाना औ तन मुँनै के कपड़ा के खातिर सुन्दर कइहाँ आपन सब कुछ सउपि दिहेन । आज खाना पानी के खातिर दश गारी रोज सहित है । तुम वार्ड कै नेता हौ, हमार फैसला कराय देव ।' बाति एक कान दुइ कान मैदान होइ गै । सुन्दर औ सुन्दर कै मउसी केर बाति वार्ड के न्यायिक समिति मइहाँ पहुँचि गै औ मुस्तफा के जिम्मा फैसला करयक बाति भवा । सुन्दर खुशी रहै कि मुस्तफा हमार दोस्त होंय । फैसला हमरही पक्ष मइहाँ करिहैं ।

७. फैसला केर दिन आवा,न्यायिक समिति जुटा । सुन्दर औ सुन्दर कै मउसी आपन आपन बाति सब के सामने कहिन । मउसी कहिन, आप सब न्यायकर्ता होवा जात है औ हम सब का परमेश्वर मानित है, जवन फैसला होई, हमका मञ्जूर है । मुस्तफा का बड़ा मुस्किल परा । एक ओर बचपन कै साथी दुसरे ओर मउसी । मुस्तफा का सुन्दर कै बाति याद आवा, 'फैसला करब बड़ा कठिन है । तरवार के धार पर चलै के परत है । न्याय के काम के खातिर सब बराबर होत हैं ।' मुस्तफा फैसला करै से पहिले सब लोगन का नमस्कार कइकै कहिन, 'मउसी केर पटना वाली जमीन सुन्दर के नाम मा, यहि सर्त पर किहा करावा गा रहा कि सुन्दर मउसी केर सारी उमिर सेवाटहल, खानापानी, दरदवाई औ किरिया करम तक करिहैं ।

यिहै भर नाही मउसी खटिया पर गिर जइहैं तौ सरसफाइउ करयक परी । लेकिन बूढ़ असहाय मउसी का तकलीफ भवा है, तवहीं तौ आप सब के सामने गुहार लगाइन है । दुसर बाति पटना वाली पन्द्रह बिगहा जमीन से जउन पयदा पइदाइस होत है । वहिकै आधै भरसे मउसी का वढ़िया से खाना पानी, कपड़ालत्ता, दर दवाई करै के बादो बचि जात है तौ सुन्दर मउसी केर सेवा मा कमी काहे किहिन ? न्यायिक समिति फैसला करत है कि सुन्दर मउसी का सेवा सत्कार से सन्तुष्ट कइके राखैं । हर तिसरे दिन यहि समिति कै आदमी मउसी केर हाल चाल लेंय जाय औ जानकारी समिति का करावैं । छ महिना तक देखा जाई । छ महिना के बाद मइहाँ, हर महीना हाल चाल लीन जाई । जौ मउसी सन्तुष्ट रहिहैं तौ कोई बाति नाई, सुन्दर का धन्यबाद दीन जाई । जदि सुन्दर मउसी कइहाँ सन्तुष्ट कइके न राखिन तौ मउसी कै पटना वाला पन्द्रह बिगहा जमीन मउसी के नाम मा पास करैक परी । वकरे बाद जे मउसी कै सेवा टहल, खाना पानी, दर दवाई, किरिया करम करी, मउसी के न रहय्क बाद, उ जमीन वही केर होई । साथै न्यायिक समिति मउसी का यहि बाति कै जानकारी करावत है, कि पूतपतोह से मिलिकै रहैं । सब से प्यार मोहब्बत करैं । पुरान बाति भूलि जायँ जवन खाना पानी तयार होई बनी, वही मइहाँ सन्तुष्ट रहैं । सुन्दर का परेशान करै औ दुःख देयक न सोचैं ।'

८. न्यायिक समिति कै फैसला सुनिकै सुन्दर जइसै आसमान से गिरि गा होंय । उनका यी भरोसा नाई रहा कि मुस्तफा यी मेर कै फैसला करिहैं । तीस वर्ष कै दोस्ती का छिन भर मइहाँ भूल जइहैं । मउसी के फैसला के बाद सुन्दर औ मुस्तफा कै दोस्ती खतम होई गवा । जस दोस्ती रहै तइसै दुश्मनी होई गवा । धीरे धीरे दिन बितते रहै । तीन साल बीत गवा । वार्ड कै चुनाव कै समय फिर आवा, मुस्तफा कै विरोधी सुन्दर का वार्ड के चुनाव मइहाँ लड़यक दबाव देय लागें । तुम जस पढ़ा लिखा होसियार, हिंया, चार गाँव मइहाँ कोई नाई है । ईमान्दारी मइहाँ सब कोई तुम्हार नाम लेत हैं । हम सब कोई मिलि के तुमका चुनाव जितावा जाई । चिन्ता न करौ, लड़ै के तयार होव । सुन्दर कै मनौ रहा । चुनाव लड़यक तयार भयें । जब मुस्तफा जान पाइन कि सुन्दर चुनाव लड़त है तौ सुन्दर के विरोध मइहाँ चुनाव न लड़यक फैसला किहिन । चुनाव भवा । सब के मेहनत से सुन्दर चुनाव जीत गयें । खुशियाली मनाय गै । खुशियाली कै मिठाई सुन्दर मुस्तफा के घरेव पठइन । मगर मुस्तफा कै दुलहिन सलमा मिठाई लउटाय दिहिन ।

९. कुछ दिन यइसै बीता । मुस्तफा बरदही बजार से एक जोड़ी मुर्रा जात कै भइसा खेती करै खातिर लायें । दूनौं भइसा बहुत बढ़िया, सुन्दर औ तगड़ा रहें । मुस्तफा पूरा खेती वही से किहिन । चार गाँव कै मनई भइसा देखै आवत रहें । दश महीना के बाद अपनै आप एक भइसा मरि गवा । रोवना पिटना परा । सलमा कहै लागीं, 'सुन्दरवै कुछ कइ कराय दिहिस

है । वही से यतना जवान भइसा मरि गवा है ।' मुस्तफा भइसा कै गोईं मिलावै बहुत प्रयास किहिन लेकिन नाइ मिलाय पायें परेशान होई गयें !

१०. वही शंकरपुर गाँव मइहाँ एक रामदीन बनिया रहँत रहें । उनके थिर एक बर्ध वा भइसा से चलावै वाला टाँगा रहै । रोज बजार से नोन, तेल, चीनी, भेली लाइके गाँवै गाँव बेचत रहें औ गाँव से गल्ला पानी अनाज लइ जाइके बजार मइहाँ बेचत रहें । यिहै उनकै व्यापार वा कारोबार रहै । मुस्तफा केर एक भइसा रामदीन के मन मा गड़ा रहै । एक दिन रामदीन मुस्तफा से कहैं लागें,'भइया यी एक भइसा हम का दइ देव तौ हम काम लेई । रामदीन सोचत रहें,'मुस्तफा केर भइसा मिल जाय तौ बजार से गाँव औ गाँव से बजार, दिन मइहाँ चार चक्कर लगाय लेब । अबहीं मुस्किल से एक चक्कर लागत है । भइसा मोट-तगड़ा, जवान है । जस मन लागै तस बोझ लादौ, खींच लेई ।' यिहै सब फाइदा वाला बाति रामदीन सोचत रहें । मुस्तफा से बात भवा, मोलमोलाही भवा । चार महीना के भीतर पूरा पइसा देयक बाति होइ गवा औ रामदीन भइसा लइ गयें ।

११. जवने दिन से रामदीन मुस्तफा केर भैंसा लइ गयें । वही दिन से उनका काम नाई अँटय । दिनराति नाई समझैं गाँवगाँव से गल्ला खरीद के बजार पहुँचावय औ बजार से तेल, चीनी, नमक अउरौ सामान गाँवैगाँव बेचैं । भैंसा तगड़ा रहा । चार खेप तक सामान लावै-लैजाय । रामदीन का काम के आगे खाना पानी नाई सुहाय । वइसने पशु का घाँस, भूसा, दाना, पानी केर कुछ इन्तजाम नाई रहा । खाली सुख्खै, पैरा, भूसा पानी देंय औ काम, कर्रा करावैं । पशु तौ बोल नाई पावै । वोका खाली कामैकाम रहा । कोयर पानी कै वढ़िया इन्तजाम नाई किहिन । भैंसा धीरे धीरे कमजोर होय लाग । मुस्तफा के दिया जवन सेवा औ दाना पानी रहा ऊ सव सपना होय गवा । रामदीन यी बाति नाई सोचिन भैंसा कमजोर होत जात है । वय उप्पर से लादै वाला बोझा तनिको कम नाई भवा । कवनो मेर भैंसा चलत रहै, बइठै जो तो रामदीन डण्डा से बाति करैं औ डण्डा से पिटिपिटिकै चलावै ।

१२. एक दिन कै बाति, रामदीन गाँव से बजार तीन चक्कर सामान लइ गयें औ लायें । चउथे चक्कर मइहाँ तनी देर होई गवा रहा । तबहूँ नमक, चीनी, दश पीपिया तेल, अउर मिर्चा तमाखू पान सब ठेला पर लादिन । ऊ दिन दिनभर कै कमाई कै तनि जाँदै भवा । पइसा नगद सब साथेन रहा । सोचिन जादा देर नाई भवा है । थोरी देर मइहाँ घरे पहुँच जइबै, भइसा मचियाइन औ चलि परें । दिन भर कै थका औ भूखा भइसा जस तस चला । ऊ धीरे धीरे जोर लगावत पाँव उठावत चला । रामदीन का घरे जल्दी पहुँचै के रहा, तौ भइसा का पीटा पीट लगाये रहैं । जस तस भइसा आधी रास्ता तक आय । एक मेड़ पर ऊ गिरि गवा । रामदीन उतरि कै डण्डै डण्डा पीटिन लेकिन भइसा नाई उठा । वन भइसा के नकुना मइहाँ डण्डा घुसेरघुसेर मारिन, लेकिन भइसा नाई उठा । जिन्दा होत तौ उठत, भइसा मरि गवा

रहै । रामदीन का मुस्किल परा । अँधेरी रात सूनसान जगह, सामान छोड़िके घर जाय तौ बीसन हजार कै सामान । रामदीन सोंचिन, 'रात भर यही गाड़ी मइहाँ रहिब, जगतै रहिब । सकारे कवनो इन्तजाम कीन जाई ।

१३. बड़ी मुस्किल रहा, उनहूँ दिन भर कै थके रहें । भुखानो रहें । आधी राति भर आँखि मलि मलि कै जागें, न मालूम कब नींद लागि गवा, सोय गयें । जब नींद खुला तौ दिन चढ़ि आवा रहा । देखिन तौ छाती पीटै लागें । सात पीपा तेल, दुइ बोरा चीनी, दुइ बोरा भेली औ जवन तीस हजार रुपया लिहे रहें, सब गायब रहै । रोवत गावत गाँव से सकटू कै भइसा माँगि कै लायें । कवनो मेर से ठेला घरे पहुँचाइन । घरे चुल्हा नाई बरा । सब कोई रोवै लागें । रामदीन कै मेहरारू पार्वती तौ मुस्तफा का सरापै,'मरुल्ला भइसा दइके हमका बिलुवाय दिहिस । जन्म भरेक कमाई लुटि गवा । भइसा का मरैक रहा तौ घरे तौ आइके मरत, लुटाही तौ न होत ।' चार महीना पूरा भवा तौ मुस्तफा रामदीन से भइसा केर पइसा माँगिन । तब रामदीन कै पूरा परिवार लाठी लइकै निकरे औ कहै लागे,'केस पइसा ! मरुलहा भइसा दिहेव, हम तौ लूटि गयन ! औ तुमका पइसा कै परी है, पइसावइसा कुछ न देबै ! जउन करयक होय कइ लेव !'

१४. झगडा बढ़ा तौ सब बीचबचाव कइ दिहिन । कोई कोई कहै लागे न्यायिक समिति मे यहि बाति कै फैसला करावो । जब रामदीन भइसा लिहिन रहै । ऊ समय भइसा मइहाँ कोई रोग, दोख, बीमारी नाई रहा । कड़ा मेहनत औ दाना, पानी, कोयरपात न दिहे से भइसा मरा है । मुस्तफा सोचिन,'वार्ड कै नेता तौ सुन्दर है का करी ? यही सोंच बिचार मइहाँ रहें । आखिर मइहाँ न्यायिक समिति के बाति पर सब कै राय बना । रामदीन का खबर किहा गवा । ऊ सोचै लागे, 'न्यायकर्ता तौ सुन्दर है । मुस्तफा कै विरोधी है । फैसला हमरेन पक्ष मइहाँ होई ।' रामदीन सुन्दर से भेंट किहिन औ अपने पक्ष कै बाति बताइन । न्यायिक समिति के बैठक कै दिन निश्चित भवा । सब लोग समिति के सामने आपन-आपन बाति बताइन । अब फैसला केर समय आवा । सुन्दर खड़ा भयें औ कहै लागे,'आप सब लोगन का हमार सादर नमस्कार है । हम आशा किहे हन कि सब लोगन के सहमतिम यी फैसला होई ।'

१५. 'जब रामदीन मुस्तफा केर भइसा खरीदिन तौ यदि वही समय मइहाँ भइसा कै मूल्य (दाम) दइ दिहे होतें तौ आज यी अवस्था न आवत । मुस्तफा कै भलमनसाहत रहा कि उधार दइ दिहिन । दूसर बाति, जब जानवर (भैंसा) रामदीन लिहिन रहै तौ देखिकै पंसद कइकै लिहिन रहै । वहमा कोई रोग, दोष, बिमारी नाई रहा औ रामदीन अपनै मुस्तफा केर भइसा लेयक आयें रहें । मुस्तफा उनके हिंया बेचै नाई गयें रहें । भइसा से कड़ा मेहनत कराय गै । वहिके खानपान, कोयर, घाँस, भूसा, दाना, पानी मइहाँ कोई ध्यान नाई दइ गै । जवने से जानवर कमजोर भवा औ काम करतै करत प्राण छोड़ि दिहिस । रामदीन कै चाहे जवन नोक्सान

भवा होय, लेकिन भइसा कै मोल सात दिन के भित्तर मुस्तफा का देंय औ न्यायिक समिति का जानकारी करावैं । साथेन समिति रामदीन के द्वारा जानवर के साथे किहा गवा अत्याचार के खातिर पाँच सौ रुपया जुर्माना करत है । जेसे अउर लोग यी शिक्षा लेंय कि जानवरो से प्रेम करैक चाहीं औ काम लेय के साथैसाथ उनकै दाना पानी कै व्यवस्थौ करैक चाहीं । यी सुनिकै सब लोग उठिकै सुन्दर के फैसलामइहाँ जय-जयकार करै लागें । मुस्तफा दउरि कै आयें औ सुन्दर से लिपटि कै कहै लागें, 'भइया मित्र ! हमका माफ कइ देव, हम न जानै का का सोंचे रहेन । लेकिन तुम्हार फैसला हमार आँखि खोलि दिहिस । फैसला करै वाला कोई केर नाई होत है । खाली सत्य औ न्याय के साथे रहत है ।' दूनौ केर मन कै मइल आँसु से धोय गवा ।

शब्दार्थ

न्यायिक समति : न्याय करैक, झगड़ या लफड़ा मिलावै वाला व्यक्ति लोग कै समूह

न्यायकर्ता : न्याय करै वाले, मध्यस्तकर्ता काम करै वाले व्यक्ति

मेलजोल : ढंग कै व्यवहार, मिलिकै चलै वाला

करिब : करबै

केर : कै

मिसाल : उदाहरण, लवन्ना, लवनिया

दब्बु : डेरान, आपन विचार व्यक्त न कई पावै वाला

गुजरि : बीत गवा

थिर : लगे

बढ़िया : नीक, सुन्दर

मचियाइन : नाधिन

कमाई : फायदा, मुनाफा

सकारे : सुबेरे

सरापै : बदुदआ देब, अमंगलकारी वचन कहैक काम, अहित चिताइब

मरुल्ला : कमजोर, निबर, दुबरपातर, मरे तना

लुटाही : चोरी, जबरदस्ती ठगी

विरोधी : विरोध करै वाला, फरक विचार राखै वाला

सहमति : विचार मिलि गवा अवस्था, एक मत

कोयर : पशुधन कै खायवाला अहार: भुसा,घाँसपात, पयरा, दाना पानी आदि

भलमनसहत : बढिया विचार वाला

जुर्माना : दण्ड, सजाय, नगद या जिन्सी असुल करैवाला सजाय

सेवा : जतन, रेखदेख ।

मन कै मइल : मनमुटाव, मतभेद

अभ्यास

सुनाई

१. कथा का सुनिकै सुन्दर कै मउसी के बारे मे पाँच वाक्य कहा जाय ।

२. कथा के नववाँ अनुच्छेद कै इमला लिखा जाय ।

३. कथा कै बारहवाँ अनुच्छेद सुना जाय औ पूछा प्रश्न कै उत्तर बतावा जाय ।

(क) एक दिन रामदीन काव किहिन ?

(ख) रामदीन ठेला पर कवन-कवन सामान लादिन ?

(ग) भइसा कइसने हालत मे चलत रहा ?

(घ) रामदीन भइसा का काहे मारै लागें ?

(ङ) 'इन्तजाम औ मचियाइन' शब्द कै अर्थ बतावा जाय ।

४. पाठ कै अन्तिम अनुच्छेद सुनिकै वहिमे व्यक्त कइ गवा बाति सुनावा जाय ।

बोलाई

५. उदाहरण मे देखाय गवा जेस शुद्ध से उच्चारण किहा जाय ।

जुर्माना / जुर् . माना /

मुस्किल, मचियाइन, खरिहान, झर-झराँय, भर-भराँय, पीपिया, फैसला, बरदही, परेशानी

६. यहि कथा कै शीर्षक केतना उपयुक्त है, आपन तर्क सहित कक्षा मे प्रस्तुत किहा जाय।

७. सुन्दर के मउसी कै अवस्था जेस केहू के बुढापा मे न आवै, कहै के खातिर काव करैक परी, कहा जाय।

८. कथा के तिसरे अनुच्छेद का सस्वर वाचन किहा जाय औ वहि अनुच्छेद का पढ़ै मे केतना समय लाग, शिक्षक से पूछा जाय।

९. कथा के तेरहवँ अनुच्छेद कै वाचन करा जाय औ पाँच ठु प्रश्न बनावा जाय।

१०. यहि कथा मे वर्णित फैसला करै कै शैली आप का कइसन लाग, तर्क सहित उत्तर दिहा जाय।

पढाई

११. पाठ के हरेक अनुच्छेद का वसरीपारी सस्वर वाचन करा जाय।

१२. पढ़ा पाठ के आधार पर सुन्दर से सम्बन्धित पाँच ठू बुँदा लिखा जाय।

१३. पाठ कै मौन पठन किहा जाय औ रामदीन कै दुर्दशा होयक कारण लिखा जाय।

१४. नीचे दइ गवा अनुच्छेद का पढ़ा जाय औ पुछि गवा प्रश्न कै उत्तर दिहा जाय। छोटेलाल यादव कै छोट घर, वनके घारी मे आज भँइसि नाही है। घारी साफ कइकै बरातिन का आराम करै खातिर गाँव भर कै खटिया जमा कइकै बिछाये हैं। घारी के चारो कोना पर खटिया के ओर घुमाई कै खड़ा पङ्खा, पहुनन कै अगोराई मे बेचैन जेस देखात है। पूरा अङना तोपि कै टेन्ट लगावा है। टेन्ट के भीतर कै झिलमिल बत्ती खुशीयाली मे एक विशेष किसिम कै रौनक लाय दिहे जेस लागत है। प्लाष्टिक कै कुर्सी औ आवै जाय वाले अतिथि कै नास्ता पानी के खातिर लगावा टेबुल से पुरै अङना भरा है। घर के छत पर धरा साउन्ड बक्सन से निकरा हिन्दी गीतन कै तरंग से छोटेलाल कै पुरै गाँव संगीतमय बना जेस लागत है। घर से दुइ सौ मीटर आगे सड़कि के किनारे जेनरेटर चलत है। जनरेटर से थोरै आगे, घर के आगे 'स्वागतम् औ शुभविवाह' लिखा तुल टाडिकै आकर्षक गेट बनावा है। सड़कि के दुनौ ओर लगावा मर्करी यक्कै दिन के खातिर सही, गाँव का अँजोर किहे है। मर्करी के अँजोर मे लरिके बिटियै खुशियाली के साथ खेलत हैं। युवा औ उमिर दराज लोग घर के पिछवारे खरिहान मे लगावा भिडियो देखै मे मस्त देखात हैं। छोटेलाल घरी बरातिन के

खातिर तइयार होत चउका के ओर जात हैं, घरी मूल घर मे काव होत है, देखत हैं । घरी बाँकी बचा काम का करै के खातिर लोगन का सतर्क करावत हैं ।

(वासु जमरकट्टेल : बासी खवाई कथा कै अंश)

प्रश्न :

(क) छोटेलाल यादव कै घर कइसन है ?

(ख) घारी साफ कइकै काव कइ गा है ?

(ग) अङना के से भरा है ?

(घ) लरिके बिटियै औ उमिरदराज लोग काव करत रहें ?

(ङ) छोटेलाल यहर-वहर काव करत हैं ?

१५. फैसला कथा पढै के बाद कवनो निकाय के जिम्मेवार व्यक्ति होय के बाद फैसला करत के ध्यान देय वाली बातिन का समेटि कै १०० शब्द तक एक अनुच्छेद लिखा जाय ।

लिखाई

१६. शुद्ध कइकै लिखा जाय ।

मुस्तफा दउरे के आवा औ सुन्दर से लपटियाय गवा औ कहै लाग भैया मित्र हमका माफ कै देउ हम न जानय काका सोंचे रहेन मगर तुम्हार फइसला हमार आँखी खोल दिहिस फइसला करै वाला कोई केर नाई होत है खाली सत्य औ न्याय के साथे रहत है दूनौ केर मन कै मैल आँसु से धोय गवा ।

१७. नीचे दइ गवा प्रश्न कै संक्षिप्त उत्तर दिहा जाय ।

(क) सुन्दर औ मुस्तफा के बीचे कइसन सम्बन्ध रहा ?

(ख) सुन्दर कै मउसी पहिले कवने गाँव रहत रहीं ?

(ग) सुन्दर के विचार मे फैसला कइसै करैक परत है ?

(घ) रामदीन कइसन व्यापारी रहा ?

(ङ) रामदीन सुन्दर से कइसने फैसला कै आशा किहे रहें ?

१८. फैसला कथा कै पात्र मुस्तफा के जगह पर आप होवा जात तौ का किहा जात ? तार्किक उत्तर दिहा जाय ।

१९. सप्रसंग व्याख्या करा जाय ।

(क) फैसला करब बड़ा कठिन है । तरवार के धार पर चलयक परत है । न्यायकर्ता के खातिर सब बराबर होत है ।

(ख) जानवरन से प्रेम करैक चाहीं औ काम लेयक साथैसाथ उनकै दाना पानी कै व्यवस्थौ करैक चाहीं ।

२०. यी कथा पढ़ैक बाद आप के मन मे कइसन विचार आवत है, तर्क सहित लिखा जाय ।

२१. नीचे दइ गा गद्यांश कै भावार्थ लिखा जाय ।

फैसला करै वाला कोई केर नाई होत है । खाली सत्य औ न्याय के साथे रहत है ।

व्याकरण

२२. नीचे दिहा वाक्य मे रेखांकित क्रियापद अपूर्ण पक्ष कै होंय । हरेक क्रिया पद का बढ़िया से सम्झा जाय ।

(क) हमरे लोग घरे जातै रहेन कि आप कै फोन आइ गै ।

(ख) तुँ जब अइबो तो हमरे खेल खेलतै रहबै ।

(ग) हम जब पहुचेन तो आप किताब लिखतै रहेव । राजु खेल्तै रहें ।

(घ) यी काव, तोहरे अबहिनौ पढतै हौ । उहाँ तोहार माइउ अबहिन पढ़तै हिन ।

(ङ) हम जब घरे आयन तो आप लोग पाठ पढ़तै रहेव ।

(च) हमरे जब कार्यक्रम मे पहुचबै तो नेताजी बोल्तै होइहैं ।

(छ) बगिया मे पहुचत के अब्दुल आम तुरतै रहें ।

(ज) राम अबहिन तक आलु भउरतै हैं ।

(झ) जब आप पहुचबो तब हम जातै होबै ।

उप्पर रेखाङ्कित क्रियापद अपूर्ण पक्ष कै होंय, यी हरेक क्रियापद अपूर्ण भूत, वर्तमान, भविष्य कवने काल कै होंय ? हरेक का अलगअलग तालिका बनाय कै लिखा जाय ।

२३. पाठ से पाठ क्रियापद चुना जाय । हरेक का अपूर्ण पक्ष के तीनौ काल मे बदलिकै लिखा जाय ।

२४. नीचे दइ गवा वाक्यन का अपूर्ण पक्ष मे परिवर्तन कइकै लिखा जाय ।

(क) तोहरे लोग पाठ पढेव ।

(ख) मीना खूब नाचिस ।

(ग) गीता चलि गईं ।

(घ) वैं कहिन रहा ।

(ङ) हम खीसा सुने हन ।

(च) उषा टोपी बिनैक सिखाइन ।

(छ) हमरे लोग पाठ पढि भयेन ।

२५. कल्हिया आप घर पर का का किहे रहेव, एक अनुच्छेद लिखा जाय ।

२६. आज आप का का किहेव, ५० शब्द तक मे एक अनुच्छेद लिखा जाय ।

२७. काल्हि आप का का करबो, ५० शब्द तक मे एक अनुच्छेद लिखा जाय ।

२८. सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) पशुअन के साथ कइसन व्यवहार करैक चाहीं, औ वइसन करै के काहे जरुरी है १५० शब्द तक मे लिखा जाय औ कक्षा मे प्रस्तुत किहा जाय ।

(ख) पशु अधिकार के बारे मे जानकारी लइकै अनुच्छेद लिखा जाय ।

पाठ
९

सुफी सन्त मदार बाबा

- लियाकत अली

१. इस्लाम धर्म मे भक्ति परम्परा के अर्न्तगत सन्त लोगन कै अलग अलग शाखा मध्ये कै एक शाखा से जुड़ा सन्त लोगन का सुफी सन्त कहा जात है । सुफी सन्त लोग सूफीबाद कै पालन करत हैं । यी इस्लाम धर्म कै उदारवादी शाखा होय । सुफी सन्त एक ईश्वर पर विश्वास राखत हैं औ भौतिक सुख सुविधा कै त्याग कइकै धार्मिक सहिष्णुता, मानव प्रेम औ भाइचारा पर विशेष बल देत हैं । सुफी शब्द अरबी भाषा के सूफ शब्द से बना है । अरब क्षेत्र मे अल्लाह के भक्ति औ प्रेम मे अपने आप का समर्पित करै वाले साधु-सन्त लोग ऊनी कै कपड़ा पहिरत रहें । लोभ, मोह, तृष्णा औ भौतिक सुख सुविधा से अलग होइकै अपने आत्मा का शुद्ध औ साफ राखत रहें । अरबी भाषा के सुफ शब्द साफ शब्द से व्युतिपत्ति होइकै बना विश्वास किहा जात है । जवने कै अर्थ होत है ऊन औ शुद्ध । यही नाते सुफ वा साफ शब्द ऊनी वस्त्रधारी या पवित्र आत्मा वाले अर्थ के आधार पर यहि प्रकार कै आहार व्यवहार करै वाले सन्त लोगन का सुफी सन्त कहा जाय लाग । जवन कि बाद मे यन लोगन के समान आचरण, व्यवहार औ मत के आधार पर एक परम्परा के रूप मे प्रसिद्ध होय गवा । जवने का आज हमरे सुफी सन्त परम्परा के रूप मे जाना जात है ।

२. सुफी सन्त लोगन का पीर औ फकीरौ के नाँव से पुकारा जात है । यी लोगन के अनुयायी लोगन मे कुछ विशेष प्रकार कै आचरण औ व्यवहार होत है । जइसै कि पहिले कै आपन खराब काम के प्रति पश्चाताप (तौबा) करै वाला, मन मे संयम (बजा) कै भावना से अभिभूत रहा, अल्लाह के करीब पहुचै कै प्रतिज्ञा(तबकूल) करै वाला, जिन्दगी के खातिर जवन कुछ मिला है, वकरे प्रति सन्तोष(सब्र) होय वाला, खुद कै धन सम्पत्ति सब त्याग कइकै अपने आप का फक्कड(फग्र) बनावै वाला, अल्लाह कै चरम भक्ति (जुहद) करै वाला, अल्लाह के प्रति पूरापूरा समर्पण (रिजा) राखै वाला, अल्लाह से डेर(खौफ) राखै वाला, अल्लाह से कृपा

पावै के खातिर आशा या अपेक्षा(रजा) करै वाला साथै अल्लाह से मिला जीवन के खातिर आभार(शुक्र) व्यक्त करे वाला होय के चाहीं । यहि मेर कै दश आचरण पालन करै वालेन लोग सुफीसन्त के नाँव से जाना जात हैं ।

३. अपने यही दश आचरण के नाते होई, यी लोग अल्लाह से असीम प्रेम भक्ति भाव राखत हैं । अपने प्रेम भाव औ भक्ति के बलपर अल्लाह से निकटता जल्दी मिल जाय कै विश्वास करत हैं । यकरे साथसाथ सुफीसन्त लोग भक्ति गीत और संगीत के माध्यम से लोगन का अल्लाह तक पहुचै कै विश्वास राखै खातिर अभिप्रेरित करत रहत हैं । सुफीसन्त लोगन के द्वारा विकासित सुफीसंगीत एक अलग विश्वविख्यात मौलिक विधा के रूप मे है । यही के माध्यम से सुफीसन्त लोग भक्तिकालिन आन्दोलन का आगे बढ़ाये रहें ।

४. प्रेम औ उदारता सुफीभक्ति अन्दोलन कै मूल भाव होय । सूफीवाद इस्लाम के भीतर एक रहस्यवादी आन्दोलन के रुप मे ईरान देश से शुरु भवा रहा । धीरेधीरे यहि परम्परा कै विस्तार अरब क्षेत्र से लइकै भारत औ अफ्रिका तक फइलि गवा रहा । भक्ति आन्दोलन कै लोकप्रियता दिनानुदिन बढ़तै जात रहा । यकरे पीछे कै पहिला औ सब से महत्त्वपूर्ण कारण भक्ति पन्थ कै सादगी के साथैसाथ यी लोगन के शिक्षा प्रणाली मे सादगी होब रहा तो दूसर कारण यी लोग विचार लेनदेन करै खातिर स्थानीय भाषा कै प्रयोग करत रहें । जवने के नाते यन लोगन के बीचे के समुदाय औ देश के भाषा औ साहित्य पर सुफीविचारधारा कै जबरदस्त प्रभाव परा । यही के प्रभाव से वहिंकै भाषा औ साहित्य समृद्ध बनतै गयें । क्षेत्रीय भाषन मे भक्ति साहित्य प्रचुर मात्रा मे उत्पादित भवा । जवने से यी अभियान लोगन के दिमाग मे नाही, दिल मे स्पर्श किहिस । यहि आन्दोलन कै परिणाम दूरगामी रहा । यी लोग समुदाय मे व्याप्त विभेद का बढ़ावा नाही दिहिन । विभेद कै न्यूनिकरण करत गयें । जवने से समुदाय मे सदभाव कायम करै मे सफलता मिला । समुदाय के लोगन मे आध्यात्मिक जीवन पहिले के तुलना मे बहुतै सरल ढंग से विकसित होत गवा । जवने से तत्कालिन शासक लोग बहुत प्रभावित भवा रहें ।

५. सुफी आचरण औ व्यवहार मे गुरु भक्ति केर बहुत बड़ा मान्यता है । इस्लाम धर्म मे अल्लाह के सिवाय आउर कोई कै प्रशंसा औ भक्ति करब उचित नाय माना जात है । सुफी मत कै लोग गुरू का अल्लाह तक पहुचावै वाले रास्ता देखावै वाला मानत हैं । यही नाते जीवित या मृतक सुफी सन्त लोगन के समाधीस्थल, दरगाह वा मजार पर प्रार्थना औ सम्मान व्यक्त कइकै अर्शिवाद लेय के परम्परा है ।

६. सुफी परम्परा मे गुरू के आचरण औ व्यवहार का उनकै शिष्य (चेला) लोग मानत चलि आये हैं । यहि परम्परा के भीतर मदारिया चिस्ती, सुहारवर्दी, कादिरी, सत्तारी, फिरदौसी औ नक्सबन्दी जइसन अलग अलग सम्प्रदाय कै विकास भवा । यही मध्ये कै मदारिया सम्प्रदाय

के मत कै प्रतिपादक मदार बाबा होंय कहिकै विश्वास किया जात है । यी मदार बाबा के मजार अर्थात समाधीस्थल औ दरगाह जहाँजहाँ यी गयें वा साधना किहिन, उहाँ उहाँ बना है ।

७. ईस्लाम परम्परा मे मजार कै मतलब सुफी सन्त लोगन कै समाधीस्थल वा उनके यादगारी मे बनावा गवा स्मारक वा मजार होय । लुम्बिनी प्रदेश के नवलपरासी जिला के महलवारी बजार से करीब नौ किलोमीटर के दुरी पर दुम्कीबास के लगे पहाड़ पर मदार बाबा कै दरगाह बना है । कुछ लोगन कै विश्वास है कि मदार बाबा यहि जगही पर आय के साधना किहे रहें । यहि जगही पर हरेक सालि फागुन महीना के कृष्ण पक्ष कै छठ से चर्तुदशी तिथि तक मेला लागत है । यहि मेला मे उनकै अनुयायी लोग चादर चढ़ावत हैं औ श्रद्धा भाव से सर्मपण करत हैं । यही के साथै-साथ अपने अनुकुल के समय मे कवनो दिन भक्तजन मदार बाबा के दरगाह पर आवा जावा करत हैं । मदार बाबा के जन्म के बारेम कहा जात है उनकै पइदाइस उच्च कुलीन घर मे प्राचीन देश शाम अर्थात आज के सिरिया देश कै हलब शहर मे भवा रहै । यनके बाप कै नाँव हजरत अली हल्वी औ महतारी कै नाम बिबी फातिमा सनिया होय । यिनकै जन्म कै नाम बढिउद्दीन अहमद रहा । यी विश्वास किहा जात है कि यन छोटै उमिर मे इस्लामी दिक्षा लेयक बाद चौदह वर्ष के उमिर में हज यात्रा कै लिहिन रहै ।

८. हज यात्रा के दौरान मे मदीना पहुचि कै सुफी परम्परा कै शिक्षा लिहिन रहै । सूफीसन्त होई जायक बाद में यिनका हजरत शैयद अहमद जिन्दा शाह मदार के नाम से जाना जाय लाग । यिनकै अनुयायी लोग यिन्है मदार बाबा या मदार शाह बाबा कहत हैं । मदार बाबा के दरगाह पर सब लोग बड़े श्रद्धा औ भक्ति भाव से आशीर्वाद लेय औ मन्नत मानै जात हैं । बतावा जात है कि मदार बाबा अपने जीवन काल के आखिरी समय अर्थात १४वीं शताब्दी के आसपास नेपाल के नवलपरासी क्षेत्र के पहाड़ पर आये रहें औ जहाँ दरगाह बना है वहि जगही पर चालिस दिन तक साधना किहिन रहै । वही समय से उनके यादगार मे यिहा मेला लागत आय है । सुफी सन्त लोग निरन्तर देश देशाटन करा करत रहैं । घुमन्ता जिन्दगी मे रहै वाले मदार बाबा कै दरगाह पड़ोसी मुलुक भारत के कानपुर शहर के नजदीक मकनुरौ मा है । नेपाल के पहाड़ी औ जङ्गली क्षेत्र मे बना यहि दरगाह पर लोगन कै धार्मिक आस्था औ अगाध विश्वास है ।

९. सुफी सन्त लोगन से विकास भवा विचारधारा का सूफीबाद कहा जात है । समुदाय, समाज औ देश मे यी लोग कै विशेष प्रभाव रहा । सुफी सन्त के प्रयास से तत्कालिन समय मे धार्मिक कट्टरता का कम करै मे विशेष मदत मिला । यी लोगन के मृत्यु के बाद बना कब्र पर मुसलमान के साथ-साथ हिन्दुवो लोगन कै आस्था औ विश्वास के साथ प्रार्थना करत रहें औ अबहिनौ करत हैं । ईश्वर से एकाकार मे ऊ लोगन कै विश्वास हिन्दु औ इस्लाम धर्मावलम्बी

लोगन के बीचे कै आपसी मतभेद का दूर करै मे मदत किहिस । येकर उदाहरण हमरेन के समुदाय मे कब्बो हिन्दु औ मुस्लिम समुदाय के बीचे मतभेद नाही भवा है । समाज कल्याण कै बाति करत के ऊ लोग अनाथालय औ महिला सेवा केन्द्र खोलैक काम आगे बढ़ाइन । सुफी सन्त कै प्रयास रहै कि समानता का बढ़ावा दिहा जाय औ जातिबाद के बुराई का कम करतै लइ जावा जाय । ऊ लोग पवित्रता औ नैतिकता कै भावना का बनावै राखै मे प्रयासरत रहें । कहि जात है, अपने प्रसिद्ध औ सुफी जीवन के कारण कुछ प्रसिद्ध सुफी सन्त उदारवादी नीति कै पालना करै के खातिर वहि समय के सुल्तान लोगन का प्रेरित किहे रहें ।

१०. सन्तन लोग कै रुची कै विषय कला औ सहित्यौ रहा । सुफी सन्त लोग गीत, संगीत औ सँस्कृति का वतनै लोक प्रिय बनाये रहें । सुफी सन्त के याद मे बनाय गवा पवित्र स्थान एक नवाँ वास्तुकला के रूप मे विकसित भवा है । अइसै यी लोग से लिखि गवा भक्ति साहित्य, गीत आदि का सहित्य के अनुपम नमूना के रूप मे लइ सका जात है । यी लोग अवधी लगायत अलग अलग भाषा मे आपन साहित्य कै रचना किहे हैं ।

११. मदार बाबा कै अबहिन तक कवनो लिखित साहित्य नेपाल मे नाही उपलब्ध होई पाये है । यनसे सिर्जना कइ गवा मौखिक साहित्य अबहिनौ लुम्बिनी प्रदेश के समुदाय मे व्याप्त है । यी लोग भक्तिकालिन आन्दोलन का आगे बढ़ाये रहें । सन्त कबीर जेस लोग सुफी सन्त लोगन का बहुत आदर भाव के साथ देखत रहें । यी लोग का समुदाय मे मानवीय मूल्यमान्यता का स्थापित करै मे सफल रहें । मदार बाबा यिहै आस्था औ भक्ति कै केन्द्र होय ।

शब्दार्थ

भक्ति : अनुराग, प्रेमपूर्ण विश्वास

परम्परा : निरन्तर चलि आवा रीतिरिवाज

समर्पित : जवन समर्पण कइ गा होय

अनुयायी : शिष्य, चेला,

निकटता : नजदिकी, सामिप्यता

मजार : समाधि, मकबरा,कब्र

समाधीस्थल : समाधि बनाय गवा जगह

यादगारी : स्मारक

आन्दोलन : अभियान

परिणाम : प्रभाव, असर, नतिजा

पन्थ : सम्प्रदाय

समृद्ध : वैभवशाली, विकसित

हज यात्रा : मुस्लिम समुदाय से कइ जाय वाला तीर्थ यात्रा

मदिना : मुस्लिम समुदाय कै प्रसिद्ध तीर्थस्थल

वास्तुकला : वास्तु, मकान, महल आदि बनावैक कला

उदारवादी : कवनो किसिम कै मतभेद या विभेद न रहा विचारधारा वालेन कै समूह

सुफीवाद : सुफी सन्त लोग से आगे बढाय गवा विचार धारा

मतभेद : फरक मत, भिन्न विचार

मन्नत : मान मनौती, इच्छा

आखिरी : अन्तिम, अन्तिम अवस्था कै

दरगाह : मकबरा, दरबार

आस्था : विश्वास

अभ्यास

सुनाई

१. निबन्ध कै पहिला अनुच्छेद सुना जाय औ सूफीसन्त के बारे मे बतावा जाय।

२. निबन्ध कै दुसरा अनुच्छेद सुना जाय औ यी लोगन के आचरण के बारे मे कहा जाय।

३. निबन्ध कै तिसरा अनुच्छेद सुना जाय औ नीचे दइ गवा प्रश्न कै उत्तर दिहा जाय।

(क) सुफी सन्त लोगन कै प्रमुख विशेषता काव होत है ?

(ख) ऊ लोग केह पर विश्वास करत हैं ?

(ग) ऊ लोग कइसै प्रेरित करत रहत हैं ?

(घ) सुफी संगीत कइसने विधा के रूप मे है ?

(ङ) ऊ लोग केतके माध्यम से भक्तिकालिन आन्दोलन का आगे बढ़ाये रहें ?

४. निबन्ध कै नववाँ अनुच्छेद सुना जाय औ वोकर सारांश कहा जाय।

बोलाई

५. नीचे दइ गवा शब्दन कै ठीक से उच्चारण किहा जाय ।

आन्दोलन, साहित्य, समृद्ध, सादगी, धर्म, सुल्तान, विकास, व्यवहार, भक्ति, विधा, विशेषता, मन्नत, दरगाह, मतभेद, मदिना, परिणाम, मजार, समाधि ।

६. पाठ के आधार पर मदार बाबा के जीवन के बारे मे कहा जाय ?

७. दिहा शब्द प्रयोग कइकै वाक्य बनावा जाय ।

समाधिस्थल, मजार, दरगाह, सन्त, साहित्य, मदिना, सादगी, भक्ति, विधा, नवलपरासी, आखिरी, उदारवादी

८. पाठ कै चउथा अनुच्छेद सस्वर वाचन करा जाय औ ऊ पढ़ै मे आप का केतना समय लाग, साथी से पुछा जाय ।

९. फरक फरक दुइ संस्कृति के साथी लोगन के बीच बातचीत कइकै हावभाव सहित कक्षा मे प्रस्तुत किहा जाय ।

१०. सुफी सन्त के बारे मे आपन धारणा सुनावा जाय ।

पढ़ाई

११. पाठ कै सब अनुच्छेद वसरीपारी सस्वर वाचन किहा जाय ।

१२. नीचे दइ गवा अनुच्छेद वसरीपारी पढ़ा जाय औ पुछि गवा प्रश्न कै उत्तर दिहा जाय ।

बहुत वर्ष बाद, लगभग पाँच दशक बाद आज यहि जगह पर खड़ा हन । मेला के खातिर नितान्त नवाँ होय गा है यी राप्ती कै बालुरेत । यी बालुरेत अपने पेट भीतर बहुत बाति लुकुवाये है । आज के जानि पावत है ऊ दिन औ वही दिन कै बाति । जुग होय गवा, यी धरती आपन आकार बदलत यहिँसे वहीँ तक फइलत गवा है । कब्बौकाल उचास कै माटी छोड़त सङ्कुचितव होय गा होई ।

यी सदानीरा कहि जाय वाला ऐरावती रावती, राप्ती होतै आपन सांस्कृतिक छाप छोड़त अविरल बहति हीं लेकिन पानी कै गहिर, निलहा, निर्मल स्रोत निरन्तर सुखात जात है- वर्षायाम मे हाहाकार मचावत कनुवान,मटिहा पानी कै प्रवाह बाहेक । आज जवने जगह पर हम खड़ा हन, ऊ जगह कवनो समय हमार जिन्दारी कहि जात रहा । बहुतै बड़वार औ फइला गाँव रहा यी । यहिसे पूर्व बड़ा बड़ा गाँव रहा औ उलोग कै आयस्रोत रहा उब्जाउ

खेत । पता नाही, अब तौ सब निगलि चुका है राप्ती । उकास से छुटा बलुहा माटी रहा नवाँ नवाँ सिवान बनत गवा, जवने के चारो ओर बलुहा भाठा है । नवाँनवाँ गाँव बना, पुरान बिलै होय गवा ।

हमार आजा कहत रहें,'तुमका मालुम नाही होई, हमरेन के गाँव से लगभग पाँच कोशपर एक गाँव रहा बालापुर । वही गाँव के गर्भ मे यहि क्षेत्र के सांस्कृतिक इतिहास लुकान है । कवनो समय वहीं बौद्ध काल कै ब्रह्ममण राज्य रहा कहत रहें । कपिलवस्तु के शाक्य गणतन्त्र से निरन्तर सङ्घर्ष होत रहा । कपिल मुनि कै चेला लोग यहिँ निरन्तर यज्ञादि करत रहें । ब्रह्ममुहूर्त से वैदिक मन्त्रोच्चारण से गुञ्जायमान होत रहा यहि क्षेत्र मे । सदानीरा ऐरावती शान्त औ गम्भीर होयकै बहति रहीं .....। कर्मकाण्डमय रहा यी क्षेत्र ।'

(सनत रेग्मी)

(क) आज केतना दिन बाद लेखक वहिं खड़ा हैं ?

(ख) ऊ बालुरेत अपने पेट मे काव लुकुवाये है ?

(ग) पानी कै कइसन स्रोत सुखात जात है ?

(घ) उनकै आजा कवन बाति बताइन रहा ?

(ङ) राप्ती किनारे काव काव होत रहा ?

१३. पाठ के तिसरा अनुच्छेद कै सारांश लिखा जाय ।

१४. पाठ पढ़िकै पाँच ठु मुख्य बुँदा कै लिखा जाय ।

लिखाई

१५. दिहा शब्द प्रयोग कइकै वाक्य बनावा जाय ।

समाधि, दरगाह, आचरण, गुरुभक्ति, वस्त्रधारी, समर्पण, डेर, विश्वास

१६. नीचे दइ गवा प्रश्न कै संक्षिप्त उत्तर दिहा जाय ।

(क) कइसने सन्त लोगन का सुफी सन्त कहा जात है ?

(ख) सुफी सन्त लोगन कै खास-खास विशेषता काव होंय ?

(ग) यी लोग समुदाय मे कइसन परिवर्तन लावैक सफल रहें ।

(घ) सुफी सन्त लोग कवने आन्दोलन का साथ दिहे रहें ?

(ङ) केकर लिखित इतिहास उपलब्ध नाही है ?

१७. मदार बाबा कइसन सन्त होयँ, उनके प्रति समुदाय मे लोगन कै आस्था भक्ति कइसन है ? आपन विचार सहित लिखा जाय ।

१८. समुदाय मे कइसन किसिम कै सांस्कृतिक विकृति पावा जात हैं, वोका कइसै व्यवस्थापन कइ सका जात है, तर्क सहित पुष्टि किहा जाय ?

१९. भावार्थ लिखा जाय ।

(क) अधिक से अधिक प्रेम भाव औ भक्ति से अल्लाह से निकटता जल्दी मिल जाय केर विश्वास करत है ।

(ख) ईश्वर के एकता मे ऊ लोगन कै विश्वास आपसी मतभेद का दूर करै कै मदत किहिस ।

व्याकरण

२०. नीचे दिहा शब्द मध्ये कवन समस्त शब्द औ कवन द्वित्व शब्द होय, चीन्हि कै अलग अलग सुची मे लिखा जाय ।

अँखफोरवा, गाँवैगाँव, पनियैपानी, भुखमरी, गरगहना, शोकाकुल, खर्चबर्च, चिडियाघर, काचकुच, पितृसेवा, राष्ट्रपिता, मीठैमीठ, काटाकाट, कथाकहानी, लेखाजोखा, कामकाज, जसअपजस

२१. पाठ मे से पाँच समस्त शब्द चीन्हि कै लिखा जाय ।

२२. पाठ मे से पाँच द्वित्व शब्द चीन्हि कै लिखा जाय ।

२३. नीचे दिहा समस्त पद कै विग्रह किहा जाय ।

सौपचास, खेलकूद, हरसाल, आज्ञानुसार, यथासंभव, पापपुण्य, शिक्षादिक्षा

२४. नीचे दिहा द्वित्व शब्द कै प्रयोग कइकै दुइ दुइ वाक्य बनावा जाय ।

बूँदवूँद, पीछेपिछे, रोटीओटी, घरवर, काटाकाट

२५. सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) अपने का जानकारी रहा कवनो धार्मिक स्थल के बारे मे निबन्ध लिखा जाय ।

(ख) कक्षा के विद्यार्थी लोग पाँच-पाँच जने कै समूह बनाइकै, हरेक समूह के लोग दुइ-दुइ ठु जीव-जानवर औ पेशा-व्यवसाय से सम्बन्धित लोक कथा सङ्कलन किहा जाय औ कक्षा मे प्रस्तुत किहा जाय ।

पाठ
१०

औतार देई चौधराइन

-सच्चिदानन्द चौबे

१. बाँके जिला के नेपालगन्ज कै त्रिभुवन चौक निवासी रहीं। दानवती औतार देई चौधराइन कै जन्म बि.सं. १९५४ मइहाँ भारत उत्तर प्रदेश गोंडा जिला के उतरौला कस्बा मइहाँ एक सम्भ्रान्त कसौंधन परिवार मइहाँ भवा रहै। उनकै पिता गुरु प्रसाद कसौंधन अपने समाज कै एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहें। बाँके जिला कै त्रिभुवन चौक नेपालगन्ज कै लक्ष्मीनारायण चौधरी के साथ विवाह सुसम्पन्न भवा रहै। आप के कइउ सन्तान भये रहें, लेकिन कोई जीवित नाही बचें। विधि कै विधान केहु नाही टार सकत है। कुछ दिन के फरक मइहाँ इनकै ससुर अउर पति दुनौ जनें गुजर गयें। वोकरे बाद चौधराइन अकेल जीवन व्यतीत करै लागीं। आपन पारम्परिक व्यापार व्यवसाय औ समाज सेवा मे जीवन के आखिरी तक लाग रहि गई।

२. आप कै जीवन भक्ति भाव औ समाज सेवा मइहाँ व्यतित होय लाग। आपन कवनो उत्तराधिकारी न होय के नाते हमेशा चिन्तित रहत रही। आप का आपन अपार चल-अचल सम्पति कै समुचित व्यवस्थापन करैक चाहत रहा। विशेष कइकै सम्पूर्ण सम्पति धार्मिक औ सामाजिक सुधार के काम मइहाँ खर्च करै चाहत रहीं। उनकै परिवारिक सम्बन्ध नेपालगञ्ज के प्रतिष्ठित समाज सेवी औ व्यापारी कृष्णगोपाल टण्डन के घरे से रहै। यहि विषय मे वनही से राय, मसवरा, औ सल्लाह करै लागीं। अइसै करतै जात के यहि अभियान का आगे बढावैक एक समूह बनि गवा। समूह कै अगुवाई औतार देई चौधराईन करै लागीं।

३. चौधराइन कृष्णगोपाल टण्डन के महतारी से औ पंडित महाविर प्रसाद चौवे से राय सल्लाह लिहा करत रहीं । अउर उन से अपने मन कै व्यथा सुनावत एक मन्दिर बनुवावै के कहिन । कृष्ण गोपाल टण्डनौं जी वहीं बइठा रहें । यी सुनिकै टण्डन जी कहिन, "मन्दिर कै निर्माण करावै से अच्छा तो, जहाँ परिहा जीवित देवतन कै जन्म होय, वइसन मन्दिर खड़ा करब ठीक रही ।" चौधराइन पूँछिन, "अस का करी जिससे तुम्हार बाति सत्य होई जाय ?" टण्डन जी उनका विद्यालय बनुवावै खातिर उत्प्रेरित किहिन ।

४. चौधराइन का टण्डन कै विचार उचित लाग । आप यहि काम कइहाँ सुसम्पन्न करावै खातिर अपने ओर से पूर्ण सहयोग करैक प्रतिबद्धता व्यक्त किहिन । वैं अपने सम्पत्ति कै एक गुठी बनाय दिहिन । जिकै अध्यक्ष कृष्ण गोपाल टण्डन अउर सदस्ययन मइहाँ फत्तु हलवाई, बद्री मुनीम, छोट्टन मेडई, राम प्रसाद डेवा रहें । विद्यालय बनावै खातिर जगह के साथेन ग्यारह सौ सोने कै असरफी टण्डन का दइ दिहिन । टण्डन दुइ महीना मइहाँ चार कोठा कै पक्का भवन निर्माण कराय दिहिन औ उकै समुद्घाटन वि.सं.१९९२ साल बसंत पञ्चमी (सरस्वती पूजा) के दिन किहिन । यी सभा नेपालगन्ज मइहाँ राणा शासन काल मे भवा, जवने मे बजार के गणमान्य व्यक्ति लोग सम्मिलित भये रहें ।

५. टण्डन जी के उत्प्रेरणा औ सहयोग से औतार देई चौधराइन कै चाहना अउर सशक्त होय गै रहा । लेकिन वहि समय तक ऊ क्षेत्र नयाँ मुलुक के रुप मे परिचित रहा । यातायात कै कवनो साधन नाही रहा । बयलगाड़ी औ टाँगा मुख्य साधन रहा । अधिकांश क्षेत्र घना जंगल से घेरा रहा । बस्ती वाले क्षेत्र मे कवनो भौतिक संरचनो नाही रहा । यतनै भर न होइकै नेपाल सरकार अपने खुद शिक्षा मे ध्यान नाही दइ पाये रहा । अइसन अवस्था शिक्षा कै अभियान का आगे बढाइब कवनो बड़वार चुनौती का न्यौता देय से कम नाही रहा । तब्बो सब कै साथ औ सहयोग लइकै अपने उद्देश्य का आगे बढ़ावै लागीं । यहिसे यी स्पष्ट होत है, चौधराइन दानशीला औ विदुषी महिला मात्र नाही रहीं बल्की वय अपने उद्देश्य पर अड़िग रहैवाली एक विरङ्गना रहीं । वहिकै घना जंगल औ अन्य भौतिक समस्या नाही रोकि पाइस । औ अपने अभियान कै विस्तार करत आगे बढतै रही गईं । वास्तव मे आप एक कुशल व्यवस्थापक औ आर्दश समाज कै निर्माणकर्ता रहीं ।

६. नेपालगञ्ज मे खोलि गा विद्यालय कै प्रधानाध्यापक नेपालगन्जै निवासी पं.योगेश्वर प्रसाद मिश्र बनें । यी लोग विद्यालय स्वीकृति के खाातिर प्रयास किहिन । तत्कालिन सरकार यी शर्त राखि दिहिस कि विद्यालय मइहाँ प्रधानाध्यापक सहित अन्य अध्यापक कै नियुक्ति सरकार अपने खुदै करी । जिका चौधराइन, टण्डन औ पं.योगेश्वर प्रसाद मिश्र जी अमान्य कै दिहिन । उकै फलस्वरुप विद्यालय मइहाँ सरकारी ताला लगाय गै अउर विद्यालय अनिश्चित काल के खातिर बन्द होई गै । बाद मइहाँ जब टण्डन राजसभा कै सदस्य भयें तब उनके प्रयास से

वि.सं.२००८ साल मइहाँ नारायण विद्यालय कै स्थापना भवा । जवन वि.सं. २००९ साल मइहाँ नारायण निम्न माध्यमिक विद्यालय औ वि.सं.२०१० साल मइहाँ नारायण माध्यमिक विद्यालय कै स्वीकृत मिला ।

७. यही क्रम मइहाँ दानबहादुर सिंह कइहाँ प्रधानाध्यापक बनावा गै । उन जिला कै भ्रमण किहिन अउर शिक्षा कै एक योजना बनावै खातिर प्रस्ताव रक्खिन । जिका चौधराइन अउर टण्डन सहर्ष मानि गयें । वहर पं.योगेश्वर मिश्र जी कन्या पाठशाला औ प्रेम पुस्तकालय कै निर्माण करै खातिर प्रयासरत रहें । वि.सं. २०१० साल मइहाँ वहि योजना कै नाम "नारायण शिक्षा प्रसार योजना" रक्खा गै । जउन व्यापक शिक्षा प्रसार मइहाँ योगदान दिहिस । यी योजना शिक्षक मनोनित कइकै गाँव-गाँव मे पढ़ावैक पठवत रहा । यहि मेर से मनोनित होइकै पढ़ावै जाय वाले शिक्षक लोग का आर्थिक सहयोग करत रहा । यकरे साथै साथ अउर सम्भ्रान्त लोग का सहयोग करैक प्रेरित करत रहा । वहि समय यहि योजना से लगभग अस्सी ठु प्राथमिक शिक्षा केन्द्र सञ्चालित रहा । येकर क्षेत्र वीरगंज से बर्दिया तक रहा । पढ़ावै के खातिर कवनो भौतिक स्थायी संरचना नाही रहा । मनकारी समाज के अगुवा लोग के सहयोग मे यी काम निरन्तरता पाये रहा । समाज के जागरूक औ विद्वत वर्ग यहि अभियान कै सारथी रहें । यहू घरि नारायण माध्यमिक विद्यालय नेपालगञ्ज मे सञ्चालित है । यी विद्यालय विद्यार्थी का विभिन्न पुरस्कार आदि कै व्यवस्था किहे है । औतार देई चौधराइन के यहि अभियान से यी स्पष्ट होत है, वही समय पश्चिम तराई के शिक्षा कै केन्द्र बाँके जिला रहा ।

८. वि.सं. २०११ साल मइहाँ नारायण इन्टर कालेज कै स्वीकृत मिला, वि.सं.२०१२ साल मइहाँ आई-एस्सी कै स्वीकृत मिला, उके बाद मइहाँ बड़ा राजनीतिक के दाँव-पेंच चला । जिकै फलस्वरुप दानबहादुर सिंह सञ्चालक औ प्राचार्य श्यामलाल पाण्डेय कइहाँ सरकार से देश निष्कासन कै खातिर आदेश भवा । उनके जाय्क बाद मइहाँ भुनेश्वर नेपाली प्राचार्य बने । ऊ ६ महीना तक रहें । उके बाद मइहाँ पशुपतिदयाल श्रीवास्तव प्राचार्य भयें । बि.सं. २०१८ साल मइहाँ यहि विद्यालय कइहा नारायण डिग्री कालेज कै स्वीकृत मिला । वि.सं.२०२४ साल तक दिन मइहाँ माध्यमिक अउर रात मइहाँ डिग्री कै पढ़ाई होत रहै । यी विद्यालय मइहाँ जगह कै अभाव देखिके चौधराईन अपन जगह डिग्री कालेज बनवावै के खातिर टण्डन कइहाँ सउपि दिहिन । वही साल राजा महेन्द्र सरकार के द्वारा अलग से डिग्री कालेज बनावै खातिर रु. ६ लाख रुपया अउर लगभग ५० हजार रुपया महेन्द्र पुस्तकालय निर्माण करैक खातिर मिला । दुनौ संस्थन कै कमेटी मइहाँ लगभग वनही लोग सञ्चालक रहें । उन लोग नवाँ निर्माण के बजाय पुरानै संस्था मइहाँ यी पइसा कै लगानी कइकै नाम परिवर्तन करैक खातिर प्रस्ताव पारित कै दिहिन । नारायण अउर प्रेम के स्थान परिहा 'महेन्द्र' नाम परि गै औ जोरिकै नवाँ संस्थन कै जन्म भवा । वहि समय से नारायण डिग्री कालेज कै नाँव परिवर्तन होइकै महेन्द्र बुहमुखी क्याम्पस औ प्रेम पुस्तकालय कै नाँव बदलिकै महेन्द्र पुस्तकालय होय

गवा । "नारायण शिक्षा प्रसार योजना" से सञ्चालित जेतने प्राथमिक शिक्षा केन्द्र रहा । ऊ संस्था सब विभिन्न व्यक्ति के नाँव से नामकरण होई गवा । यहि घटना से अवतार देई के दिल पर चोट पहुचा । यतनै भर नाही, विद्यालय सञ्चालक समिति के लोग ठीका मे डिग्री कालेज निर्माण करै के ठेकेदार जुम्ली सुब्बा का दिहिन ।

९. चौधराइन एक धर्म परायण विदुषी औ दानशीला रहीं । प्रतिदिन प्रातःकाल ४ बजे उठत नित्यकर्म से निवृत होई कै स्नान करत रहीं । फिर बडे उच्च स्वर मइहाँ भजन गावत रहीं । दानशीला चौधराइन प्रत्येक वर्ष विद्यालय स्थापना दिवस के अवसर परिहा एक कुन्टल लड्डू बँटावत रहीं । जब से विद्यालय कै नाम नारायण डिग्री कालेज से बदल के महेन्द्र डिग्री कालेज होय गवा, तब उनके मन मे दुःख लाग औ तब्बै से लड्डु बँटावै के काम बन्द कराय दिहिन । वहि समय तत्कालीन भेरी अञ्चल कै अञ्चलाधीश सत्य नारायण झा चौधराइन के घर गयें अउर उनसे कहिन,"कोई चीज आप कइहाँ खटका है तौ हमका बतावा जाय ।" तब चौधराइन कहिन कि "हम अपन सम्पूर्ण दान दिया सम्पत्ति कै गुठी बनाय दिया है । जिकै अध्यक्ष कृष्ण गोपाल टण्डन, सदस्य मे फत्तु हलवाई, बद्री मुनीम, छोट्टन मेडई औ लखन हैं । यी सब हम यिनही लोगन के विश्वास परिहा छोड़ि दिया है । अब हम उनके क्रियाकलाप मइहाँ कोई दखलन्दाजी नाय करै चाहित है । विश्वास है जउन करिहैं सब बढ़ियै करिहैं ।" यी बाति सुनिके तत्कालिन अञ्चलाधिश झा जी लउटि आयें । उनके मनके बाति कै कवनो सम्बोधन नाही होय पाइस ।

१०. पश्चिम नेपालगञ्ज से विरगञ्ज तक शिक्षा क्षेत्र मे अपार योगदान देत समाज मे शिक्षा कै प्रकाश देयक काम किहिन । जीवन के अन्तिम समय तक समाज सेवा उनके जीवन कै पर्याय बनिकै रहि गवा । औतार देई चौधराइन के सेवा भाव यहि किसिम कै समाजसेवा करै वाले सबके खातिर उदाहरणीय है । आजौ उनकै नाँव लेत के श्रद्धा से शिर झुकि जात है । यी मेर कै सदाचार, औ दुसरे के सुख-दुःख मे साथ देत आई चौधराइन जीवन के अन्तिम समय मइहाँ अयोध्याधाम बास मे चली गईं । हुआँ उनकै वि.सं.२०२८ साल भादौं महिना के ६ गते ७४ वर्ष के उमिर मइहाँ स्वर्गबास होई गवा ।

११. औतार देई चौधराइन से चलाय गवा समाज सेवा कै अभियान उनकै अनुयायी लोग अबहिनौ करत है । उनकै पारिवारिक सदस्य औ सगा-सम्बन्धी लोग, अपने समाज के सहकार्य में औतार देई चौधराइन फाउण्डेशन कै गठन कइकै समाज सेवा काम करत हैं । येसे काव स्पष्ट होत है कि इन्सान कै भले आपन सन्तान न होयं, उनसे कइ गवा सत्कर्म अनेक उत्तराधिकारी समय के साथ पयदा कइ देत है । आप के काम कै मूल्याङ्कन करत के यी महशुश होत है, जइसै आप कै नाँव रहा औतार देई चौधराइन, तइसै आप माता शारदा कै अवतार रहीं ।

शब्दार्थ

निवासी :	रहै वाला
सम्भ्रान्त :	हरेक किसिम से सम्पन्न
पारम्परिक व्यापार :	जातीय पेशागत करोबार
प्रतिष्ठित :	सम्मानित, नाँव चला
यिकै :	यकर, यहिकै
उकै :	वकरे, वहिके
जिकै :	जवने कै
उत्तराधिकारी :	अपने बाद कै हकवाला, जकरे मे जन्मै से हक वाला होय ।
समुचित :	उचित, न्यायपूर्ण
गणमान्य :	सम्मानित, भद्रभलादमी
भ्रमण :	यात्रा
दाँव-पेंच :	जालझेल, गलत नियत से कइ जाय वाला गतिविधि
अमान्य :	जवन मानै लायक या स्वीकार करै लायक न होय
दखलन्दाजी :	हस्तक्षेप, रोकटोक
स्वीकृत :	पारित, मनोनित
निष्कासन :	निकाला, बहिष्करण
अध्यापक :	शिक्षक, गुरु
प्राचार्य :	प्रधानाध्यापक, अध्यापक लोग कै प्रमुख
सञ्चालक :	चलावै वाले
ठेकेदार :	काम कै जिम्मा लेय वाला व्यक्ति
प्रातःकाल :	भिन्सहरा, सुर्योदय से पहिले के समय
नित्यकर्म :	नियमित कइ जाय वाला काम

भजन :	देवगान, स्तुती
संस्थन :	संस्था कै समूह, एक से अधिक संस्था
विदुषी :	विद्वान, विद्या कै महत्त्व बुझै वाली ।
दानशीला :	बिना कवनो स्थार्थ सेवा करै वाली, आर्थिक सहयोग करै वाली
दान :	बिना कवनो स्वार्थ से सहयोग मे दइ गवा नगद या जिन्सी
गुठी :	सामाजिक संस्था
अञ्चलाधिश :	अञ्चल कै कामकार्यवाही देखै वाला प्रमुख हाकिम
अन्तिम समय :	आखिरी समय, उत्तरार्द्ध
सदाचार :	धर्म औ नीति संगत कइ जाय वाला आचारविहार ।
अयोध्याधाम :	श्रीराम कै जन्मभूमि, अयोध्या नगरी
स्वर्गबास :	मृत्यु, देहान्त
अवतार :	जन्म, प्राकट्य, उतरानाई, अवतरण

अभ्यास

सुनाई

१. पाठ के पहिला अनुच्छेद सुना जाय औ ठीक/बेठीक अलग किहा जाय ।

(क) औतार देई चौधराइन कै जन्म नेपाल मे भवा रहा ।

(ख) उनकै पिता समाज कै प्रतिष्ठित व्यक्ति रहें ।

(ग) उनके बियाह लक्ष्मीनारायण चौधरी के साथे भवा रहा ।

(घ) विधि कै विधान चाहे जे टारि सकत है ।

(ङ) वैं समाज सेवा मे आखिरी समय तक लाग रहि गईं ।

२. पाठ कै दुसरा अनुच्छेद सुना जाय औ नीचे दइ गवा प्रश्न कै उत्तर दिहा जाय ।

(क) औतार देई चौधराइन कै जीवन कइसै बीतै लाग ?

(ख) आप काहे हमेशा चिन्तित रहत रहीं ?

(ग) चल-अचल सम्पत्ति कइसन काम मे खर्च करैक चाहत रहीं ?

(घ) आप कै पारिवारिक सम्बन्ध केकरे घर से रहा ?

(ङ) आप केसे राय-मसवरा करै लागीं ?

३. पाठ के छठवाँ अनुच्छेद कै इमला लिखा जाय ।

बोलाई

४. नीचे दइ गवा शब्दन का शुद्ध से पढ़ा जाय ।

अवतार, सम्भ्रान्त, शिक्षा, अभियान, प्राथमिक शिक्षा केन्द्र, व्यवस्थापन, पारम्परिक, व्यापारी, विरंगना, विदुषी, ठेकेदार, समुचित, संस्कार,

५. औतार देई चौधराइन कै पारिवारिक जीवन कइसन रहा ? पाठ के आधार पर कहा जाय ।

६. औतार देई चौधराइन कै काम आप का कइसन लाग, आपन आपन विचार वसरीपारी कहा जाय ।

पढ़ाई

७. एक एक कइकै हरेक अनुच्छेद का सब जने वसरीपारी पढ़ा जाय ।

८. नीचे दइ गवा अनुच्छेद का पढ़ा जाय औ पुछि गवा प्रश्न कै उत्तर दिहा जाय ।

आज के समय मे शिक्षा का सब क्षेत्र के समृद्धि के खातिर दुवारि के रूप मा जाना जात है । यही से सब मेर कै समस्या के समाधान होय सकत है, कहिकै सब लोग कै एक मत है । आज के समय मे महामारी के रूप मा पनपत गवा महिला हिंसा कै न्यूनिकरण के खातिर शिक्षा मील कै पाथर साबित भवा है । लेकिन वर्तमान मे यी समस्या खड़ा होइ गा है कि शिक्षा कै संख्यात्मक वृद्धि तो भवा देखात है लेकिन गुणात्मक वृद्धिदर बहुत कम है । जउने

से शिक्षा से मिलैवाला उपलब्धी नाही मिलत देखात है । येकर अनेक कारण मध्ये हमरेन कै सामाजिक मान्यता मुख्य कारक होय । यहू मध्ये महिला लोग एक अहम किरदार के रूप मे हिन । जेकरे बिना केहु अपने अस्तित्व कै कल्पना तक नाही कै सकत है । एक महिला कै अनेक रूप होत है । यी लोग दिदी, बहिन, अम्मा, मउसी, बुआ, मामी, भान्जी, भतिजी, सारि, नन्दि, भउजाई, जेठानि, देउरानि, आदि अनेक रूप मे समाज मे विद्यमान हिन् । यी सब हर रूप मे, आपन भूमिका अच्छा से निर्वाह करत हीं । पौराणिक समाज मे महिलन कै विभिन्न देवी दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती आदि कै अवतार मानि जात है । हम लोग के समाज मा महिला अपने जन्म से लइकै मृत्यु तक एक अहम किरदार निभावत रहीं । आपन सब भूमिका मे निपुणता दर्शावै के साथ आज के आधुनिक युग मा महिला पुरुष के साथ कदम से कदम मिलाइ कै आगे बढ़ैक सक्षम हीं । लेकिन तब्बो हमरेन के समाज मा महिला साक्षरता प्रतिशत बहुत कम है । यही के नाते हम्मन के समाज कै बहुतै महिला अलग अलग किसिम से हिंसा कै शिकार होत हीं । शारीरिक औ मानसिक हिंसा समाज मा विद्यमान है । एक महिला खुद महिला से, पुरुष से, परिवार के सदस्य से, समाज से, हिंसा कै शिकार होत आइ हीं । ऊ लोगन से अभद्र व्यवहार होत है । सिरिफ उपरी मन से देवी मानब काफी नाही है । जब तक वैं सब के स्थिति मा सुधार करैक कउनो प्रयास नाही कइ जाई । समाज के महिलन का ध्यान मे राखिकै, ऊ लोगन का जरूरत के अनुसार कै अवसर औ शिक्षा दिक्षा दिहा जाय तौ वैं सब के स्थिति मा सुधार लाय सका जात है । पहिले के तुलना मा तुलनात्मक रूप मा महिला कै शिक्षा औ अवसर मे कुछ सुधार आ है । अक्सर शहर मा यी स्थिति सन्तोषजनक है । ग्रामीण क्षेत्र मा महिला पिछड़ापन के एक मात्र कारण सही शिक्षा प्रबन्ध के व्यवस्था कमजोर होइब है । गाँव मा पुरुषौ आपन जीवन के एकमात्र लक्ष्य दुइ वकत के रोटी के जुगाड़ करब मानत हैं । अइसन माहौल मा पुरुष से महिला सशक्तिकरण कै उम्मीद करब बेकार है । हर महिला का यी विचार करैक चाहीं कि वैं सब आपन क्षमता के पहिचान करै औ यी प्रयास किहा जाय कि अपने परिवार के साथ साथ देश औ समाज के विकास प्रति आपन भूमिका निर्वाह कइ सकत हैं । यकरे खातिर परिवार समाज औ सरकार के भुमिका मुख्य है । परिवार औ समाज महिला का निस्फिकिर होइकै जियै वाला वातावरण तइयार करैक चाहीं औ सरकार के महिला के जीवनस्तर उकासै खातिर ज्यादा से ज्यादा योजना चलावै के चाहीं । यी बदलाव तब्बै सम्भव है, जब सारा समाज एक साथ खड़ा होइकै सकारात्मक रूप से काम करैक चाहीं । यी सब के खातिर शिक्षा एक सशक्त माध्यम होइ सकत है । (शबनम श्रीवास्तव : शिक्षा कै कमी महिला हिंसा कै कारक)

(क) समृद्धि कै द्वार काव होय ।

(ख) आज के समय मे महामारी के रूप मे काव पनपत गवा है ?

(ग) कवने कवने विषय मे सुधार आवा है ?

(घ) परिवार औ समाज का कइसन वातावरण तइयार कइ देय्क चाहीं ?

(ङ) दिहा अनुच्छेद का पढ़िकै पाँच ठु मुख्य-मुख्य बुँदा लिखा जाय ।

९. पाठ कै तिसरा अनुच्छेद पढिकै वकर सारांश लिखा जाय ।

१०. पाठ मे दिहा मितिन का टिपोट करा जाय औ कवने मिति मे काव भवा क्रमबद्ध रूप मे लिखा जाय ।

लिखाई

११. नीचे दइ गवा शब्दन का वाक्य मे प्रयोग किहा जाय ।

व्यापारी, शिक्षा, प्रसार, संस्कार, अगुवाई, अवतार, मन्दिर, यातायात, आखिरी, पर्याय

१३. नीचे दइ गवा प्रश्न कै संक्षिप्त उत्तर लिखा जाय ।

(क) औतार देई चौधराइन कै जन्म कहाँ भवा रहा ?

(ख) आप कै पारिवारिक जीवन कइसन रहा ?

(ग) आपन सब चल-अचल सम्पत्ति का करैक विचार किहिन ?

(घ) "नारायण शिक्षा प्रसार योजना" कै गठन कब भवा रहा ?

(ङ) औतार देइ चौधराइन के नाँव से कवन संस्था गठन भवा है ?

१४. पाठ पढ़ै के बाद औतार देई चौधराइन कइसन व्यक्तित्व होयं, आप से कइ गवा काम उचित या अनुचित कइसन रहा जेस लागत है, तर्क सहित स्पष्ट किहा जाय ?

१५. शिक्षा कै प्रचार-प्रसार के खातिर औतार देई चौधराइन कइसन-कइसन काम किहिन, विवेचना किहा जाय?

१६. सप्रसंग व्याख्या किहा जाय ।

(क) मन्दिर कै निर्माण करावै से अच्छा तो, जहाँ परिहा जीवित देवतन कै जन्म होय, वइसन मन्दिर खड़ा करब ठीक रही ।

(ख) विश्वास है जउन करिहैं सव बढ़ियै करिहैं, यहि विश्वास पर उनका लोगन का छोड़ि दिया है ।

१७. औतार देई चौधराइन के बारे मे पढ़ै के बाद आप के मन मे कइसन विचार आय, बुँदागत रूप मे लिखा जाय ।

१८. भावार्थ स्पष्ट किहा जाय ।

(क) विधि कै विधान केहू नाही टारि सकत है ।

(ख) बड़ा राजनीतिक दाँव-पेंच चला ।

व्याकरण

१९. पद सङ्गति मिलाय कै नीचे दिहा वाक्यन कै पुनर्लेखन किहा जाय ।

सीता घरे जात है। सीता के साथे रामौ हिन । दुनौ जने साथैसाथ चलत है । रास्ता के दुनौ ओर खेत है । किसान खेत जोतत हैं । हम किसान लोगन का खेत जोतत देखित हौ । रामू चाचा रास्ता मे भेटात रहें । हमरे रमुवा चाचा का नमस्कार करित है । रामू चाचा हम्मन का आर्शीवाद देत है ।

२०. कोष्ठ मे दिहा निर्देशन के आधार पर नीचे कै वाक्य बदला जाय ।

(क) लड़का पढ़त है । (स्त्री लिङ्ग)

(ख) किसान जोतत है । (बहुवचन)

(ग) तू पढ़ित हौ । (प्रथम पुरुष)

(घ) हम्मै फूल मने बइठत है । (द्वित्तिय पुरुष)

(ङ) हम पढ़तै होबै । (पूर्ण भूत काल)

(च) हम लोग पाठ पढ़ि भै रहेन । (सामान्य भविष्यत काल)

(छ) हम काल्हि आइत है । (तृतिय पुरुष)

(ज) तैं पढ़ै जा । (सामान्य आदारार्थी)

२१. नीचे दिहा वाक्य मेसे निम्न आदारर्थी, सामान्य आदारार्थी औ उच्च आदारार्थी शब्दन का अलग कइकै लिखा जाय ।

पूजा के बाद जइसै राजा आपन दहिना पैर बढ़ाइकै सिंहासन पर बइठै चाहिन कि सारा पुतली खिलखिलाइकै हँसी परीं । सब लोग का बहुत अचम्हा भवा,'यी बेजान पुतली कइसै हँसी परीं ।' राजा आपन पैर खींच लिहिन औ पुतलिन से पुछिन,'ए सुन्दर पुतली ! सचसच बतावो, तुम्हरे सब काहे हँसिउ ?' पहली पुतली कै नाँव रहा-रत्नमञ्जरी । राजा कै बाति

सुनिकै ऊ बोली,'राजन ! आप बड़े तेजस्वी होवा जात है, धनी औ बलवानो लेकिन यी सब बाति पर आपका घमण्ड है । जवने राजा कै यी सिहांसन होय, वैं दानी, वीर औ धनी होइयु कै विनम्र रहें, परम दयालु रहें ।'

२२. कोष्ठ मे दिहा शब्दन मध्ये उचित शब्द छानिकै लिखा जाय ।

(क) हमार नाँव श्याम ..... । (है, होय, होई)

(ख) हमरे गाँव जावा ..... । (जाब, जाबै, जाई)

(ग) राम औ कृष्ण पोखरवा पर घास काटत ..... । (रहें, रहा, रही)

(घ) अब्दुल काठमाण्डू से गाँव ..... । (आयें, आइन, आवैं)

(ङ) श्याम सुन्दर सर हम्मै गणित.....। (सिखाइन, सिखावा, सिखाइस)

२३. सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) अपने गाँव के समाज सेवी के बारे मे अनुच्छेद लिखा जाय ।

(ख) समुदाय के लोग सहभागी होइकै कइ जाय वाला सामाजिक काम काव-काव होय सकत है । यहिसे समाज मे कइसन प्रभाव परत है । कक्षा मे पाँच-पाँच जने कै समूह बनाइकै प्रत्येक समूह से प्रतिवेदन तयार किहा जाय औ कक्षा मे प्रस्तुत किहा जाय ।

पाठ
११

भोले बाबा कै गाव

१. सुभद्रा अपने बेटवा कै नाँव भास्कर धराये रहीं । ऊ तीन वरिस पहुचै तक कवनो गम नाही रहा । वकरे पास कवन चीजि के कमी नाही है, यिहौ नाही मालुम रहा । वोकर दिनचर्या बड़ा मजेदार से बीतत रहा । घर पर आजाआजी तौ वोका अपने पलक पर बइठाये रहें । काका औ बुआ तौ कवनो चीजि कै कमी होहिके नाही देत रहें । परिवार के लोग कै यिहै साथ सहयोग से सुभद्रा अपने जीवन के एकाकीपन का सीना के एक कोने मे दफनाय लिहे रहीं । नइहरो से वनका भरपूर साथ सहयोग मिलत रहा । भास्कर जस-जस बड़ा होत जात रहा । वनके इच्छा कै पाँख निकरै लाग रहा । 'बड़ा होयक बाद काव बनबो भास्कर ?' जब केहू पूछत रहा, तब जबाफ मे ऊ कहत रहै,'समाज का काम लागै वाला मनई ।' वोकर यी जबाफ वनका भीतर तक हिलाय देत रहा । वैं अतीत के याद मे चलि जात रहीं,'भास्कर गर्भ मे आवै के बाद हमेशा भानू अइसै कहत रहें । लेकिन विधि कै विधान अपने यहि भविष्य कै चेहरा तक नाही देखै के पाइन । सबकुछ कै कल्पनै करत, येका गर्भवै मे हमका जिम्मा लगाइकै अपने अनन्त यात्रा पर चलि दिहिन ।'

२. दिन बितत जात रहा, अब भास्कर बालबिकास कक्षा मे पढ़ै जाय लाग । कक्षा मे अनेक किसिम कै संवाद होत रहा । घर, परिवार, समाज, पसन्द, न पसन्द अनेक विषय पर बात होत

रहा । कुछै दिन मे साथी औ शिक्षक लोग के बीच ऊ घुलमिल होय गवा । सब क्रियाकलाप मे, वोकर सहभागिता सक्रियता रहत रहा । भास्कर कै मेधावी प्रतिभा देखिकै शिक्षक लोग वोका देखतै रहि जात रहें ।

३. एक दिन कक्षा मे सब लोग अपने औ अपने परिवार के बारे मे बतावै लागें । बच्चे वसरी पारी आपन नाँव, अपने अम्मा औ बप्पा कै नाँव, आजा-आजी कै नाँव औ परिवार के अन्य सदस्य कै नाँव बताइन । जब बतावैक वसरी भास्कर कै आय तब ऊ आपन नाँव, अपने अम्मा कै नाँव, आजा-आजी कै नाँव औ काका औ बुआ कै नाँव बताइस । शिक्षक वकरे बप्पा कै नाँव पूछिन । ऊ कहिस,'मिस हमका नाही आवत है ।' ऊ अउर कुछ नाही कहि पाइस । वहि लरिकेन मध्ये एक कहिस,'येकर बाप नाही हैं ।' शिक्षक अपनेव दुविधा मे परि गईं, आखिर वास्तविकता काव होय कहिकै । 'काल्हि घर से पुछिकै आयेव न !' भास्कर से शिक्षक कहिन ।

४. रोज हँसी-खुशी विद्यालय से आवै वाला बच्चा आज गम्भिर औ शान्त होय गै रहा । सब लोग का लागै कि वकर तबियत नाही खराब है । घर कै सदस्य लोग वसरीपारी बहलाय फुसलाय के पुछिन । लेकिन ऊ सब ठीक है, कुछ नाही भवा है, कहत रहि गवा । सन्झा के जब सब लोग यक्कठा भयें, तब ऊ सब के बीच मे सवाल कहिस,'हमरे बप्पा कै नाँव काव होय ?' परिवार के सदस्य लोग एक दुसरे कै मुँह ताकै लागें । सुभद्रा अपनेव कुछ नाही बोलि पाइन । सबका गुमसुम देखिकै ऊ फिर पुछिस,'हमार बप्पा कहाँ चलि गा हैं ? हम से मिलै काहे नाही आवत हैं ?' यतना सुनैक बाद तौ अउर सब के दिमाग पर बल परि गै । वकर आजा कामता प्रसाद वहिँ से उठिकै चलि दिहिन् । कुछ बोलिन नाही पाइन । यी मासुम सवाल कै जबाब कइसै देय....कहाँ से लाई कहिकै सोचै लागें ।

बहुत देर तक अपने सवाल कै जबाब न पावैक बाद दिन भर कै भड़ास निकारैक शुरु किहिस भास्कर, 'आप लोग काहे नाही बतावत हौ ? हमार बप्पा कहाँ गयें । हम से मिलै काहे नाही आवत हैं । हम से काहे रिसियान हैं । आज विद्यालय मे सब लोग पुछिन । हम नाही बताय पायन ।'

५. वकर काका औ बुआ तौ उठिकै चला गये । आजी औ अम्मा रहि गईं, वहिं । बच्चा के चेहरा पर अनेक भाव आवत जात रहा । सुभद्रा का बच्चा कै बाल मनोदशा देखत नाही रहि गवा । तब वैं कहिन,'बाबु, तोहर बप्पा, भोले बाबा के गाँव गा हैं, कुछ दिन बाद अइहैं ।' ऊ फिर पुछिस, 'यी भोले बाबा कै गाँव-घर कहाँ होय ? हमरे बप्पा का काहे अपने घरे बोलाये हैं ?' बाल सुलभ प्रश्नन कै ताँता बढ़तै जात देखि कै सुभद्रा वोका सुतावै के कोशिश करै लागीं ।

लेकिन जब तक ऊ अपने सवाल कै जबाब नाही पाइस, यहरवहर करतै रहि गवा । सुभद्रा का कुछ न कुछ जबाब देहिक परा ।

६. सुभद्रा कहिन,'भोले बाबा कै गाँव बहुत दूर है, वनके घरे बहुत काम रहत है । वही से बोलाय लिहिन है ।'

७. भास्कर,'हाँ, वनकै घर कहाँ दूर है, भोले बाबा कै घर उहै शिवालय तौ होय । हमार बप्पा वहिँ कहाँ रहत हैं ।'

८. सुभद्रा, 'शिवालय तौ वनकै कुटिया होय, वहिँ खाली कब्बौकाल आवत हैं । वनकै घर औ गाँव तौ बहुत बड़ा है, वहिँ बहुतै लोग रहत हैं औ बढ़ियाबढ़िया काम करत हैं ।'

९. 'अम्मा, तब हमरेव चला जाय न, एक दिन, देखै औ बप्पा से मिलै ?' भास्कर कहिन ।

१०. बेटवा कै अइसन प्रश्न सुनिकै विचलित सुभद्रा कहै लागीं,'वहीँ हरकेहू नाही जाय के पावत है, भोले बाबा जब बोलावत हैं, तब्बै जाय के मिलत है, औ वहिँ जाय के बाद तौ बहुतै बढ़िया बढ़िया काम करै के परत है....वकरे खातिर पहिले पढ़ैक परा गुन ढंग सिखै के परा ।'

११. भास्कर, 'अच्छा....तब तौ हम खुब पढ़बै औ ढेरकुल गुन ढंग सिखबै....तब तो चलै केमिली न ?'

१२. तब सुभद्रा आपन पीरा दबावत कहिन,'अच्छा अब सुतौ, बच्चेन का जल्दी बड़ा होइकै ढेरकुल गुन पढ़ै औ सिखै खातिर समय से सुतहुक चाहीं ।'

१३. 'होत है अम्मा ।' यतना कहिकै भास्कर सुतैक कोशिश करै लाग ।

१४. यहर सुभद्रा फिर से अतीत मे चली गईं, 'आज तौ कइसो कइकै येका सुताय दिहेन । फिर दुसरे दिन अइसै सवाल लइकै आई । वास्तविकता कहे पर कहूँ यकरे दिमाग पर गलत असर न परि जाय, न कहे पर कहुँ हम्मै गलत न सोचै लागै जिन्दगी कै, आखिरी सहारा यिहै होय, अउर सब तौ बटोही का चबुतरा पर मिले सहचर जइसै होयं, लेकिन तब्बौ कवनो-कवनो सहचर अइसन होत हैं, बुड़त नइया के खातिर पतवार बनिकै आय परत हैं ।' सोचतैसोचत दिन भर थका वनकै शरीर कब निदिया माई के हवाले होय गै पतै नाही चला ।

१५. भास्कर का अपने बप्पा के बारे मे थोर बहुत मालुम होय लाग । ऊ खुश रहा । जब विद्यालय कै जाय के समय भवा तौ फिर अपने आजा से पुछिस,'अम्मा बताइन है कि हमार बप्पा,

भोले बाबा के घरे चलि गा हैं । हम बड़ा होय के बाद वनसे मिलै जावै । अच्छा आजा, हमरे बप्पा कै नाँव काव रहा ? आज हमहुँ कक्षा मे सब का बताइब ।'

१६. वनकै बाति सुनैक बाद कुछ देर कामता प्रसाद चुप रहें । लेकिन, अपने का सम्हारत कहिन,' बाबु, तोहरे बप्पा कै नाँव भानुप्रसाद चौधरी रहा ।' यतना सुनै के बाद आजा के गाल पर चुम्मा लेत भास्कर विद्यालय के ओर चलि दिहिस । वहि दिन घर पर भवा सब बाति भास्कर शिक्षक का बताइस । सब बाति जानि जाय के बाद शिक्षकौ लोग वही मेर के व्यवहार करै लागें । वनहु सब चाहत रहें कि बच्चा का कवनो मानसिक तनाव न होय ।

१७. अबहिन बढ़िया से पेन्सिल नाही पकरि पावत रहा भास्कर ! लेकिन, लिखै के खुब कोसिस करत रहा । सब लोग, बच्चा पढ़ाई-लिखाई के प्रति उत्सुक है, कहिके बूझत रहें । ऊ विद्यालय मे मौखिक पढ़ाई औ अन्य बाल खेल से ज्यादा लिखैक कोशिश करत रहै । ऊ शिक्षक लोगन से वही मेर बाति करै । कवनो वर्ण, मात्रा कइसै लिखि जात है कहिकै हरदम पुछत रहै । शिक्षक लोग का यी लाग कि हरेक बच्चेन मे सिखाई कै अपनै आपन रुची रहत है । वही से वकरे यहि आदत के बारे मे जानै के प्रयास केहु नाही किहिस ।

१८. थोरैक दिन के प्रयास बाद ऊ लिखि लइगै,'बप्पा, आप का भोले बाबा के घरे गये बहुत दिन होय गै, हम आप से मिलै चाहित है ।' यी यतना वाक्य ऊ बहुतै बेर कापी मे लिखिस । जब कुछ बढ़िया अक्षर बना तब अपने अम्मा औ बुआ का देखाइस औ कहिस,'अम्मा, हम बप्पा के चिठ्ठी लिखे हन, बुआ आप भेज देव न ।' ऊ लोग वोकर चेहरा देखतै रहि गईं । वहि घरि कोई नाही बोलि पाइन । भास्करै ऊ लोगन कै चुप्पी देखिकै तुरन्त कहिस,'आपै लोग कहत हौ न, कि भोले बाबा के गाँव तक बस नाही जात है, यहीसे हम बप्पा से मिलै नाही जाय सकित है ।.....मोटर साइकिल नाही जात है, हवाई जहाज नाही जात है,....हुलाक से चिठ्ठी तो जात होई न, वहिं ।' वोकर बाति सुनिकै सब के चेहरा पर हँसीभाव कुछ देर तक आय, लेकिन तत्क्षण हेराय गवा । सब लोग वकर कुछ दिन के यहर कै क्रियाकलाप याद करै लागें । भास्कर कै लिखा चिठ्ठी वकर बुआ लइ लिहिन । वका लइकै घुमावै बेर्‌हा के ओर चलि दिहिन । बेरहा मे तरकारी तुरतौ के ऊ अपने बप्पा के बारे मे अनेक सवाल करतै रहि गवा । वकर बुआ भुलुवावै के मेर से जबाब देत चली गईं लेकिन, ऊ आउर प्रतिप्रश्न करै लाग ।

१९. घरे आइकै अपने अम्मा कै अलमारी खोलिस औ यहरवहर खोजै लाग । सुभद्रा वका उलटतपलटत देखिकै पुछिन,'बाबु, काव खोजत हौ ?' 'अपने बप्पा कै फोटो खोजित है ।' भास्कर जबाब दिहिस । वकर उद्देश्य जानै के खातिर फिर पुछिन,'बप्पा कै फोटो का करबो ?' 'भोले बाबा के गाँव जाय वाला केहू मिलि गवा तौ, यी फोटो दइकै कहबै, 'यी हमार बप्पा

होयं । यनसे मिला जाई तौ कहि दिहा जाई कि आप कै बेटवा भास्कर आप से मिलै चाहत है ।' अब सुभद्रा, वकरे अइसने बाति-व्यवहारन से एकदम परिचित होय गईं रहीं । अब सब का, वोकर अइसन व्यवहार अटपट नाही लागत रहा, न तौ भीतर तक हिलाय देत रहा । वैं पुछिन,'बाबु, अइसन बाति कहाँ जानि पाये हौ ?' तब भास्कर विद्यालय कै बाति करै लाग,'आज पत्रिका मे, मिस एक ठु बच्चा हेराय गवा सूचना देखाइन रहै । ऊ बच्चा मेला जात के हेराय गवा रहा । अपने अम्मा से वकर साथ छुटि गवा रहा । बच्चा खोजै के खातिर वकर बड़ा कै फोटो छपा रहा । कहत रहीं, यिहै छपा फोटो देखिकै वहि बच्चा का देखै वाले चीन्हि सकत हैं । प्रहरी खोजै मे मदत कइ सकत है ।' सब कुछ से अनभिज्ञ होय के बादो वोकर बाति सुनिकै सुभद्रा मनैमन खुशी भईं औ वोका अपने छाती से लगाय लिहिन ।

२०. ऊ फिर कहत है,'हमरे बप्पा तौ हेरान नाही हैं, भोले बाबा के घरे गा हैं । फोटो देखिकै जाय वाले, या वनकै फोटो लइकै जाय वाले, वनसे मिलि सकत हैं औ हमार बाति कहि सकत हैं न ।' सुभद्रा का अउर बाति सुनै के हिम्मत नाही भवा । वैं सिरिफ यतना कहि पाइन,'हाँ बाबु, पता लगावो, केहु जाय वाला मिली तौ दइ दिहेव औ आपन बाति कहि दिहेव ।'

२१. 'अम्मा, हमहुँ पता करित है, औ आपौ पता करौ । केहु मिली तौ आपो हमार सब बाति वनसे कहि दिहेव ।' कहत भास्कर दुसरे ओर खेलै चलि दिहिस । सुभद्रा मनैमन सोचै लागीं,'यहि बच्चा का कइसै सम्झाई, कि जे भोले बाबा के गाँव चलि जात है, लउटि कै कब्बौ नाही आवत है । वहिँ जाय वालेन से मिलै कै कवनो माध्यमव नाही होत है । बीता दिन कै याद करबवै, उनसे भेटाय जेस होय ।'

२२. दिन महिना करत सालौसाल बीति गवा । भोले बाबा के घरे जाय वाला कवनो आदमी का भास्कर नाही भेटान । अब ऊ बड़ा होइ गवा रहा । बहुतौ बाति बुझै लाग रहा । तब्बौ वकरे मन मे भोले बाबा कै गाँव बसा रहा । ऊ अपने बप्पा के बारे मे अनेक बाति सोचै लाग । यहर वहर से बहुतै जानकारी पावै लाग । एक दिन एक जने वृद्ध घरे आयें औ वोसे बहुत बाति किहिन । बातै के सिलसिला मे कहिन,'बेटा तोहरे बप्पा, तोहरहिन जेस, होनहार विरवा कै कचनार पात जेस रहें । ऊ हमेशा कहत रहै, 'पढ़ौ, लिखौ, सिखौ सब कुछ करौ लेकिन समाज के काम लागै वाला मनई बनौ ।' यतनै मे भास्कर कहत है,'हाँ, आज काल्ह हमार अम्मा, यिहै बाति हम्मै कहत हीं समाज के काम लागै वाला इन्सान बनौ । हम बहुत दिन बाद जानि पायन, मनई औ इन्सान यक्कै बाति होय.....हा.....हा....हा !' वोकर बालसुलभ बाति सुनिकै वृद्ध मनैमन मुस्कियाइकै रहि गयें । ऊ वनहु से उहै बाति कहिस, 'हमरे बप्पा तौ भोले बाबा के घरे चलि गा हैं, वनके लगे कुछ खबर भेजै के रहा, वहिँ जाय वाला केहु मिलतै नाही है ?' वृद्ध वकर बाद ध्यान से बाति सुनिन औ कहिन,'बेटा, भोले बाबा कै घर अइसन जगह होय, जहाँ चलि जाय क बाद केहु लउटि कै नाही आवत है, न वहीं केहु आपन खबर भेजि पावत है । न तौ

वहीँ जाय वाले एक दुसरे का पहिचान पावत हैं । आप तौ बहुतै बुझक्कड़ बच्चा हौ, यहिसे खबर भेजै के चक्कर मे न परौ....बल्की अपने बप्पा के कहा जेस, समाज के काम लागै वाला मनई बनौ औ जहिया आप वइसन मनई बनि जाबौ । सपना मे आइकै तोहरे बप्पा तुहका आर्शीवाद दिइहैं । वहीँ सपना मे तुम्हार तोहरे बप्पा से भेट होय पाई ।'

२३. वृद्ध कै बाति सुनै के बाद, ऊ अउर मन लगाइकै पढ़ै लाग । वोकर आजा कामताप्रसाद अपने जमाना कै चलतापुर्जा आदमी रहें । अपने इलाका मे सहयोग औ दान के मामिला मे मशहूर रहें । वहिसे वनकै नाँव लोग कम जानत रहें, सब वनका बापू कहत रहें । भास्कर कै शील-स्वभाव औ विचार देखिके सब कहत रहें,'लागत है बापू के पोता मे, उनके बड़के बेटवा कै आत्मा आइकै बसि गवा है । यिहै पोता बड़ा बेटवा कै कमी पूरा करी जेस लागत है ।'

२४. यहर भास्कर अपने बप्पा के बारे मे, सब के मुँह से गुणगान सुनै के बाद, ऊ जेसस बड़ा होत गवा, अपने का आउर अनुशासित औ अध्ययनशील बनावत गवा । अब सुभद्रा भानुप्रसाद कै छबि भास्कर मे देखै लागि रहीं । बीता दिन कै सब बाति भुलाय लाग रहीं । यहर भास्कर हरेक कसी मे अपने का अव्वल साबित करत चलि गवा । अब वका भोले बाबा के गाँव औ घर कै रहस्य मालुम होय गवा रहा । लेकिन ऊ, यहि विषय मे कब्बौ केहू से चर्चा नाही किहिस । वकरे मन मे यक्कै बाति हमेशा गूँजत रहै,'पढ़ि, लिखि औ सिखिकै समाज कै काम लागै वाला इन्सान बनै के है !'

शब्दार्थ

मजेदार :	आनन्द
एकाकीपन :	अकेलापन
सहचर :	यात्रा के क्रम मे मिले बटोही, राही
तत्क्षण :	तत्काल
बटोही :	यात्री, राही
कसी :	परीक्षा
बालसुलभ :	बालापन
शील-स्वभाव :	बानी व्यवहार

इलाका :	क्षेत्र, जवार
अव्वल :	उत्तम, प्रशंसा करै लायक
मशहुर :	प्रसिद्ध, प्रख्यात, नाँव चला
साबित :	प्रमाणित, स्पष्ट भवा
गुणगान :	प्रशंसा करैक काम, बखान
कचनार :	हरियर, हरियाली युक्त
अनुशासित :	अनुशासन मे रहे वाला, प्रबंध कइ गवा
अध्ययनशील :	अध्ययन मे रुची राखै वाला

अभ्यास

सुनाई

१. नीचे कहि गवा वाक्य के केका कहिस है, सुनिकै कहा जाय ।

(क) 'काल्हि घर से पुछिकै आयेव न भास्कर ! '

(ख) 'अपने बप्पा कै फोटो खोजित है ।'

(ग) शिवालय तौ वनकै कुटिया होय, वहिँ खाली कब्बौकाल आवत हैं ।

(घ) 'बाबु, तोहरे बप्पा कै नाँव भानु प्रसाद चौधरी रहा ।'

(ङ) आप तौ बहुतै बुझक्कड़ बच्चा हौ ।

२. पाठ के चउथा अनुच्छेद कै इमला लिखा जाय ।

३. बाइसवाँ अनुच्छेद सुना जाय औ पुछि गवा प्रश्न कै उत्तर दिहा जाय ।

(क) कइसन आदमी नाही भेटान ?

(ख) वकरे मन मे कवन बाति बसा रहा ?

(ग) भास्कर कै बाति के ध्यान दइकै सुनिस ?

(घ) वृद्ध भास्कर का काव कहिकै सम्झाइन् ?

(ङ) 'कचनार' औ 'सिलसिला' शब्द कै अर्थ काव होय ?

४. पाठ कै अन्तिम चौबिसवाँ अनुच्छेद सुनिकै वहिमे व्यक्त कइ गवा बात कक्षा मे सुनावा जाय ?

बोलाई

५. नीचे दइ गवा शब्दन का शुद्ध से उच्चारण किहा जाय ।

शिवालय, कुटिया, सहचर, इन्सान, आर्शीवाद, तत्क्षण

६. यहि कथा कै शीर्षक केतना उपयुक्त है ? आपन तर्क कक्षा मे प्रस्तुत किहा जाय ।

७. पाठ कै कवनो दुइ अनुच्छेद का सस्वर वाचन किहा जाय औ वाचन करै मे केतना समय लाग शिक्षक से पूछा जाय ।

८. कथा कै पात्र भास्कर के जगह पर आप होवा जात तौ काव किहा जात, आपन विचार कक्षा मे सुनावा जाय ।

पढ़ाई

९. पाठ कै अनुच्छेद वसरीपारी सस्वर वाचन करा जाय ।

१०. कथा के आधार पर भाष्कर से सम्बन्धित पाँच ठु बुँदा लिखा जाय ।

११. पाठ कै अठरहवाँ अनुच्छेद का मनैमन पढ़ा जाय औ भाष्कर के बारे मे एक अनुच्छेद लिखा जाय ।

१२. नीचे दइ गवा अनुच्छेद पढ़िकै पुछि गवा प्रश्न कै उत्तर दिहा जाय ।

वि.सं.२०६८ सालि कै बाति होय । एकठु प्राथमिक विद्यालय के कक्षा चार मे पढ़ै वाले विद्यार्थी मे आवै वाला उतार चढाव के बारे मे यी सत्य घटना होय ।

ऊ विद्यालय कै नाव होय श्री राम जानकी प्राथमिक विद्यालय । जवन कि भगवान गौतम बुद्ध कै पावन नगरी कपिलवस्तु के सदरमुकाम तौलिहवा से पुरुब लगभग चार किलोमीटर तौलिहवा लुम्बिनी सड़क के दक्षिण स्थित है । ऊ विद्यार्थी कै नाँव श्रीधर रहा । कक्षा ४ मे प्रवेश लेय के ३ महीना बाद जब त्रैमासिक परीक्षा भवा तौ परीक्षा मे ऊ अपने विद्यालय मे कुलि विद्यार्थिन से ज्यादा नम्बर लाय । लेकिन वकरे बाद ऊ लापरवाही करै लाग । ऊ कहियौ विद्यालय आवै तौ कहियौ अइबै नाही करै । घर से कइकै लावै वाला गृहकार्यो, ऊ नाही कइकै लावै । छमाही परीक्षा भवा जवने मे ऊ बहुत कम नम्बर लाय । अध्यापक जी लोग तेज विद्यार्थी का एका-एक कमजोर देखिकै वहि विद्यार्थी के घरे गयें । श्रीधर के दादा

से मिलिकै सारा बाति बताइन ।

श्रीधर के दादा कै नाँव रहा गोकुल । गोकुल रोवत अध्यापक लोगन से कहै लागें कि अब जानौ हमार सपना पूरा नाही होई । हम सोचे रहेन कि अपने नोन-भात खाइकै हम लड़िका का जरुर डाक्टर बनाइब । तब प्रधानाध्यापक जी गोकुल से कहिन कि आप तनिकौ चिन्ता न करा जाय । आप कै यी सपना यिहै लड़िका पूरा करी । लड़िका का बोलाइकै अध्यापक जी वकरे दादा के सामने सम्झाइन् । श्रीधर से वनके दादा कै सपना बताइन् । श्रीधर अपने दादा का रोवत देखिकै रोवै लाग । दुसरे दिन अध्यापक जी लोग आपस मे बइठि कै एकठु योजना बनाइन । वहि योजना के अर्न्तगत एकठु सूचना विद्यार्थिन मे जनाइन कि यी जवन छमाही परीक्षा होय चुका है । यहिमे विद्यालय मे सब से ज्यादा नम्बर लावै वाले विद्यार्थी के आज सम्मानित करा जाई । विद्यालय ४:०० बजे बन्द होयक बाद सब जने विद्यालय के मैदान मे जुटौ । (श्यामप्रकाश लाल श्रीवास्तव, 'एकठु अनसुनी सत्यघटना')

प्रश्न :

(क) अनुच्छेद मे वर्णन किहा घटना कवने साल कै होय ?

(ख) विद्यालय कै नाँव काव होय ?

(ग) विद्यालय तौलिहवा से केतने दुरी पर है ?

(घ) श्रीधर काहे रोवै लाग ?

(ङ) प्रधानाध्यापक जी काव कहिन ?

लिखाई

१२. शुद्ध कइके लिखा जाय ।

बातैक शिलशिला मे कहिन,'बेटा तोहरे बप्पा तोहरहिन जेस, होनहार विरवा के कचनार पात जेस रहें । ऊ हमेशा कहत रहै, 'पढौलिखौसिखौ सब कुछ करौ लेकिनसमाज के काम लागै वालामनई बनौ ।

१३. नीचे दिहा प्रश्न कै संक्षिप्त उत्तर लिखा जाय ।

(क) भास्कर से सब लोग कइसन व्यवहार करत रहें ?

(ख) सुभद्रा कै चरित्र आप का कइसन लाग ?

(ग) भास्कर कवने बाति के खातिर परेसान रहै लाग ?

(घ) वृद्ध के सम्झावै के बाद काव भवा ?

(ङ) भास्कर कै बप्पा हमेशा काव कहत रहें ?

१४. यदि भाष्कर के जगह पर आप होवा जात तौ काव किहा जात ? तर्क सहित उत्तर लिखा जाय ।

१५. 'भोले बाबा कै गाँव' कथा मे समाज कै कवन वास्तविकता उजागर करै के कोशिश कइ गा है, विवेचना करा जाय ।

१६. कथा कै बाइसवाँ अनुच्छेद पढ़िकै चार ठु बुँदा लिखा जाय औ तृतीयांश मे सारांश लिखा जाय ।

१७. सप्रसंग व्याख्या किहा जाय ।

(क) कवनो-कवनो सहचर अइसन होत हैं, बुड़त नइया के खातिर पतवार बनिकै आय परत हैं ।

(ख) होनहार विरवा कै कचनार पात ।

व्याकरण

१८. नीचे दिहा वाक्यन कै लिङ्ग सङ्गति मिलाई के लिखा जाय ।

(क) गुरुमाँ कक्षा मे आये । (ख) भाई विद्यालय से आईं ।

(ग) पूजा चित्र बनावत रहें । (घ) भइया हमार किताब खरीद रहीं ।

(ङ) सलमा परिश्रमी रहें ।

१९. नीचे दिहा वाक्य का निर्देशन अनुसार परिवर्तित कइकै लिखा जाय ।

(क) हम बाबूजी का चिट्ठी लिखब । (बहुवचन)

(ख) हमलोग विद्यालय का निवेदन लिखबै । (एकवचन)

(ग) तुँ अकरम का चिट्ठी लिखबौ । (प्रथम पुरुष)

(घ) हम काल्हि गढ़वा जावै । (द्वित्तिय पुरुष)

(ङ) हम लोग आज कक्षा मे टेबुल औ कुर्सी मिलइहैं । (तृतीय पुरुष)

२०. नीचे दिहा वाक्य का निर्देशन अनुसार परिवर्तित कइकै लिखा जाय ।

(क) आप घरही रहिकै काम किहा जाय । (निम्न आदरार्थी)

(ख) तैं यहीं बइठि कै किताब पढ़ । (मध्यम आदरार्थी)

(ग) तोरे अबहिन तक घरे नाही गयेव । (उच्च आदरार्थी)

(घ) कन्हैया काल्हि अइहैं । (अकरण)

(ङ) तुँ बढ़िया से नाही पढ़ेव तो पास नाही होबो । (करण)

२१. नीचे दिहा वाक्य का निर्देशन अनुसार परिवर्तन कइके लिखा जाय ।

वाक्य	काल औ पक्ष
१. तोहरे लोग रातभर नाच्यौ ।	सामान्य भूत
२. .....।	अपूर्ण भूत
३. .....।	पूर्ण भूत
४. .....।	सामान्य वर्तमान
५. .....।	अपूर्ण वर्तमान
६. .....।	पूर्ण वर्तमान
७. .....।	सामान्य भविष्य
८. .....।	अपूर्ण भविष्य
९. .....।	पूर्ण भविष्य

२२. सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) आपो के गाँव मे घटा कवनो घटना का कथा बनाइकै लिखा जाय औ कक्षा मे प्रस्तुत करा जाय ।

(ख) अपने परिवार के कवनो एक सदस्य बारे मे जानकारी लइकै कथा लिखा जाय ।

पाठ
११

सङ्कल्प

पात्र :

महाराजा : बड़घरान परिवार कै एक महिला

मुस्तफा : बड़घरान परिवार कै सहयोगी

दानबहादुर सिंह : गाँव कै बड़ाबड़कवा, भलादमी

पण्डा महाराज : तीर्थ घाट कै पुजारी

स्थान : बड़घरान परिवार कै घर

(महाराजा चौधराइन बहिरे बरान्दा मे बइठी हैं। पूरा सेवक औ काम करै वाले दुवारे पर काम करत हैं। मुस्तफा कुछ काम के बद आये है। महाराजा औ ऊ दुनौ जने बतुवात हैं।)

१. महाराजा : देखो मुस्तफा ! लरिके पढ़िलिख न पइहैं तौ घर कै कामधाम कसकै होई। चौधरी होइते तो इनका कहूँ बढ़िया स्कूल मा नाँव लिखौतें औ अब तुम्हिन बतावो हम अब्बै दूर पठै दी तो मन उन्हिन मे लाग रही।

२. मुस्तफा : बाति तौ सही कहत हौ चौधराइन, लरिकन का होनहार बनाइब जरुरी है। हमरे टोला मा मुन्सीजी कुछ लरिकेन का, उर्दु औ फारसी कै कलास लगावत हैं...न होय तौ हुवैं जाइकै पढ़ै। सब बड़वार होय जइहैं तौ कहूँ बढ़िया जगह भेज दिहेव।

३. महाराजा : ऊ के होय.....यहरै आवत हैं ?

४. नेपथ्य से : (भगवान भला करैं चौधराइन, सब ठीकठाक राखैं खुब फलौ बाढो हम घाट कै पण्डा आये हन।)

५. महाराजा : (सहयोगी लोग के तरफ देखत, कुछ ऊँच आवाज मे) देखौ रे ! बहिरे को होय, गोहरावत हैं बुलावो यहर।

६. नेपथ्य से : बहिरे कोई पण्डा महाराज आये है....पठै दीन जाय।

७. पण्डा महाराज : (आपन झोली झम्टी मिलावतै सकुचात बइठत हैं) भगवान खुब आर्शीवाद देय, चौधराइन...हम तौ साल मे एक बार आइत है, अबकिस तनी देर लागि गै। चौधरी भइया जब घाट पर नहाय गये रहे तौ हुवाँ कुछ सङ्कल्प किहिन रहै, वही मारे हम आय रहेन।

८. महाराजा : हे ! पण्डा महाराज बतावा जाय तौ का सङ्कल्प किहिन रहै ।

९. पण्डा महाराज : (पोथी खोलत) जजमान... आप कै पति देव धर्मशाला बनवावै केर सङ्कल्प किहिन रहै । बाँकी दान दक्षिणा तौ दुवारे पर मिलतै है । आपै सब के धर्म से तौ हम सब जीया जात है । आप कै परिवार बड़ा है, इज्जत है, चौधरी भइया कै सङ्कल्प बहुत बढ़िया काम खातिर रहै ।

१०. मुस्तफा : (पण्डा महाराज के तरफ देखत) महराज चौधरी भइया के साथे तौ गाँव केर अउरो लोग गये रहे न । ऊ वकत अउरो सब तो रहे होइहैं ।

११. महाराजा : हाँ बहुत लोग गये रहें .....।

१२. पण्डा महाराज : देखौ यी बात मे कवनो शंका न राखा जाय । सङ्कल्प तनि गुप्त रुप से होत है । ऊ बड़ा मनई रहैं, बड़ै संकल्प किहे रहें । उनके ईच्छा का पूरा किहा जाय ।

१३. महाराजा : तौ पण्डा महाराज, उनकै सङ्कल्प मे....हमका बतावा जाय ....का करैक परी ?

१४. पण्डा महाराज : देखौ चौधराइन आप हमार जजमान होव, आपके उप्पर सङ्कल्प पूरा करैक जिम्मेवारी है । आपकेर पति कोई छोट मन कै आदमी थोरै रहें । आप आपन ईच्छाशक्ति देखावा जाय, संसार कै भला होई ।

१५. महाराजा : आप कै कहब ठीक है ...लेकिन अतना बड़ा सङ्कल्प लेत के कवनो सल्लाह तौ हम से नाही किहिन, यी तौ बहुत बड़ा काम है । रुपया पइसा कै तौ ज्यादै इन्तजाम करै के परी ।

१६. पण्डा महाराज : अरे जजमान यी कवन बाति कहत हौ ...हमरे बाति पर शंका न किहा जाय ? आप कै पति जवन सङ्कल्प किहिन रहा उका पूरा किहा जाय, नाही तौ उनकै गटई फँसा रही । बिचारे चौधरी भइया बैतरणी पार न होइ पइहैं । आप चाहे जइसै इन्तजाम किहा जाय ।

१७. मुस्तफा : पण्डा महाराज चौधरी भइया कै सङ्कल्प दीनदु:खी केर साथ देयक सब दिन रहत रहै । उनकै विचार सब कै मद्दत करै के होत रहै । हमका यी बतावा जाय...यी जवन धर्मशाला बनावै केर सङ्कल्प है, ... यिका हियैं बनावै से न होई ?

१८. पण्डा महाराज : अरे जजमान सङ्कल्प तीर्थ मे लिहा जात है । सब के भलाई के खातिर यी धर्मशाला तौ घाट पर बनी, जहाँ हम सबकै बइठका होई । तीर्थयात्री अइहैं, उठै बइठै के सहज होई, सबकै भला होई ।

१९. महाराजा : (तनि सोंच मे परि जाति हीं) अब यी बतावो महाराज अबहिन चौधरी जी का गुजरे कुछै दिन भवा है। हम तौ कुछ सोचि नाही पाइत है। घर कै अतना जन्जाल है, खेतीपाती कुछ नाही कराय पाइत है। लरिकेन कै पढ़ाई बिगड़त जात है। जवन मास्टर दुवारे पर रहत रहें, वहू चले गयें। हमार अपनै ....परी है, उप्पर से यी सङ्कल्प कहा जात है....महाराज तनि सोचै दिहा जाय कि कसकै होई ?

२०. नेपथ्य से : (बहिरे एक झुण्ड लरिके हल्ला मचावत खेलत चला जात हैं)

२१. मुस्तफा : देखौ चौधराइन गाँव केर लरिके सब खेलकूद मे लागि रहत हैं .... आपो केर लरिके यइसहिन संगत मे रहिकै कहूँ कुछ काम नाय कइ पाइन तौ बड़ा बदनामी होई। सबसे बड़ा बाति यी सब कै दोष महतारी पर लागी। यस जग हँसाई से बचै केर बाति सोचब जरुरी है।

२२. महराजा : (साँस लेत कुछ मन भारी भवा जस) कुछ तौ करहिन परी। जिन्दगी मे दुःख सुख तौ लागै रहत है। अतना बड़ा सङ्कल्प वइसै तौ कवनो खराब काम मे चौधरी अपन कमाई नाही लगाइन है। गाँव घर के बूढ़पुरनिया से सल्लाह करहिन परी सेवक औ सहयोगी के तरफ) अरे मोगरा, बुधईया, ...कहाँ हो !....जाव तनि दानबहादुर काका का बोलाय लाव, ...औ कहेव, बहुतै जरुरी काम है।

२३. पण्डा महाराज : बाति तौ ठीक है जजमान, नीक काम मे देर नाही कीन जात है। अब देखौ समय साइत सब बढ़िया चलत है। यस मेर कै लगन बहुत कम आवत है। कहूँ आठ/दस साल बाद मे ....एक बार... यी मेर कै मवका आवत है। पता नाही फिर आई कि नाही।

२४. मुस्तफा : यी मेर काहे कहा जात है, महाराज ?

२५. पण्डा महाराज : देखा जाय, आप के उप्पर बहुतै जिम्मेदारी है। यही शुभ साइत पर सोंच बनावा जाय। सब पूरा होइ जाई। हमार अर्न्तआत्मा कहत है। आपो केर बहुत बड़ा नाँव होई औ चौधरिउ के आत्मा का शान्ति मिली।

२६. दानबहादुर : (खाँसत...हाथे मे सोंटा लिहे) चौधराइन कहाँ हौ, कवनौ सल्लाह के बद बोलाये हिउ ? हम तौ खाय पिइकै बइठा आराम करित रहेन। यइसहिन चलि आये हन। हियाँ तौ... अरे पण्डा महाराज, पाइलागी .... कब आवा गै .... मुस्तफा भाई तुम्हरौ सब ठीक है ? हाँ तौ बतावा जाय ....।

२७. महाराजा : काका आपै बतावो....यी पण्डा महाराजा कहत हैं ....चौधरी घाट पर धर्मशाला बनावै के बद सङ्कल्प किहिन है। उका बनावैक इन्तजाम किहा जाय, कसकै करी। हमार छोट बुद्धि, सोच नाही पाइत है। हमार तौ, 'कबित विवेक एक नहिं मोरें, सत्य कहउँ लिखि कागद कोरे' वाली हाल है। अब आपै बतावो का करै के है ....?

२८. पण्डा महाराज : जजमान अब जनतै हौ । बड़े-बड़े आदमी के बाति बड़ै होत है । चौधरी कै सङ्कल्प धर्मशाला बनावै केर, बहुतै उत्तम विचार रहै । आप सब मिलिकै पूरा करावा जाय । बहुत बड़ा धर्म केर बाति होय । इमा कवनो संकोच न करै के चाहीं । उनकै ईच्छा पूरा कराये से गाँव केर भला होई ।

२९. दानबहादुर : जब जग भलाई केर बाति आवत है तौ हम इमा कवनो रोड़ा नाही बना चाहित है । बढ़िया बाति तौ यी रहै की हमरे सल्लाह कै जरुरत माना जात है तौ चौधरी वर्हाघरि जवन सङ्कल्प किहिन है, वहसे गाँव केर भला कम, घाट वालेन कै भला ज्यादा होई । चौधराइन वइसै तो आप के घर मा सब कुछ है । अगर बढ़िया काम करै के ठानो तौ गाँव महिया स्कूल कै जरूरत है । उका बनावये से पीढ़ी दर पीढ़ी नाम चली..... साथै अउर तौ अउर गाँव कै लड़िके बिटियै शिक्षित होइकै बहुतै तरक्की कइ सकत हैं ।

३०. मुस्तफा : काका बहुतै बढ़िया बाति कहिन है । यहि काम से यहि गाँव के भर काहे..... अपने अगल-बगल वाले गाँवो कै लरिके पढ़ै पाइकै वनहु आगे बढ़िहैं ।

३१. पण्डा महाराज : अरे ! शुभ-शुभ बोलो धर्म करै कै सल्लाह देव, कहा कै सङ्कल्प औ कहा लइकै जात हौ । आप लोग यहि परिवार कै हितैषी होइकै यहि मेर कै बाति करत हौ । ना....ना बहुतै अधर्म होइ जाई । चौधरी भइया कै ईच्छा पूरा न होये पर आत्मा भटकत रही ।

३२. मुस्तफा : वाह रे ! वाह....पण्डा महाराज आखिर चौधरी भइया कै सङ्कल्प तौ दुनियाँ के सेवा करै के बद न होय । धर्मशाला बनै तौ ....औ स्कूल बनै तौ ....बाति तौ धर्मै कै होय । अब एक मा आत्मा भटकी औ दुसरे मे नाही, यी कवन बाति कहत हौ । हमरो सल्लाह मानौ तौ ...दानबहादुर काका बहुतै बढ़िया बाति कहिन है । वइसै तौ काम दुनौ ठीक है, लेकिन स्कूल से जवन सोच, ज्ञान, औ संस्कार फइली, वोकर मूल्याङ्कन समाज मे बहुतै अव्वल दर्जा कै रही ।

३३. महाराजा : देखौ, हमार घर सबके भलाइन कै काम किहिस है । हमहुँ चाहे जइसै होय, अपने तरफ से नीक से नीक काम करा चाहित है ....जब काका औ मुस्तफा सब चाहत हैं तौ वही ठीक । हमरो नाँव है महाराजा ! चलौ अब हम सङ्कल्प करित है कि स्कूल तौ गाँव में बनिकै रही, चाहे थोर बहुत सम्पत्तिउ खसकावैक काहे न परै ।

३४. पण्डा महाराज : मतलब ! आप लोग कुल, धर्म सब से विपरीत सोच बनावा जात है । अरे..बड़े आदमी कै बड़ी बाति.....दुनौ बाति सोचा जाय न । उनकै सङ्कल्प पूरा होये पर... बहुतै सुख मिली ।

(पण्डा महाराज रिसियाय लागत हैं औ उठिकै चलै जेस करै लागत हैं)

३५. दानबहादुर : अरे, पण्डा महाराज शान्ति से सोचा जाय.....जब आप कहत हौ....जग कै भलाई होय तौ तनि आपो केर मन बड़ा होयक चाहीं। जब चौधरी सङ्कल्प किहिन तौ घाट कै भला औ अब चौधराइन सोंच बनाइन तौ गाँव औ गाँव के अगल-बगल वालेन कै भला.....अउर तौ अउर कुछ लोगन का रोजगार मिली, वनहू लोग कै भला .....तौ काहे न आप से जवन गुप्त सङ्कल्प किहिन रहै वहि मे फेरबदल कइके सब कै भलाई पर आपौ रजामंदी करौ..... सबकै भला होय।

३६. मुस्तफा : हाँ...काका, आप केर विचार बहुतै उत्तम है। स्कूल बनावै मे तो हमहू सबसे जवन होय सकी, मदत करा जाई।

३७. पण्डा महाराज : आप सब बहुत विचित्र प्राणी हौ....जवन कुल, रीत से चला आवा है...वहिसे विचलित न करौ....एक पण्डा का खाली हाथ भेजै से बहुत अनिष्ट होइ जाई। चौधरी कै सङ्कल्प हमसे किहिन रहै। उका पूरा करब, उनकै सन्तान औ परिवार कै पूरापूरा फर्ज बनत है।

३८. दानबहादुर : हम आप से का बताई पण्डा महाराज....हित औ अनहित किका कहत हैं। हमहूँ का थोर बहुत ज्ञान है। चौधरी सङ्कल्प जवन आप से किहिन, ऊ तौ रहबै कहिस होई। हम आप के उप्पर कवनो शंका नाही करित है ....लेकिन जवन आज चौधराइन कहिन,....स्कूल बनावैक बात,... ऊ तौ बहुतै सामाजिक काम होय। यहि काम से तौ अपनो भला औ दुसरेव कै भला होई। अब यहि काम मे आप बाधक न बना जाय, नाही तौ आप का अपने आप से भ्रमित होयक परी।

३९. महाराजा : अब आप सबकै बाति सुनि लिया। हमार सौ बाति कै एक बाति ....पण्डा महाराज ! हम का क्षमा किहा जाय....सब सङ्कल्प का एक माना जाय। सब के सामने हमार यी दृढ सङ्कल्प होय ...स्कूल बनी तौ बनी। आप बहुतै शुभसाइत पर यहि घर पर पाँव धरा गै, जाहिके बद हम आप कै अनुग्रहित रहिबै।

४०. पण्डा महाराज : सब के भलाई मे हम हारेन। जग जीता ! जब सब कै यिहै मन है तौ हमहुँ कवनो बाधा अड़चन नाही बना चाहित है। सब कै कल्याण होय।

४१. महाराजा : (उठतै) जब सबकै मन स्कूल बनावै के है तौ देरि केत कै ....नीक काम में कवनो साइत नाही देखै के परत है। (अउर लोगन का औ घर के काम करै वाले सहयोगी लोग का बोलावत) चलो भाई सब आजै, पण्डा महाराज, दानबहादुर काका...सब चला जाय स्कूल बनावै कै जगह तजबीज किहा जाय।

४२. सब साथेन चलत हैं सल्लाह करत : बहुत बढ़िया दिन रहै....स्कूल तौ सब से बढ़िया.....ज्ञान कै मन्दिर बनावा जाय ।

४३. गाँव के लोग : जइसै नाँव है महाराजा....वइसै चौधराइन कै काम है.....अब चौधराइन यहि गाँव मा विद्यालय बनुवाइन डरिहैं.....!

शब्दार्थ

बड़घरान : गाँव के सम्पन्न आदमी कै घर, गाँव के मुखिया कै घर ।

तीर्थ : धार्मिक स्थान

घाट : नहाय या आवै जाय के खातिर नदी या पोखरा के किनारे बनाय गवा जगह

मा : मे, मइहाँ

उका : वका

इमा : यहिमा

जजमान : धार्मिक काम, यज्ञ, पूजा करै वाला व्यक्ति, पंडित जी कै सेवक

धर्मशाला : यात्रिन कै ठहरै वाला जगह/ घर

बदनामी : बुराई, नकारात्मक बाति कै चर्चा

कसकै : कइसै, कवने मेर से

तरक्की : प्रगति, उन्नति

भटकत : परेसान, यहरवहर घुमत

खसकावैक : हटावैक, बेचैक

रजामंदी : सहमत, मन्जूर

बाधक : अवरोधक, बाधा पहुचावै वाला

तजबीज : चयन, पहिचान

सामाजिक : समाज से सम्बन्धित

सङ्कल्प : अठोट, प्रतिज्ञा, वचनवद्ध

देरि : ढिलाई, सुस्ती

बद : खातिर

शुभसाइत : बढिया समय, अच्छा दिन

अभ्यास

सुनाई

१. पाठ मे से एक से पाँच तक कै अनुच्छेद पढ़ा जाय औ पात्र लोग कवने विषय पर छलफल करत हैं, कहा जाय ।

२. पाठ कै चउदहवाँ अनुच्छेद सुना जाय औ महाराजा कै विचार आप का कइसन लाग, बतावा जाय ?

३. पाठ कै अड़तिसवाँ अनुच्छेद कै इमला लिखा जाय ।

बोलाई

४. वाक्य मे प्रयोग कइकै कहा जाय ।

तीर्थयात्री, शुभसाइत, जग जीता, कल्याण, हित-अनहित, शंका, फेरबदल

५. पण्डा महाराजा के अनुसार चौधरी काव करै के सङ्कल्प कइकै आय रहें ? यहि घरि वय होतें तो काव करतें ?

६. नाटक मे महाराजा कै धर्मशाला के बदले विद्यालय बनुवावै कै निर्णय आप का कइसन लाग ? यदि उनके जगह पर आप लोग रहा जात तो कइसन निर्णय लिहा जात ? कक्षा मे छलफल कइकै निष्कर्ष निकारा जाय ।

पढ़ाई

७. कक्षा के विद्यार्थी लोग अलग-अलग पात्र बनिकै अपने अपने हिस्सा कै संवाद गति औ यति मिलाई कै पढ़ा जाय ।

८. पाठ मे महाराजा चौधराइन से बोलि गवा संवाद बढ़िया से पढ़ा जाय औ उनकै विचार आप का कइसन लागत है, तर्क सहित कक्षा मे सुनावा जाय ।

९. पाठ पढ़िकै पुछि गवा प्रश्न कै मौखिक उत्तर दिहा जाय ।

(क) यी एकाङ्की मे कवनो विषय पर छलफल कइ गा है ?

(ख) यहि एकाङ्की मे केतना जने पात्र हैं ?

(ग) महाराजा आपन समस्या काव कहिकै बताइन ?

(घ) पण्डा महाराज कवने विषय पर बाति करै आय रहें ?

(ङ) चौधरी के घर का गाँव कै लोग काव कहत रहें ?

लिखाई

१०. यहि एकाङ्की कै शीर्षक 'सङ्कल्प' केतना ठीक है ? तर्क सहित आपन धारणा लिखा जाय ।

११. नीचे दइ गवा प्रश्न कै संक्षिप्त उत्तर दिहा जाय ।

(क) 'सङ्कल्प' एकाङ्की मे महाराजा का कवने बाति कै चिन्ता रहा ?

(ख) 'सङ्कल्प' एकाङ्की सामाजिक काम का कवने मेर से प्रस्तुत किहे है ?

(ग) पण्डा महाराज का सब लोग कइसै सहमती पर लाये ?

(घ) अन्त में काव बनावै कै निर्णय भवा ?

(ङ) 'सङ्कल्प' एकाङ्की से मिलै वाला सन्देश काव होय ?

१२. सप्रसंग व्याख्या किहा जाय ।

(क) कबित बिबेक एक नहिं मोरें, सत्य कहउँ लिखि कागद कोरें

(ख) जग जीता ! जब सबकै यिहै मन है तौ हमहूँ कवनो बाधा अड़चन नाही बना चाहित है । सब कै कल्याण होय ।

१३. अतना बड़ा सङ्कल्प वइसै तौ कवनो खराब काम मे चौधरी अपन कमाई नाही लगाइन है । गाँव घर के बूढ़पुरनिया से सल्लाह करहिन परी...कहिकै महाराजा से नाटककार कहुवावत हैं, येकर मतलब का हरेक काम मे बूढ़पुरनिया से सल्लाह लेयक जरूरी होत है ? तर्क सहित उत्तर दिहा जाय ।

१४. 'समाज सेवा' शीर्षक पर संवाद तइयार किहा जाय ?

१५. 'सङ्कल्प' एकाङ्की पढ़ै के बाद समाज मे बौद्धिक विकास के खातिर काम न करै औ अनावश्यक भौतिक संरचना बनुवावै वाले काम का समाज सेवा कहै वालेन का आप काव सल्लाह दिहा जाई ?

१६. 'हमार जिम्मेवारी' शीर्षक पर कम्ती मे चार पात्र बनाई कै संवाद तइयार किहा जाय ।

१७. 'सङ्कल्प' एकाङ्की मे दानबहादुर के जगह पर आप होवा जात तौ कइसन सल्लाह दिहा जात, तर्क सहित लिखा जाय ?

व्याकरण

१८. नीचे दिहा वाक्य सरल, मिश्र या संयुक्त कवने किसिम कै होय, पहिचान कइकै लिखा जाय ।

(क) हमार बिटिया तेज दउरत ही ।

(ख) जे आगि खाई ते अङ्गार हग्गी ।

(ग) ऊ लोग बजारि से लउटत के चोर का देखिकै डेराय गयें ।

(घ) तु विद्यालय जाव औ ध्यान से पढ़ौ ।

(ङ) तु गाय वा भइसि खरीदौ ।

(च) जब घाम लाग तो गर्मी भै ।

(छ) राम घरे जाव औ छाता लइ आवो ।

१९. नीचे दिहा संयोजक कै प्रयोग कइकै एक-एक वाक्य बनावा जाय ।

औ, वा, या, अथवा, न...न.., चाहे, बकिर, लेकिन, जब, तब, जइसै, तइसै

२०. सरल औ संयुक्त वाक्य कै प्रयोग कइकै अपने घर के बारे मे ५० शब्द तक कै अनुच्छेद लिखा जाय ।

२१. संयुक्त औ मिश्र वाक्य का प्रयोग कइकै अपने गाँव के बारे मे ५० शब्द तक कै अनुच्छेद लिखा जाय ।

२२. सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) अपने समाज मे व्याप्त कवनो सामाजिक कुरीति के बारे मे लघु नाटक लिखा जाय ।

(ख) हमरेन के समाज मे रहा पाँच ठु रीतिरिवाज के बारे मे पुछिकै लिखा जाय ।

पाठ
१३

बरखा केर महिमा

- राजेश जिज्ञासु

करतब्य पथ पर करम पथ पर अहोरात्र चरखा
मनइन केर सीख दिये एक समान नित्य बरखा
न आइब भुलय न जाइब भुलय यी नित्यकर्मी
न आलस्य न अकड़न बरखा सदैव सत्यकर्मी ॥१॥

ठुमक ठुमक बादर चलय चम-चम बिजुरी चम्कै
रिमझिम रिमझिम बरिसै असाढ खोब जम्कै
पानी केर परत कहुँ कहुँ लागय लेवा केर चादर
हर्ष विभोरित किसान तबु घुमि केर ताकैं बादर ॥२॥

झिँगुर करय झाँयझाँय रातिक जुगनु चमकाय
फुर्रफुर्र चिरई फुदकै रातोदिन कुर्रा टरटराय
बैशाख जेठकेर तपन मिटय धरती केर पियास
बारिस दियख किसान सारा खुशनुमा बिन्दास ॥३॥

पड़िया मड़िया मारँय लइकन करँय छपछप
दवडरा पड़तय हर्षित जगु सारा करँय जपतप
पती टूटय सेमरा होय लेवा कैकै दिये हँडाय
गावा लियें पहटा भरँय बैठउरी गीत गुनगुनाँय ॥४॥

तड़कतड़क केर भड़कभड़ाक केर बादर गुर्राय
घनघोर पानिस निर्जीव जगत सजीव होय जाय
जरई से बान बनय बान से धान खडा हरहराय
अनुपम परकिरती देखिके धरतीपुत्र मुसकुराय ॥५॥

ताल, पोखरा, नदी, सिउआन हरओर लबलबाय
पेड़पल्लो चिक्कनमुक्कन हरियर बाना सुहाय
फरय फुलाय फसल झुमय सगरो खेतखरिहान
मण्डिला, डेहरी, बखार, इन्तजार करयँ किसान ॥६॥

शील, अनुशील, अनुशासित ऋतु विधान देखउ
अन्नदाता पालनहर्ता सृष्टिकेर वइं निदान देखउ
देवीदेवता माईबाप से बढिकेर वइं का बखानी
अमीर गरिब मे भेद न कवनो वाह बरखा रानी ॥७॥

बनि केर बरखा बून बून सिञ्चय सबहु मनई जो
मानवता से फलित रहै धरती बसर जगही जो
दुखदरद इन्सानेन केर चीरय बरखा सगरो पीरा
सुसम्पन्न जगत जो मनइन केर रहै उहै उतीरा ॥८॥

शब्दार्थ

अहोरात्र : दिनराति, निरन्तर, चौबिस घण्टा कै समय
ठुमक-ठुमक : मस्त चाल मे, हर्षमिश्रित चाल
फुदकै : खुशी से कुदै, नाचै

दवडरा : वर्षा कै पहिला बूँद

गुर्राय : ठेठाय, रीस देखाइब

लबलबाय : जलमग्न होय्क बाद देखाय वाला दृश्य

सउआन : खेत, सिउवान

विधान : नीति, नियम, तौरतरीका

निदान : उपाय, युक्ति

बखार : अन्नअनाज धरै या भण्डारण करै वाला साधन, धनसार ।

मण्डिला : भुसा जइसन सामग्री धरै या गाय बछरू अस्थाई रूप से राखै के खातिर बनाय गवा छोट घर ।

अनुशील : मनन, विचार,अध्ययन, चिंतन

पालनहर्ता : पालन करुवावै वाला, पालनहार, प्रकृति

बैठउरी गीत : रोपनी गीत

बखानी : बयान करै कै काम, प्रशंसा

सिञ्चय : सिंचै, सिचाइ करै, पानी से भिजावै

सगरो : सब पीरा, दुख,

उतीरा : बानी व्यवहार

अभ्यास

सुनाई

१. कविता कै पहिला श्लोक सुना जाय औ बरखा कै परिचय कइसै दइ गै है, कहा जाय ।

२. कविता कै दुसरा श्लोक सुना जाय औ बरखा मे बादर का कउने मेर से देखाय गै है, बयान करा जाय ।

३. तिसरा श्लोक कै इमला लिखा जाय ।

बोलाई

४. नीचे दइ गवा शब्दन का शुद्ध से उच्चारण किहा जाय ।

अनुशीलन, बरखा, ठुमुकठुमुक, चिक्कनमुक्कन, खेतखरिहान, बिजुरी, बिधान, निदान

५. कविता के चउथा श्लोक मे काव कहि गै है, कविता के आधार पर उत्तर दिहा जाय ।

६. बरखा का आप कवने रूप मे देखा जात है, बखान किहा जाय ?

७. नीचे दइ गवा हाइकू हावभाव सहित उच्चारण किहा जाय औ हाइकु संरचना के (हरफ औ अक्षर के बारे मे) कक्षा मे छलफल किहा जाय ।

पैर बढाओ	महासागर	स्वाती कै बुँद	पतवा हिलै
जलाय कै चिराग	पानी भरा गागर	इन्तजार करत	बयारि जोर चलै
करो उजेरा !	नमकीन पानी !	रेत पे सिपी !	पेड़ हिलै न !
-भगवान चिराग	राकेशकुमार यादव	हंसा कुर्मी	-सविन सिंह चौधरी

पढाई

८. पाठ कै कविता गति, यति, औ लय मिलाई कै वसरीपारी पढ़ा जाय औ पढ़ाई मे लागै वाला समय लिखा जाय ।

९. नीचे दइ गवा अनुच्छेद पढ़िकै पुछि गवा प्रश्न कै उत्तर दिहा जाय ।

मृत्यु समदर्शी, सब के खातिर सामान । न बच्चा, न बूढ़, न जवान । मृत्यु अवश्यमभावी । जन्म के साथ मृत्यु एक स्वाभाविक प्रकृया, ध्रुव सत्य । दुनियाँ कै सबसे बड़ा अन्तिम सत्य, 'हिल्ले रोजी, बहाने मौत' वाली कहावत । झूठ साबित होय गै । राति के काकी काका साथेन खाइन पिइन, न कोई रोग न कोइ शोक, लेकिन जब सबेरे देर तक काकी नाही जागिन तब सुखवा जाइकै गोहराइस, काकी होयं तब तो बोलैं । काकी काकक साथ छोडिं गईं । पूरा गाँव दुख महियाँ डुबि गा । शहर से मुरली आय, रघुवंश आय, बिद्यार्थी लोगौं आयें । जवन दुसरे गाँव रामपुर केर सम्पर्क औ सम्बन्ध दूर-दूर गाँवन से रहा, जो कोई सुना, सब कोई आवा । बड़े धुमधाम से अर्थी निकारि गै । दाहसंस्कार पूर्ण, काका क्रिया बइठें । काका बहुत उदास रहें । बुढ्ढा प्रेम पत्निक साथ छुटब बहुत खलत है । परन्तु विधि कै विधान न तिल भर घटै, न तिल भर बढ़ै । दशवाँ, तेरहवाँ सब होय गै, गाँव भर सामिल भै । छुवाछुत

केर बातै नाही रहै । मुन्नी महाराज खाना बनाइन, सब खाइन । सब चला गयें । राति कुछ ज्यादा होय गवा । सुखवा कहिस, 'काका घरे न जावा जाई, कहौ तौ हियैं बिछाय देई ।'

(स्व.लोकनाथ बर्मा- 'जल समाधि')

(क) मृत्यु काव नाही जानत है ?

(ख) मृत्यु कइसन प्रक्रिया होय ?

(ग) 'हिल्ले रोजी बहाने मौत' कै अर्थ काव होय ?

(घ) शवयात्रा मे के-के सहभागी भवा ?

(ङ) विधि कै विधान कइसन होत है ?

लिखाई

१०. नीचे दइ गवा शब्दन कै प्रयोग कइकै वाक्य बनावा जाय ।

विधान, बरखा, बूँद, उतिरा, हरियर, लबलबाय, ठुमकठुमक, फुदकै, दवङरा

११. शब्दकोश के सहायता से नीचे दिहा शब्दन कै पर्यायवाची शब्द लिखा जाय ।

बादर, बरखा, हरियाली, ऋतु, विधान, निदान, पीरा, ताल, अन्नदाता, फूल, जल, खेत, बयारि, धरती,

१२. साथी का कहै के कहिकै पाठ के पँचवा श्लोक कै इमला लिखा जाय औ लिखैक बाद मूल पाठ से रुजु कइकै गलती सुधारा जाय ।

१३. नीचे दइ गवा प्रश्न कै संक्षिप्त उत्तर लिखा जाय ।

(क) बरखा केर महिमा कविता मे प्रारम्भ मे बरखा कइ चरित्र कवने रूप मे दइ गा है ?

(ख) जीवन मे बरखा कै आवश्यकता काहे है ?

(ग) बरखा ऋतु कै विशेषता काव-काव होय ?

(घ) दवङरा औ उतिरा शब्द कै अर्थ काव होय ?

(ङ) बरखा सब कै काव हरि लेत है ?

१४. सप्रसंग व्याख्या किहा जाय ।

(क) ठुमकठुमक बादर चलय चम-चम बिजुरी चम्कै
रिमझिमरिमझिम बरिसै असाढ खोब जम्कै ॥

(ख) बनि केर बरखा बून बून सिञ्चय सबहु मनई जो
मानवता से फलित रहै धरती बसर जगही जो ॥

१५. बरखा ऋतु का खराब कहै वालेन का आप काव सल्लाह दिहा जाई ? आपन प्रतिक्रिया लिखा जाय ।

१६. पाठ कै मूल आशय काव होय ? विवेचना करा जाय ।

१७. शिक्षक से सल्लाह कइकै शब्द के शुरू मे ह्रस्व औ दीर्घ लेखन कै अभ्यास किहा जाय ।

(क) शब्द के शुरू मे ह्रस्व इकार प्रयोग होय वाला दश ठु शब्द लिखा जाय ।

(ख) शब्द के शुरू मे दीर्घ ईकार प्रयोग होय वाला दश ठु शब्द लिखा जाय ।

व्याकरण

१८. पाठ मे प्रयोग भवा उपसर्ग से बनै वाले व्युत्पन्न शब्द के बनै कै तरीका देखा जाय औ वही उपसर्ग का प्रयोग कइकै दुइ दुइ शब्द आउर बनावा जाय ।

उपसर्ग + आधार पद = व्युत्पन्न शब्द

अ + ज्ञान = अज्ञान

अनु + शील = अनुशील

सु + सम्पन्न = सुसम्पन्न

१९. नीचे दिहा उपसर्ग से दुइ दुइ शब्द का बनावा जाय ।

अ, अधि, अन, अनु, अप, उत, उद, गैर, ना, निर, परि, प्रति, बद, वि

२०. नीचे कुछ समास विधि से नवाँ शब्द बना हैं । पाठ से यही किसिम कै आउर शब्द चीन्हि कै सूची बनावा जाय ।

पेड़ + पल्लो = पेड़पल्लो

दुख + दरद = दुखदरद

२१. नीचे दिहा अनुच्छेद मे से क्रियापद का चीन्हि कै लिखा जाय ।

कइउ बाजी यी भरम होत जात है कि देश प्रगति करत है । औ कइउ वाजी यिहव भ्रम होइ जात है कि यी भ्रम नाही वास्तव मे करत है । येकर बाद अगिला प्रश्न उठत है कि कहाँ से, कवने दिशा मे प्रगति करत है ? औ का यहि प्रगति के सन्दर्भ मे दिशा शब्द कै प्रयोग करा जाय के चाहीं कि नाही ? प्रगति कहूँ से कवनो दिशा मे होत होय या कवनो

दिशा से कहूँ होत होय । दिशा से दिशा मे होत है या कहूँ से कहूँ होत है ? का दिशा कहूँ है ? का कहूँ दिशा है ? का देश के सन्दर्श मे प्रगति औ दिशाभ्रम शब्द सामानार्थक शब्द होय ? कोश काव कहत है ? जेकरेम जोश है, वनकै जोश काव कहत है ? जे दिशा के बाति करत हैं, वनकै दशा काव होय ? जे दशा का रोवत हैं, वनकै दिशा काव होय ? यह मे कवने विषय पर चिन्ता करै के चाहीं, वनकै रोवै पर, दशा पर कि दिशा पर औ वकरे साथै हरेक उदयीमान देश कै एक बाल सुलभ प्रश्न है कि दशा केतना हैं ? औ करोडौं के देश मे कुल मिलाई कै दशा केतना हैं ? राजनीतिक सवाल है कि रोवै वाले केतना हैं ? आप का करत हौं ?

२२. सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) आपो कवनो मौसम कै वर्णन कइकै एक कविता लिखा जाय ।

(ख) बरखा ऋतु मे आप के गाँव मे काव काव कइ जात है जानकारी लइकै अनुच्छेद लिखा जाय ।

पाठ
१४

पर्यटकीय क्षेत्र बर्दिया

- विनय कुमार दिक्षित

१. मौलिक, साँस्कृति औ प्राकृतिक रूप मे सुन्दर औ रमणीय पश्चिम नेपाल कै मुख्य जिला बर्दिया होय। जिला कै कुल २ हजार २५ वर्ग क्षेत्रफल मे से करीब ६९ प्रतिशत भू-भाग समथर औ ३१.२७ प्रतिशत भू-भाग चुरे पर्वत मे परत है। अन्न के भण्डार के रूप मे परिचित बर्दिया जिला पर्यटन, धार्मिक, सांस्कृतिक औ कृष्णसार कै संगम स्थल के रूपो मे प्रख्यात है। थारू समुदाय कै बाहुल्यता मानि जाय वाला यहि क्षेत्र मे बाह्य जिला से अन्य जातजाति बसाई सराई कइकै आवै वालेन लोगनौ के नाते यी जिला जातीय विविधतौ मे अनुपम है।

२. समथर भू-भाग रहा बर्दिया जिला मे विकास कै पूर्वाधार आजौ सोचे जेस प्रगति नाही कइ पाये हैं। यिहा कै सदरमुकाम गुलरिया जोड़ै वाला नेपालगञ्ज-गुलरिया सड़क औ पूर्व पश्चिम महेन्द्र राजमार्ग अलावा अन्य सड़क पीच नाही भवा हैं। सडक कै अवस्था मजबूत होय के बादै अउर पक्ष सक्षम औ समृद्ध होइहैं, यहि बाति कै ध्यान मे राखै के काम जिला के सम्बन्धीत निकाय कै है। यद्दपि यहिँ के विकास खातिर केहू गम्भीर नाही है, जवने कै अनुभव यिहाँ के ग्रामिण सड़क पर यात्रा करत के स्पष्ट होय जात है।

३. सड़क कै अवस्था नाजुक होय के नाते, यहिँके पर्यटन व्यवसाय सोचे जेस आगे नाही बढ़ि पाये है। बर्दिया कै समग्र पर्यटन व्यवसाय का सहयोग पहुचावैक प्रयास स्थानीयस्तर से होयक बादौ सम्बन्धित अउर निकाय के अगुवाई कै कमी महसूस होत है।

४. यही किसिम से बर्दिया धार्मिक स्थलौ के रूप मे धनी है। हियाँ पर्यटक लोग कै मुख्य गन्तव्य ठाकुरद्वारा मन्दिर सबसे प्रसिद्ध है। नेपाल सरकार ठाकुरद्वारा मन्दिर का पुरातात्विक रूप मे महत्त्वपूर्ण मानिकै हुलाक टिकट कै प्रकाशन होय चुका है। हियाँ प्रत्येक वर्ष खिचड़ी के दिने बहुत बड़ा मेला लागत है जवन चार दिन तक चलत है।

५. ठाकुरद्वारा मन्दिर मे श्रद्धा औ भक्तिपूर्वक पूजा करैवाले लोगन कै भीड़ रहत है । करीब तीन सौ बर्ष पहिले, किसान लोगन का खेत जोतैक क्रम मे अष्टभुजा पोषण बिष्णु औ हनुमान कै प्रस्तर कै मूर्ती मिला रहा । यी धार्मिक किंवदन्ती है कि वहि जगह से न उठाय पावै के बाद मुर्तिन का वही जगह पर स्थापना कइ दिहिन ।

६. हियाँ थारू जाति कै महन्त पुजारी रहै कै परम्परा है । मन्दिर के गर्भगृह मे मुख्य देवता के रूप मे भगवान विष्णु कै मूर्ती है । थारू भाषी लोग भगवान विष्णु का ठाकुर कहिकै पुकारै के नाते यहि मन्दिर कै नाँव ठाकुरबाबा होय कै मिथक प्रचलित हैं ।

७. मन्दिर कै स्थापना सम्बन्धी अभिलेख नाही मिला है । वि.सं. २०५८ मे प्रकाशित ओम गोरक्षनाथ पुस्तक मे जगन्नाथ योगी से लिखि गवा 'ठाकुरबाबा एक चिनारी' मे वर्णित विवरण के अनुसार कर्णाली नदी मे शिव लिङ्ग कै मुर्ति मिला रहा । वनके अनुसार वहींसे उत्खनन कइकै लावै के नाते ठाकुरबाबा नाम राखि गै है ।

८. यी मन्दिर बहुत दिन तक एक छोट झोपड़ी के रूप मे रहा । वहि समय मन्दिर संरक्षण के अभाव मे समय-समय पर भहराय जात रहा । चोरी होय जात रहा । मूर्ती चोरी होयक खतरौ वतनै रहै । स्थानीय लोगन के अनुसार येकां बचावै के खातिर वि.सं.२०३७ साल मे स्थानीय बासिन कै जनश्रमदान औ कुछ आर्थिक सहयोग से गजुर शैली मे ठाकुरद्वारा मन्दिर कै पुर्ननिर्माण कइ गवा ।

९. वही समय से मन्दिर व्यवस्थापन समिति गठन कइकै येकर संरक्षण होत आवा है । ठाकुरद्वारा मन्दिर के साथेन जिला मे गणेश मन्दिर, सदाशिव मन्दिर, कोटाही मन्दिर, बागेश्वरी मन्दिर, कालिका मन्दिर, तारकेश्वर मन्दिर, जानकी मन्दिर आदि हैं । यी सबकै बढ़िया से संरक्षण कइकै प्रचारप्रसार में जोड़ दिहा जाय तौ आन्तरिक औ बाह्य पर्यटन प्रवर्द्धनौ मे सहयोग पहुँची ।

१०. यही किसिम से हियाँ कै राष्ट्रिय निकुञ्ज विश्व प्रसिद्ध है । जङ्गल प्रेमी बहुतै पर्यटक सब बर्दिया घुमै आवत हैं । निकुञ्ज मे बाघ, गैंडा, हरिण, नाकि, घड़ियाल, डल्फिन, हाथी जेस जानवर मिलत हैं । मजोर, तितर, सारस, भाँड़फोरवा गरुड़, कइयु मेर कै गिद्ध, चिल्होर, राजहंस, ताल बुडक्की, बगुला, बँसमुरगी, बनमुरगी, बगेड़ी, बटईल जइसन चिरईन कै अवलोकन कइ सका जात है ।

११. यहिँ पहुचै के खातिर पर्यटक लोग शुरू मे निकुञ्ज कै मुख्यालय ठाकुरद्वारा पहुचत हैं । मोटर या हाथी पर चढ़िकै निकुञ्ज अवलोकन कइ सका जात है । निकुञ्ज आसपास मे छोट-बड़ा कइकै लगभग २२ ठू सुविधा सम्पन्न रिसोर्ट सञ्चालन मे है ।

१२. यहि जिला कै कर्णाली औ कोठियाघाट कै पुल्ह देखै लायक है । यहिमे पूर्व-पश्चिम राजमार्ग मे परै वाला कर्णाली नदी कै एक खम्बे पुल्ह बहुतै प्रख्यात है । यी पुल्ह देखै हरेक साल हजारौं पर्यटक लोग कर्णाली के चिसापानी पहुचत हैं । यी पुल्ह कैलाली औ बर्दिया जिला का एक दुसरे से जोड़त है । येका सुदुरपश्चिम कै प्रवेशद्वारो कहा जात है ।

१३. नेपाल कै सब से लम्मा पुल्ह कर्णाली नदी से अलगियान गेरुवा नदी कै कोठियाघाट पर बना है । यी पुल्ह निर्माण होय से पहिले यहिँ पन्टुन पुल्ह रहा जवन पिपैपिपा मिलाइकै बना रहा । यहि पुल्ह कै प्रयोग कर्णाली नदी से घिरा राजापुर (भौरा टापु क्षेत्र) के लोग आवै जायक होत रहा । पन्टुन पुल्ह विस्थापित कइकै पक्की पुल्ह निर्माण कइ गै है ।

१४. पूर्व-पश्चिम राजमार्ग अन्तरगत बाँसगढी-भूरीगाँव सडक खण्ड मे परैवाला बबई नदी कै पुल्ह पर्यटक लोग के खातिर विश्रामस्थल बना है । यहिँ घरियाल, नाकि, कछुवा आदि बालू पर सुता दृष्य पर्यटक लोग कुछ देर रुकि कै क्यामरा मे कैद करत हैं ।

१५. पुल्ह के साथसाथ यहि जिला मे चर्चित बढ़ैया औ सतखुलवा ताल कै अपनै महत्त्व है । यी मध्ये प्राकृतिक रूप से निर्मित औ दक्षिण एशियै कै चिरईचिरंगन कै क्रिड़ा स्थल के रूप मे परिचित ताल होय बढ़ैया ताल । बढ़ैया ताल में कमल कै फूल गननमनन होइकै भरि जात है । यहिँ साइबेरिया से बत्तक प्रजाति कै आगन्तुक चिरई ठण्डी से बचै के खातिर आवत हीं । बढ़ैया ताल नगरपालिका कै सोरहवा औ मैनापोखर बजार के सिमाना पर लगभग १०८ बिगाहा क्षेत्रफल मे ताल फइला है । यी जिलवै कै बड़वार सिमसार ताल होय ।

१६. पूर्व-पश्चिम राजमार्ग के कर्तनिया नाँव के जगह से ५ किलोमिटर के दुरी पर धधवार मे सतखलुवा ताल है । सात ठउर सोता से यहि ताल मे पानी आवैक नाते येकर नाँव सतखलुवा ताल नामाकरण कइ गवा बाति स्थानीय बतावत हैं । यी ताल अङ्ग्रेजी अक्षर के यु आकार मे है ।

१७. यी ताल करिबन ६० विगाह क्षेत्रफल मे फइला है । यकरे संरक्षण औ प्रचारप्रसार करै खातिर स्थानीय बासी लोग खैरेनी मे पहुनाघर सञ्चालन किहे हैं । सम्बन्धीत निकाय के सक्रियता के कमी से जेस विकास होय के चाहत रहा, त्यस नाही होय पाये रहा । अब यहि ताल कै संरक्षण औ प्रवर्द्धन के काम मे स्थानीय निकाय सक्रियता देखावै लाग है यहिसे ताल कै प्रचारप्रसार होय लाग हैं ।

१८. यही किसिम से हियाँ पाय जाय वाला कृष्णासार यहिँ आवैवाले पर्यटक के खातिर मुख्य आकर्षक के रूप मे है । गुलरिया सदरमुकाम से उत्तर-पश्चिम में अवस्थित खैरापुर क्षेत्र मे वि.सं.२०६५ साल मे संरक्षण क्षेत्र घोषणा कइकै कृष्णसार का सुर्राक्षत कइ गा है । कृष्णसार

आकर्षक होत है, यकर सिङ लम्मा औ घुमावदार होत है । कृष्णसार लोपोन्मुख जानवर के सूची मे परत है ।

१९. यहि संरक्षित क्षेत्र मे चरन अभाव, हुँडार औ सियार के आतंक से कृष्णसार का बचावै के संरक्षणकर्मी का बहुतै समस्या खड़ा होत आ है । दुर्लभ औ सौन्दर्यपूर्ण शरीर रहा वन्यजन्तु कृष्णसार कै चारा घाँस, दूब, भलुही, काँस आदि होंय । लम्मा समय से यकरे संरक्षण खातिर राज्य बहुतै प्रयास किहे है ।

२०. नेपालगञ्ज विमानस्थल या स्थलमार्ग होइकै बर्दिया के ठाकुरद्वारा पहुचैवाले पर्यटक लोग के खातिर सब से छोट रुट कोहलपुर-भूरीगाँव-गोदान सड़क होय । सहज सड़क न होयक नाते अधिकांश पर्यटक लोग निकुञ्ज घूमिकै अन्ते चला जात हैं । अन्य पर्यटन गन्तव्यव तक पहुचै खातिर कच्ची सड़क होयक नाते, ऊ लोगन का बहुतै समस्या झेलै के परत है ।

२१. बर्दिया के विकास मे पर्यटन व्यवसाय आम्दानी कै मुख्य स्रोत होय । यद्यपि यकरे समुचित विकास मे स्थानीय से कइ गवा प्रयास मे हउसिला अउर बल पहुचावै खातिर राज्य के अन्य निकाय का संघीय सरकार का झकझकाइब जरूरी है । समग्र मे बर्दिया जिला के विकास के खातिर सड़क औ पक्की पुल निर्माण के सथवै पर्याप्त प्रचार-प्रसारो कै आवश्यकता है ।

शब्दार्थ

रमणीय : मनमोहक, आर्कषक, सुन्दर

समथर : खालऊँच न रहा, बराबर

जनश्रमदान : आदमिन से कइ जायवाला मेहनत/ परिश्रम

अग्रसरता : अगुवाइ, पहल

विस्थापित कइकै : हटाइकै

पहुनाघर : रहै खायक व्यवस्था सहित कै सेवा

उदासिन : गैर जिम्मेवारीपन

मुकदर्शक : चूपचाप रहा अवस्था

सौन्दर्यपूर्ण : सुन्दरता युक्त

दुर्लभ : सहजै न मिलैवाला

लोपोन्मुख : लोप होय वाले अवस्था कै

संरक्षणकर्मी : संरक्षण या जतन करै वाला अधिकारी/कर्मचारी/व्यक्ति

आम्दानी : आय, उत्पादन, प्रतिफल, मुनाफा

झकझकाइब : याद कराइब, बताइब, सचेत कराइब

कछुवा : खचुहा

अभ्यास

सुनाई

१. पाठ कै चउथा औ पचवाँ अनुच्छेद सुना जाय औ खाली जगह पूरा करा जाय ।

(क) बर्दिया धार्मिक स्थल से .....है ।

(ख) पर्यटक लोग कै मुख्य गन्तव्य.....प्रसिद्ध है ।

(ग) मेला .....दिन तक चलत है ।

(घ) किसान लोग खेत जोतै के क्रम मे अष्टभुजा पोषण..... औ..... कै प्रस्तर मुर्ती मिला रहा ।

(ङ) वही जगह पर स्थापना कइ गवा..... किंवदन्ती है ।

२. पाठ के दुसरा अनुच्छेद कै इमला लिखा जाय ।

३. पाठ कै अठवाँ औ नववाँ अनुच्छेद सुना जाय औ पुछा प्रश्न कै उत्तर दिहा जाय ।

(क) यी मन्दिर पहिले कइसने अवस्था मे रहा ?

(ख) मन्दिर कै मुर्ती बचावै खातिर स्थानीय लोग कावकाव किहिन ?

(ग) अब मन्दिर कै संरक्षण कइसै होत है ?

(घ) जिला मे अउर केकर-केकर मन्दिर है ?

(ङ) आन्तरिक औ बाह्य पर्यटन के खातिर काव करै के जरूरी देखा जात है ?

४. पाठ के बारहवाँ औ तेरहवाँ अनुच्छेद सुनिकै सारांश कहा जाय ।

बोलाई

५. नीचे दिहा शब्दन का उदाहरण मे दिहा जेस सही उच्चारण करा जाय ।

झकझकाइब / झक.झकाइब. / मुकदर्शक / मुक.दर्शक् /

अभाव, विस्थापित, सौन्दर्यपूर्ण, चारा, घुमावदार, मन्दिर, श्रद्धा, रमणीय, प्रसिद्ध

६. यहि निबन्ध कै शीर्षक केतना उपयुक्त है, समुह मे छलफल कइकै निष्कर्ष निकारा जाय औ कक्षा मे सुनावा जाय ।

७. पाठ के कवने-कवने क्षेत्र कै चर्चा कइ गा है ? बुँदागत रूप मे तयार कइकै कक्षा मे सुनावा जाय ।

पढ़ाई

८. पाठ के हरेक अनुच्छेद कै वसरीपारी सस्वर वाचन करा जाय ।

९. पाठ कै पहिला औ दुसरा अनुच्छेद सस्वर वाचन करा जाय औ ऊ अनुच्छेद सब पढै केकेतना समय लाग शिक्षक से पुछा जाय ।

१०. पाठ कै दशवाँ औ ग्यारहवाँ अनुच्छेद पढ़िकै पाँच ठु प्रश्न तयार करा जाय ।

११. नीचे दिहा अनुच्छेद पढ़ा जाय औ प्रश्न कै उत्तर दिहा जाय ।

अवधी समाज मे बहुत मेर कै जाति रहत हैं । हरेक जाति कै कुछ अपनेन मेर कै खास संस्कृति है तौ बहुतेरे सब जात मे मेल खाय वाला लोक जीवन है । श्रम ब्यवस्था मे आधारित समुदाय होय्क नाते परम्परागत अवधी समाज मे पेशवै जाति के रुप मे लिखि जात रहा । किसानी सब पेशा के केन्द्र मे रहा । एक किसान सब के खातिर खेती करत रहें । बदले मे तेली तेल पेरत रहें । मुराउ सब्जी उगावत रहें । अहिर दूध कै कारोबार करत रहें । धोबी कपड़ा धोवत रहें । बाभन पोथी बाँचत रहें । कुम्हार बर्तन बनावत रहें । कँहार डोली बोकत रहें । बनिया खिर्चीमिर्ची देत रहें । भूज भूजा भूजत रहें । तमोली पान दियत रहें । चमार छाला चीरत रहें । नाउ बार बनावत रहें, हर्दी बाँटत रहे । गँडरिया भेंड़ा, छगड़ी पालत रहें । बढ़ई लकड़ी कै काम करत रहें । लोहार लोहा कै सामान बनावत रहें । सोनार सोना चाँदी कै गहना बनावत रहें आदि आदि ।

समाज मे श्रम बिभाजन रहा । आपसी सदभाव औ सहकार्य बरकरार रहा । आर्थिक लाभ कै अवस्था नेहयतै नाय रहा । खाय भरे के सब का मिलत रहा । किसान सब के खातिर

अनाज उगावत रहे । सब कोई हँसत खेलत जीयत रहे । अपने अपने काम मे सब कोई राजा रहा । अपने अपने काम से सम्बन्धित सब बर्ग कै श्रमगीत रहा । कालान्तर मे राजनीतिक बदलाव सब कुछ झकझोर कै राखि दिहिस । अवध मे फइलहर जगह रहै के नाते किसानेन कै संख्या बढ़ा । सइगर जात कै आदमी थोर बहुत किसानी करै लागें । समाजिक विकास भवा । राजनीतिक बदलाव आय, औद्योगिक विकास भवा । आज स्थिति अइसा होइगा कि पेशा में प्रविधि सामिल भवा, औजार सामिल भवा, शिक्षा कै विकास भवा, लोककल्याण्कारी राज्य कै अवधारणा आवा, पेशा मे आधुनिकीकरण भवा, आर्थिक विकास कै दुवार खुला, नतीजा जाति जातै रहि गा, आदमी कै पेशा रातोरात बदलि गा । कोई सरकारी नौकरी के ओर आगे बढ़े तौ कोई सिघ्र आर्थिक विकास कै रास्ता पकड़िन । बड़ा बदलाव के साथ साथेन परम्परागत पेशागत दक्षता, सीप, हुनर, काइदा सब के सब कै दुसरे पेशाधारी मे सही रूप मे रूपान्तरण नाय होई पाइस । जवन या तौ लोप होइ गा है या लोप होय के कगार पे है । अइसन स्थिति मइहा अन्दाजा लगाय सका जात है कि हम सब के पूर्खा कै दिहा साँस्कृतिक सम्पदा का सजोय कै राखब केतना जरूरी है । (दुखहरण यादव : सांस्कृतिक संरक्षण के खातिर संग्रहालय)

प्रश्न

(क) का अवधी समुदाय एक जातीय समुदाय होय ?

(ख) अवधी समुदाय कइसने व्यवस्था पर आधारित समुदाय होय ?

(ग) जातिगत पेशा कइसै बदलत गवा ?

(घ) कइसन कइसन पेशा समुदाय मे प्रचलित रहा ?

(ङ) काहेक नाते साँस्कृतिक सम्पदा बचाइ कै राखब जरूरी है ?

१२. पाठ के शब्दार्थ खण्ड मे प्रयोग न भवा पाँच ठु कठिन शब्द लिखिकै वोकर अर्थ शब्दकोश देखिकै लिखा जाय ।

१३. नीचे दइ गवा श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द औ वोकर अर्थ पढ़िकै वाक्य मे प्रयोग किहा जाय साथै कक्षा मे सुनावा जाय ।

(क) आँत : शलिफा

आँत : शरीर के भितरी अंग

(ख) कोश : संग्रह

कोस : दुइ माइल बराबर कै दुरी

(ग) यश : कीर्ति

यस : यहि मेर

(घ) बाँस : एक किसिम कै पौधा विशेष

बास : रहै वाला जगह

(ङ) खाल : चमड़ा

खाल : तलहटी

(च) गोरी : प्रेमिका

गोरी : मुर्दहनी

(छ) धरा : पृथ्वी

धरा : राखि गा

(ज) दबाई : औषधी

दबाई : डबोट

(झ) खल : ओखरी

खल : धुर्त

(ञ) कनक : सोना

कनक : विषैला पौधा

लिखाई

१४. नीचे दिहा अनुच्छेद से चार ठु मुख्य बुँदा लिखि कै एक तृतीयांश मे सारांश लिखा जाय ।

श्रम जीवन कै आधार होय । कवनो काम करत समय जवन गीत गावा जात है, वहिका श्रमगीत कहि जात है । काम करैवाले लोग आपन थकान दूर करै के खातिर काम करत के समय गाय जात है । यहिसे काम करै वालेन के मन काम लागत रहत है औ थकान कै पतव नाही चलत है । यहिसे अवधी समुदाय मे हरेक काम के खातिर गीत-संगीत है ।

अवधी समुदाय कृषि प्रधान औ श्रम का अपने जीवन का मर्म सम्झै वाला समुदाय होय । यहिसे यहिके लोग अपने जीवन मा कइ जाय वाला श्रम का संगीतमय बनाये हैं । यहि समुदाय मा कइ जाय वाला अनेक श्रम (काम) करत के अपनै आपन मेर कै गीत है । वय विभिन्न श्रम मध्ये कै प्रमुख श्रम होय रोपनी अर्थात बइठौनी, यकरे साथ साथ सोहनी

अर्थात निउरउनी या निरवाही गीत का यकरे साथ जोड़ि सका जात है । होय के तौ, खेत कै रोपनी या बइठौनी के समय जवन गीत गाय जात है, वहिका रोपनी-सोहनी गीत कहि जात है । हमरेन के समुदाय मे धान बइठावै या निरवावै अर्थात सोहनी कै काम ज्यादातर महिला लोग करत हीं । पुरुष लोग रोपनी मे बहुतै कमै सहभागी रहत हैं । वही समय लोग जोतै, कोन किनारा मिलावै, बीया पहुचावै वाले काम मे व्यस्त रहत हैं ।

१५. पाठ के आधार पर नीचे दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय ।

(क) बर्दिया कइसन जिला होय ?

(ख) बर्दिया कै प्रसिद्ध धार्मिक स्थल कवन-कवन होंय ?

(ग) बर्दिया राष्ट्रिय निकुञ्ज केतके खातिर प्रख्यात है ?

(घ) पर्यटन विकास के खातिर बर्दिया जिला मे कवन कवन काम करै के जरूरी है ?

(ङ) प्राकृतिक रूप से कवन-कवन चीज पर्यटक लोगन का आकर्षित करत है ?

१६. पाठ कै सारांश लिखा जाय ।

१७. पाठ मे दिहा जेस आप के प्रदेश मे रहा कवने-कवने धार्मिक औ पर्यटकीय जगही के बारे मे आप का मालुम है, कवनो तीन ठु के बारे मे एक-एक अनुच्छेद लिखा जाय ।

व्याकरण

१८. नीचे दिहा वाक्य कर्तृ वाच्य, कर्म वाच्य या भाव वाच्य काव होय, लिखा जाय ।

(क) भाई काम करत है । (.....)

(ख) राम भात खात हैं । (.....)

(ग) बाबा कहा जावा जात है ?(.....)

(घ) अब्दुल के द्वारा किताब लिखा जाई । (.....)

(ङ) हमरे लोग शिक्षा मन्त्री का बोलायन् । (.....)

(च) राष्ट्रपति के द्वारा कानुन जारी किहा जाई । (.....)

१९. निचे दिहा कर्तृ वाच्य का कर्म वाच्य मे परिवर्तन किहा जाय ।

(क) हम अभ्यास करित है ।

(ख) पिताजी गाय का घासि डारत हैं ।

(ग) राजु पहुनन का घरे लाइन् ।

(घ) राजु कै अम्मा पहुनन कै स्वागत किहिन् ।

(ङ) सबलोग पहुनन कै यथोचित अभिवादन किहिन् ।

२०. नीचे दिहा निर्देशन आधार पर वाच्य परिवर्तन किहा जाय ।

(क) काका कहाँ जात हौ ?(भाव वाच्य)

(ख) हमलोग गाँव के महतो का बोलावा गै । (कर्तृ वाच्य)

(ग) सबकेहु मधुर कजरी गाइन् । (कर्म वार्च्य)

(घ) प्रधानाध्यापक अभिभावक लोग बाति किहिन् । (कर्म वाच्य)

(ङ) हम सब दिहा अभ्यास किहा जात है । (कर्तृ वाच्य)

२१. नीचे दिहा अनुच्छेद कै वर्णविन्यासगत त्रुटि सच्याइकै लिखा जाय ।

हमरे लोग कै घर बडा रहा । एकदम बडा । दरवार जस उजजर निखखर उज्जर । मजवूत मजबूत खम्हा, मजबूत छत, बडवडा छहरदेवालि । केहू का बहरे से देखै कै कवनो संभावनै न रहै यईसन । यत्ना बडा, यतना विसाल, यतना गोप्य । पूरा भुइडोल रोकि सकैवाला । घरै के अनूसार नोकरो चाकर रहें । कहार, कहाइन औ रेखौदेख करैवाले रहें, प्रसस्त रहें ।

२२. सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) अपनेका बढ़िया लाग कवनो जगह के बारे मे निबन्ध लिखा जाय ।

(ख) अपने गाँव-ठाँव मे रहा धार्मिक स्थल के बारे मे प्रचलित किंवदन्ती सङ्कलन कइकै लिखा जाय ।

पाठ
१५

सडहरिया का चिठ्ठी

मिति : २०७७।१२।०३

गढ़वा-४, दाङ

प्रिय मित्र इमान सिंह

सुमधुर याद ! सहित नयाँ साल कै अग्रिम शुभकामना !

१. हमरे यिहां सब कुछ कुशल मंगल है, आशा करित है आपो के यिहां सब कुछ बढ़ियै होई । आप हमका बेर-बेर दाङ-देउखर के बारे मे पुछा करत रहेव । लेकिन आप का यहिं बोलाइकै सब कुछ देखावा औ बतावा चाहत रहेन । समयकाल बढ़िया न होय के नाते यी मवका हमरेन का नाही मिलि पाइस । यही से हम पत्रवै के मार्फत आप का यहिंके बारे में कुछ जानकारी करावैक चाहित है ।

२. मित्र, सबसे पहिले हम यहिँ के परिचय से सुरू करित है । दाङ-देउखर एसिया कै सबसे बड़ा उपत्यका के रूप में मानि जात है । यी लुम्बिनी प्रदेश मे धार्मिक ऐतिहासिक रूपसे जेतना महत्त्वपूर्ण है, वतनै यहिकै भौगोलिक प्राकृतिक आर्कषण अनुपम है । दाङ देउखर जेस यहिकै नाँव है वइसै, यी दुइ उपत्यका मे विभक्त है । दाङ-देउखर मे भौगोलिक औ सांस्कृतिक विषमता देखै के मिलत है । यिहां के आदमी कै मुख्य पेशा खेतीपाती औ पशुपालन होय । यकरे सथवै व्यापार औ रोजगारी के क्षेत्रौ मे यी जिला आगे है । दाङ-देउखर मे बड़वार संख्या मे सिमेन्ट कारखाना के सथवै मध्यम औ छोटवार उद्योगधन्दा सञ्चालन मे है । यिहां कामकाज सहज करै के हिसाब से कुल मिलाइ कै दस स्थानीय निकाय कै प्रशासनिक व्यवस्था है । यहि जिला मे नेपाली, थारू, अवधी औ मगर खाम भाषा बोलै वाले है औ यकरे साथसाथ अलगअलग संस्कृति कै सुन्दर उपस्थिति है ।

३. यही किसिम से राजनीतिक हिसाब से, देउखर उपत्यका मे चार ठू स्थानीय तह है । यही देउखर मे लुम्बिनी प्रदेश कै राजधानी है । देउखर उपत्यका में एकठु नगरपालिका औ तीन गाँवपालिका है । देउखर उपत्यका के बीच से पूर्व पश्चिम होइकै राप्ती नदी बहति है । नदी वहिपार भारत कै सिवान के साथै राजपुर औ गढ़वा गाँवपालिका है तौ यहिपार राजमार्ग से जुड़ा लमही नगरपालिका औ राप्ती गाँवपालिका अवस्थित है । राजपुर गाँवपालिका दाङ-देउखर कै सबसे बड़ा गाँवपालिका होय । गढ़वा औ राजपुर गाँवपालिका मे समथर भुमी से

लइकै भारतीय सीमा से जुड़ा फइलहर पहाड़ी इलाका है । यहि इलाकन मे विभिन्न सीमा नाका अवस्थित हैं, जहाँ से भारत के तरफ जाय वाला रास्ता है । यहि क्षेत्र कै गाँवपालिकन के समथर भु-भाग मे बहुसंख्यक मधेशी औ थारू कै बस्ती है । वइसै यिहा बसाइसराई कइकै पर्बत से आवै वालेन कै संख्या उल्लेखनीय है । यही किसिम से यिहां के पहाड़ से बसाई-सराई कइकै आवै वाले मंगोल मूल के आदमिन कै घना बस्ती है । यहि गाँवपालिका मे कालाकाटे गढ़वा औ गँगदी जोड़ै वाला पक्की रास्ता बना है । पहिले कालाकाटे, रामनगर, गढ़वा बजार, बेला, जंगड़हवा, गँगदी, गढ़वा औ राजपुर गाँवपालिका कै छोट बजार रहा । कोलपानी, जंगलकुट्टी बाबा, शिवगढ़ी, कोटही, समय स्थान, जानकी मन्दिर यहि क्षेत्रन कै धार्मिक पर्यटकीय स्थान होंय । गढ़वा गाँवपालिका औ राजपुर गाँवपालिका का राजमार्ग से जोड़ै वाला बलरामपुर कै राप्ती पुल्ह, महादेवा सिसहनिया जोड़ै वाला राप्ती पुल्ह औ भालुबाङ, कालाकाटे जोड़ै वाला राप्ती पुल्ह यहि क्षेत्रन कै बड़वार पुल्ह होय । महादेवा औ सिसहनिया जोड़ै वाला राप्ती पुल्ह नेपाल कै दुसरा लम्बा पुल मानि जात है ।

४. राजपुर गाँवपालिका औ गढ़वा गाँवपालिका के उत्तर मे राप्ती नदी बहत है तौ दखिन मे कोइलाबास सहित कै भारतीय सिमाना है । कोइलाबास पुरान व्यापारिक नाका होय जवन गढ़वा से २५ कि.मी. के दुरी पे अवस्थित है । राजमार्ग बनै से पहिले राप्ती अञ्चल के सब जिलन मे यही के नाका से नोन, तेल, अनाज, कपड़ा-लत्ता औ मालसामान कै आयात औ निर्यात होत रहा ।

५. देउखर उपत्यका के राप्ती नदी यहिपार राजमार्ग से जोड़ा स्थानीय तह लमही नगरपालिका औ राप्ती नगरपालिका होंय । राप्ती नगरपालिका कै भालुबाङ, लालमटिया, सिसहनिया औ लमही नगरपालिका कै लमही, रिहार, अमिलिया यहि क्षेत्र कै प्रमुख व्यापारिक क्षेत्र होंय । वइसै लमही नगरपालिका मे रहा जखेरा ताल, रिहार मे रहा बगार बाबा, भयने परशु, मामी सँवरी, शिव मन्दिर एवं तप्त कुण्ड यिहाँ कै धार्मिक पर्यटकीय क्षेत्र होंय । रिहार कइहाँ प्रदेश सरकार, लुम्बिनी के प्रमुख धार्मिक पर्यटकीय क्षेत्र के सुची मे राखे है । रिहार धार्मिक ऐतिहासिक औ पर्यटकीय दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण क्षेत्र होय । हिँया हर साल मकर संक्रान्ति के अवसर पर बड़वार मेला लागत है औ लाखौं के सङ्ख्या मे देश विदेश कै श्रद्धालु भक्तजन तप्त कुण्ड में स्नान करत हैं । यिहाँ आवै वाले लोग भयने परसु, मामी सँवरी, बरधअगोरिया औ बगार बाबा कै पूजाअर्चना करत हैं । बगार बाबा कइहां लोग अपने पशु कै रक्षा करती रावखुराँव, दँबरी, चँबरी, घण्टी चढ़ावत हैं तौ मामी सँवरी कइहां सुहाग कै श्रृङ्गार सामाग्री भेँट करत हैं । अइसै यहि अवसर पर भगवान शिव कइहां खिचड़ी चढ़ावा जात है । धार्मिक मान्यता यी है कि द्वापर के अन्त्य के ओर अपने यादव ग्वालबाल के साथे घुमतफिरत आये भगवान कृष्ण तपस्या मे लीन मामी सँवरी का दर्शन दिहिन रहा । रिहार मे मामी सँवरी के

आग्रह मुताबिक भगवान श्री कृष्ण चारौ धाम कै जल लाइकै तप्तकुण्ड कै स्थापना किहिन रहा । यही से कहा जात है कि रिहार मे स्नान किहे से चारिउ धाम में स्नान करै बराबर कै पुन्य प्राप्त होत है ।

६. हमार घर देउखर उपत्यका मे है, यहि उपत्यका के मध्य में रहा लमही बजार से २५ किमि दूर उत्तर तरफ घोराही बजार परत है । घोराही दाङ उपत्यका कै केन्द्र औ दाङ-देउखर कै सदरमुकाम होय । दाङ उपत्यका मइहां पाँच ठू स्थानीय तह हैं । घोराही उपमहानगरपालिका, तुलसीपुर उपमहानगरपालिका, बँगलाचुली गाँवपालिका, बबई गाँवपालिका, दँगीशरण गाँवपालिका औ शान्तिनगर गाँवपालिका । दाङ उपत्यका कै मुख्य नदी बबई होय । जवन उपत्यका के दखिखन दिशा में पूरब पश्चिम होइकै बहति है । बँगलाचुली गाँवपालिका घोराही से पूरब रहा दाङ उपत्यका कै पहाड़ी क्षेत्र होय तौ बाँकी अन्य स्थानीय तह समथर मैदान मे अवस्थित हैं ।

७. घोराही उपमहानगरपालिका दाङ देउखर कै प्रशासनिक, शैक्षिक, ब्यापारिक औ औद्योगिक केन्द्र होय कोइलाबास से राप्ती के बिभिन्न जिलन मे घोड़ा से मालसामन लादिकै आवै जायक क्रम में बिश्राम करै वाला स्थान होयक नाते यहिकै नाँव घोड़ाही परा किंवदन्ती है । घोराही मे अवस्थित अम्बेश्वरी मन्दिर, रत्ननाथ मन्दिर, बारह कुने ताल, पान्डवेश्वर महादेव कै मन्दिर, बौद्ध गुम्बा, सवारीकोट, सिसहनिया थारू गाँव होमस्टे यहि क्षेत्र कै प्रमुख धार्मिक पर्यटकीय स्थल होंय । घोराही, नारायणपुर, दूधरास, यिहा कै मुख्य ब्यापारिक क्षेत्र होंय । पान्डवेश्वर महादेव मन्दिर मे रहा त्रिशुल, दुनिया कै सबसे बड़ा मानव निर्मित त्रिशुल होय ।

८. औ हाँ, दाङ उपत्यका कै दुसर बड़वार औ महत्त्वपूर्ण स्थानीय तह तुलसीपुर उपमहानगरपालिका होय । घोराही से २५ किलोमीटर पश्चिम मे रहा तुलसीपुर शहर का राप्ती अञ्चल कै व्यापारिक केन्द्र मानि जात रहा । यही उपमहानगरपालिका मे संस्कृत विश्वविद्यालय परत है । तुलसीपुर उप महानगरपालिका जिला कै शैक्षिक, प्रशासनिक औ ब्यापारिक केन्द्र होय । गणेशपुर पार्क, कालिका मन्दिर, गुफा, थारू संग्रहालय यहि क्षेत्र कै प्रमुख धार्मिक पर्यटकीय स्थान मानि जात है । दाङ औ देउखर दुनौ उपत्यका अन्न उत्पादनशील जगह होय के नाते खेतीपाती यिहाँ कै प्रमुख पेशा होय । खेतीपाती के साथसाथै पशुपालन औ उद्योग ब्यापार मे यिहां कै लोग आबद्ध हैं । शहरी क्षेत्र होय के नाते रोजगारी कै बढ़िया अवसर प्राप्त है । वइसै ज्यादै सङ्ख्या मे यिहा कै लोग बैदेशिक रोजगारी मे हैं ।

९. अब तुलसीपुर उपमहानगरपालिका के बारे मे, यकरे पश्चिम उत्तर मे शान्तिनगर गाँवपालिका है । शान्तिनगर के उत्तर मे सल्यान जिला है । अइसै दाङ उपत्यका कै बबई गाँवपालिका बबई नदी के नाँव से राखि गा है । बबई गाँवपालिका दाङ उपत्यका के पश्चिमी सिवान

मे रहा दाङ कै गाँवपालिका होय । बबई नदी सिंचित दाङ उपत्यका हमेशा हराभरा रहत है । दाङ उपत्यका कै एक ऐतिहासिक स्थानीय निकाय होय दँगीशरण गाँवपालिका । यी शान्तिनगर गाँवपालिका के दखिन मे परत है । माना जात है कि थारू राजा दँगीशरण के नाँव से दाङ कै नाँव परा है । दँगीशरण एक प्रतापी थारू राजा रहें । लोक किंवदन्ती है कि राजा दँगीशरण अपने तपस्या के बल पे स्वर्ग कै राजा इन्द्र से अप्सरा उपहार पाये रहें । जवन दिन मे घोड़ी रहै औ राति मे अप्सरा । किंवदन्ती यिहौ है कि काफी समय बाद घोड़ी के रूप मे दिन मे बिचरण करत-करत अप्सरा देउखर के रिहार क्षेत्र मे आय औ यादव लोग पकरि लिहिन । राजा दँगीशरण औ यादव लोग बीच बड़वार युद्ध भवा । दँगीशरण कइहां पाण्डव पुत्र भीम कै सहयोग रहा तौ यादव लोग का भगवान कृष्ण कै । यादव के तरफ से बलराम औ दँगीशरण के तरफ से भीम एक दुसरे कै सामना किहिन । जब दुनौ बीर कै गदा टकरान तौ घोड़ी स्वरुपा अप्सरा कै मोक्ष प्राप्त होइ गै, ऊ स्वर्ग चली गई । वोकरे बाद यादव औ थारू बीच कै झगड़ा समाप्त होई गवा ।

१०. यहि हिसाब से दाङ-देउखर जिला कै एक धार्मिक ऐतिहासिक महत्त्व है । यिहां मध्यपाषाणकालिन औ नवपाषाणकालिन मानव से प्रयोग भवा सामाग्री कै अवशेष मिला है । नेपाली, थारू, अवधी औ खाम संस्कृति कै संगम है हिँया । हराभरा समथर दाङ देउखर उपत्यका नेपाल कै संबृद्ध औ सांस्कृतिक सम्पदा कै जिला होय ।

मित्र, बाँकी अउर विषयवस्तु पर बाति यहि आवै के बाद विस्तृत रूप से चर्चा करा जाई । आवत के भरसक माघ के महीना मे आवा जाई तौ अउर बढ़िया रही ।

शिवकुमार यादव

लिफाफा कै नमूना

	प्रापक इमानसिंह राई सिरिजङ्गा गाँवपालिका-७, खेवाङ जिला : ताप्लेजुङ अञ्चल : मेची
प्रेषक शिवकुमार यादव गढवा गाँवपालिका-४, रामनगर जिला : दाङ अञ्चल : राप्ती	

शब्दार्थ

उपत्यका : चारो ओर पहाड़ से घेरिकै बीच मे रहा उब्जाऊ समथर भूमि

अनुपम : उत्कृष्ट, अतुलनीय

सुमधुर : बढ़िया, हार्दिक

व्यापारिक नाका : आयत-निर्यात होय वाला नाका

औद्योगिक : उद्योगधन्दा से सम्बन्धित

पर्यटकीय : धार्मिक औ मनोरन्जन के उद्देश्य से घुमफिर करै वाला जगह

किंवदन्ती : जनप्रवाद, मौखिक रूप मे प्रचलित खीसा

प्रतापी : नाम औ काम से प्रसिद्ध, नाम चला

संबृद्ध : सम्पन्न, विकसित

ऐतिहासिक : इतिहास से सम्बन्धित, विगत कै महत्त्वपूर्ण तथ्यपूर्ण जानकारी

अवशेष : सड़ै, गलै औ खियायक बाद बाँकी रहि गवा अंश, बचा वस्तु ।

अभ्यास

सुनाई

१. पाठ कै नववाँ अनुच्छेद सुनिकै सारांश कहा जाय ।

२. पाठ के अठवाँ अनुच्छेद सुनिकै 'पर्यटकीय', 'संग्रहालय' औ 'रोजगारी' शब्द कै अर्थ बतावा जाय ।

३. पाठ के अन्तिक अनुच्छेद कै इमला लिखा जाय ।

बोलाई

४. नीचे दिहा शब्द शुद्ध से उच्चारण करा जाय ।

धार्मिक, ऐतिहासिक, साँस्कृतिक, औद्योगिक, किंवदन्ती, संगम, उपत्यका, प्रागऐतिहासिक, उत्पादनशिल

५. नीचे के शब्दन का प्रयोग कइकै वाक्य बनावा जाय औ कहा जाय ।

प्रमाण, ऐतिहासिक, उत्पादन, अन्न, नदी, पुल्ह, ग्वालबाल, हराभरा, अवशेष

६. यी पाठ आप का कइसन लाग ? दुइ जने साथी मिलिकै संवाद करा जाय ।

पढ़ाई

७. पाठ के अनुच्छेद कै वसरीपारी से सस्वर वाचन करा जाय ।

८. पाठ के पचवाँ अनुच्छेद पढा जाय औ पाँच ठु प्रश्न बनावा जाय ।

९. नीचे दिहा अनुच्छेद का पढ़ा जाय औ पाँच ठु बुँदा लिखा जाय ।

बाँके जिला नेपाल के नयाँ मुलुक भीतर परत है । यहि जिला कै ऐतिहासिकता पता लगावत जात के पूर्वमध्यकाल अर्थात ११हवाँ शताब्दी तक पहुचि सका जात है । पूर्वमध्यकाल मे पश्चिम कर्णाली प्रदेश के खस मल्ल लोग पूर्व मे त्रिशुली, गण्डकी से पश्चिम तक औ उत्तर मे ताक्लाकोट से दक्षिण तराई तक शासन किहिन रहा । तत्कालीन खस मल्ल लोग के अधीन मे रुपन्देही, कपिलवस्तु, दाङ, कैलाली जिला कै सम्पूर्ण भू-भाग रहा । वही घरि बाँके यनही लोगन के अधीन मे रहा । १४हवीँ शताब्दी मे खस राज्य कै पतन होयक बाद यी अनेक छोट-छोट राज्य मे विभाजित होय गवा । यहि क्रम मे कर्णाली मे बाइसे राज्य कै स्थापना भवा । वही बाइसे राज्य मध्ये दैलेख एक रहा । वहि समय आज कै बाँके जिला कै भू-भाग दैलेख के अधीन रहा । सन् १८१६ के सुगौली सन्धी के अभिधारा ३ अनुसार राप्ती नदी से महाकाली नदी तक कै समथर इलाका नेपाल कम्पनी सरकार का सउँपे रहा । नेपाल कम्पनी सरकार का सैनिक सहयोग किहे रहा, जवने के नाते सन् १८६० मे फिर उ भू-भाग नेपाल का फिर्ता कइ दिहिस । वहि समय नेपाल कै प्रधानमन्त्री जंगबहादुर राणा रहें ।

१०. नीचे दिहा अनुच्छेद पढ़ा जाय औ प्रश्न कै उत्तर दिहा जाय ।

हमरेन के यहि पृथ्वी पर करोड़ौं अरबौं वर्ष पूर्व जीव कै उत्पति भवा रहा । पृथ्वी पर भर वहि मेर कै वातावरण है, जउनेक कारण जीव कै अस्तित्व सम्भव है । आक्सिजन, जल, तापमान, आद्रता, माटी, प्रकाश सब कुछ सन्तुलित मात्रा मा पृथ्वी पर उपलब्ध है । जउनेक कारण जीवन सम्भव होय सका है, तमाम जीव चाहे विरवा होय या वृक्ष, पशु होय या पक्षी, बैक्टीरिया वायरस या मनुष्य, सब कै विकास भवा है औ एक दूसरे के सहअस्तिव से पारिस्थितिक चक्र, ऊर्जा प्रवाह से बरसौं से सब कै जीवन चलतै आवा है । पृथ्वी पर मिलैवाले समस्त जीव मा-पेड़, पौधे, पशु-पक्षी,मानव के वीच पारस्परिक विभिन्नता मिलत है । यी जैविक विविधता स्थानीय स्तर से लइकै राष्ट्रीय औ वैश्विक स्तर पर होत है, जउन

वहि जगह के जलवायु, तापक्रम, आद्रता, माटी औ प्रकाश के उपलब्धता इत्यादि के द्वारा निर्धारित होत है । पृथ्वी पर होय वाला भौतिक औ रासायनिक परिवर्तन, विभिन्न खगोलीय घटना औ उत्परिवर्तन इत्यादि के द्वारा जीव कै विकास भवा औ वहि लोगन मा विविधता विकसित होत गै । सर्वप्रथम उत्पन्न होयवाला जीव एक कोषीय रहा, जउन विकास कै तमाम चरण पार करैक बाद बहुकोषीय अर्थात अत्यन्त जटिल संरचना वाला जीव कै विकास भवा । हरियर पौधन के जन्म से विकास कै नवाँ श्रृंखला आरम्भ भवा है, औ आजौ उहै सौर्य ऊर्जा का परिवर्तित कइकै हमरे सब लोग के खातिर भोजन निर्माण कै काम करत है औ यी पारिस्थितिकी तन्त्र कै आधार स्तम्भ सावित भवा है । वकरे बेगर हमरेन कै जीवन एक क्षण तक सम्भव नाही होय पाई । वही सब हमरेन के खातिर भोजन, जल औ प्राण वायु प्रदान करत हैं । यी पेड़-पौधा, जीव-जन्तु कै जेतना तमामन प्रजाति होइहैं, उनकै उपयोगिता मानव जीवन के खातिर वतनै अधिक रही । काहे की यी सब भोजन भर नाही, बल्कि फल, फूल, औषधी, लकड़ी, मसाला, जन्म से मृत्यु तक कै हर उपयोगी औ आवश्यक वस्तु प्रदान करत है । (आनन्द सिंह : 'जैविक विविधता सभ्यता कै आधार' शीर्षक के लेख से)

प्रश्न

(क) पृथ्वी पर कइसन वातावरण है ?

(ख) पृथ्वी पर कवन-कवन तत्त्व सन्तुलित मात्रा मे उपलब्ध है ?

(ग) पृथ्वी पर जीव कै विकास कइसै भवा ?

(घ) केतके बेगर जीवन नाही सम्भव है ?

(ङ) जैविक विविधता हमरेन के खातिर काहे जरुरी है ?

लिखाई

११. पाठ के कवनो दुइ अनुच्छेद कै अनुलेखन करा जाय ।

१२. नीचे दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय ।

(क) यी चिठ्ठी के, केका लिखिन है ?

(ख) देउखर उपत्यका के पुरब, पच्छु, उत्तर औ दखिखन कवन कवन जगह परत है ?

(ग) दाङ-देउखर उपत्यका होइकै बहै वाली मुख्य नदी कवन-कवन होंय ?

(घ) दाङ-देउखर उपत्यका मे कवने-कवने भाषा औ संस्कृति के लोगन कै बसोबास है ?

(ङ) यी दुनौ उपत्यका कै व्यापरिक नाका औ औद्योगिक क्षेत्र कवन-कवन होंय ?

१३. चिठ्ठी मे बयान कइ गवा विषयवस्तु कै सारांश लिखा जाय ।

१४. चिठ्ठी मे वतना विस्तृत रूप मे दाङ-देउखर उपत्यका के बारे मे काहे बयान कइ गा है ? विवेचना करा जाय ?

१५. नीचे दइ गवा बुँदा समेटिकै एक ठु वणर्ननात्मक चिठ्ठी लिखा जाय ।

- पावन धाम लुम्बिनी
- विश्वसम्पदा सूची मे सुचिकृत
- बौद्ध धर्मावलम्बी लोग कै मुख्य गन्तव्य
- वि.सं १९०५-६ मे पाल्पा गौडा कै तैनाथवाला चीफ जनरल खड्गसमशेर लुम्बिनी मे शिकार खेलै जात के अशोक स्तम्भ पता लगाइन
- चीन कै बौद्ध तीर्थालु फाहियान औ ह्वेनस्याङ कै यात्रा वृत्तान्त
- वि.सं २०२७-२८ मे लुम्बिनी ग्राम कै अवशेष पता लाग
- वि.सं.२०३३ साल मे लुम्बिनी विकास कोष कै स्थापना

व्याकरण

१६. नीचे दिहा तालिका कै अध्ययन किहा जाय औ हरेक किसिम कै कारक औ विभक्तिन कै प्रयोग कइकै वाक्य बनावा जाय ।

कारक	अर्थ	विभक्ति	उदाहरण	विभक्ति चिन्ह	
कर्ता	काम (क्रिया) सम्पन्न करै वाला	प्रथमा	राम रावण का मारिन ।		
कर्म	क्रिया (काम) पर असर केर भोक्ता	द्वितीया	हरि भात खात हैं । हरि तुहैं/तुमका बोलावत हैं ।	क,का, कइहा	अमानवीय कर्म मा विभक्ति नाही लागत है ।
करण	काम (क्रिया) करै केर माध्यम साधन, जरिया	तृतीया	पुस्तक से ज्ञान मिलत है । यइसन प्रेम राखव/राखउ ।	से, द्वारा, सन् ।	

सम्प्रदाय	काम, क्रिया, करण, केर, उद्देश्य, प्रापक (संयोग)	चतुर्थी	हम भाई का १० रुपया दिहेन । मम हित चले आयव/आउअ ।	का, खातिर, के लिए,	
अपादान	हद, स्थान, समय, अलग, होव (वियोग)	पञ्चमी	छत पर से बिटिया गिर परी । कवने दिन से काम करिहौ ।	से, ते	
सम्बन्ध	मलिकाना स्वामित्व	षष्टी	हमार भाई अच्छा है । मोर बहिनिया पढ़ति हैं ।	आर, री, कै,केर, के हार,	
अधिकरण	आधार	सप्तमी	कितबिया झोरवम है । महतारी छतपर बइठी हैं ।	मा, पर, प, मे, महियाँ, ओर	
सम्बोधन	बोलावट	–	हे भइया, सडकियप न जाव ।		
निर्देश : कारक पद कै क्रिया से प्रत्यक्ष सम्बन्ध न राखै वाले सम्बन्ध कारक का अब कारक नाही माना जात है ।					

१७. नीचे दिहा अनुच्छेद से कारक औ विभक्ति चीन्हि कै लिखा जाय ।

हमरे लगे किताब है । किताब से जानकारी मिलत है । यी हमरे भाई कै किताब होय । हम छतपर किताब पढ़ित हन । माई हम्मै छत के किनारे न जाय कै सल्लाह देत हिन । हम कहा नाही मानित हन औ छत पर से गिर परित हन । चोट लागि जात है । सब लोग हम्मै बोलै लागत हैं ।

१८. अलगअलग कारक औ विभक्ति कै प्रयोग कइकै ५० शब्द भीतरै अपने गावँ कै वर्णन किहा जाय औ प्रयोग भवा कारक औ विभक्तिन का रेखाङ्कित किहा जाय ।

१९. सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) अपने हियाँ के बारे मे कवनो दुसरे प्रदेश मे रहै वाले साथी का चिठ्ठी लिखा जाय ।

(ख) आप के गाँव के आसपास कइसन क्षेत्र परत है वोकरे बारे मे अनुच्छेद लिखा जाय ।